शेफर्डस ग्लोबल क्लासरूम

मसीह धारणाएँ

Dr. Stephen Gibson के द्वारा तैयार किया गया है।

इस पाठ्यक्रम के लिए कुछ सामग्री पुस्तक *I Believe* से लिखी गई थी, जो कि सिन्सनटि, ओहियो में, परमेश्वर के बाइबल स्कूल और कॉलेज के संकाय द्वारा दी गई थी।

कॉपीराइट © 2015 शेफर्डस ग्लोबल क्लासरूम

ISBN: 978-1-943953-05-9

सभी अधिकार सुरक्षित। परीक्षण पृष्ठ को छोड़कर, इस पुस्तक का कोई भी हिस्सा या किसी भी तरह से किसी भी रूप में प्रेषित-इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फ़ोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या अन्यथा - SGC से प्रश्न के लिखित अनुमति के बिना पुर्नरउतपादित या प्रसारित ना किया जाये। हमारे SGC अंग्रेज़ी पाठ्यक्रम की हर खरीद इस पाठ्यक्रम का अनुवाद करने, और उसके बाद दुनिया भर के मसीह अगुओं के लिए यह एक ही पाठ्यक्रम का प्रसार करने के लिए हमें सक्षम बनाती है। SGC से संपर्क करने या इसकी सम्मोहक दृष्टि के लिए दान करने के लिए, यहां जाएं: ShepherdsGlobalClassroom.org.

जब तक संकेत न दिया जाए, सभी पवित्र उद्धरण, बाइबल किंग जेम्स वर्जन से हैं। "ESV" के रूप में चिह्नित पवित्रशास्त्र उद्धरण ESV ® बाइबल (पवित्र बाइबल, English Standard Version ˚), कॉपीराइट © 2001 द्वारा क्रॉसवे द्वारा, गुड न्यूज़ पब्लिशर्स का एक प्रकाशन मंत्रालय है। अनुमति द्वारा प्रयुक्त। सभी अधिकार सुरक्षित।

विषय-सूची

पाठ्यक्रम का विवरण और उद्देश्य 4

कक्षा के अगुओं और विद्यार्थियों के लिए दिशा-निर्देश 5

पाठ

(1) परमेश्वर की पुस्तक 9

(2) परमेश्वर की विशेषताएं 23

(3) त्रिएकता 33

(4) मानवता 45

(5) पाप 55

(6) आत्माएँ 65

(7) मसीह 75

(8) उद्धार 89

(9) उद्धार के मुद्दे 101

(10) पवित्र आत्मा 115

(11) मसीह पवित्रता 127

(12) कलीसिया 137

(13) अनन्त भाग्य 147

(14) अंतिम घटनाएँ 157

(15) प्राचीन मत 167

अध्ययन प्रश्नों के उत्तर 177
अभिलेख असाइनमेंटों के लिए फ़ार्म 185
SGC से प्रमाणपत्र का अनुरोध करने के लिए फ़ार्म 187

मसीह धारणाएँ

पाठ्यक्रम का विवरण और उद्देश्य

पाठ्यक्रम का विवरण

यह पाठ्यक्रम मसीह धर्मशास्त्र के प्रमुख विषयों जैसे कि परमेश्वर, मसीह, पाप, उद्धार, आदि में बुनियादी सिद्धांतों की समझ प्रदान करता है। विद्यार्थी सीखेंगे कि धर्मशास्त्र में त्रुटियों से कैसे बचें। विद्यार्थी दूसरों को मसीह धर्मशास्त्र सिखाने के लिए तैयार होंगे।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

(1) मसीह विश्वास की मूलभूत शिक्षाओं को सीखना।
(2) शिक्षा के लिए स्रोत और अधिकार के रूप में बाइबल को ठीक से उपयोग करना।
(3) शिक्षा में महत्वपूर्ण त्रुटियों को पहचाना।
(4) उस समझ को बढ़ाना जो परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को गहरा करने में मदद करती है।
(5) दूसरों को सिखाने के लिए सामग्री और संरचना प्राप्त करना।

कक्षा के अगुओं और विद्यार्थियों के लिए दिशा-निर्देश

ये निर्देश बताते हैं कि कक्षा को उच्चतम स्तर की गुणवत्ता के साथ कैसे पढ़ाया जा सकता है। कक्षा के अगुए को इस मानक को उन विद्यार्थियों के लिए रखना चाहिए जो शेफ़र्ड ग्लोबल क्लासरूम से प्रमाणपत्र प्राप्त करना चाहते हैं। अन्य प्रकार के समूहों के लिए जो इन आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं, एक शिक्षक आवश्यकताओं को अपनी क्षमता के अनुसार अनुकूलित कर सकता है और एक अलग प्रमाण पत्र दे सकता है।

हम अनुमान लगाते हैं कि एक अध्याय को 90 मिनट या इससे अधिक समय लगेगा। किसी समूह का प्रत्येक पाठ के लिए दो बार मिलना सबसे अच्छा होगा। यदि एक समूह दो बार मिलता है, तो कुछ दिशा-निर्देशों को अनुकूलित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक परीक्षा दोनों बार नहीं होगी।

कक्षा के अगुओं के लिए दिशा निर्देश

प्रत्येक विद्यार्थी को परीक्षा के उत्तरों वाले पृष्ठ को छोड़कर सब सामग्री की पूरी प्रति की आवश्यकता होगी।

कक्षा सत्र की शुरुआत में, पिछले अध्याय की परीक्षा लीजिए। प्रत्येक विद्यार्थी को बिना कोई मदद के अपनी स्मरणशक्ति की सहायता से उत्तर लिखने होंगे। अगर कोई विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर पाता है, तो आप उसे फिर से परीक्षा देने का मौका दीजिए (अनुमानित समय: 10 मिनट)।

परीक्षा के बाद, समीक्षा प्रश्नों के रूप में पिछले पाठ से उद्देश्यों की सूची का उपयोग कीजिए। प्रत्येक उद्देश्य के लिए एक प्रश्न पूछिए, और विद्यार्थियों को समझाने की अनुमति दीजिए (अनुमानित समय: 15 मिनट)।

नये पाठ को शुरू करने से पहले एक विद्यार्थी से दिये गये लेख को पढ़वाइए। विद्यार्थियों को संक्षेप में चर्चा करने दीजिए कि लेख उस पाठ की विषय-वस्तु के बारे में क्या बताता है (अनुमानित समय: 10 मिनट)।

प्रत्येक अनुभाग को पढ़कर और समझाकर पूरे पाठ की सामग्री को पूरा कीजिए। कक्षा के कुछ सदस्य कुछ वर्गों को पढ़ाने में सक्षम हो सकते हैं (अनुमानित समय: 45 मिनट)।

प्रतीक • दर्शाता है कि शास्त्र के अनुसार एक फुटनोट है। किसी व्यक्ति को कक्षा में पवित्रशास्त्र पद पढ़ना चाहिए जब भी वे इस प्रतीक में आते हैं, या अनुभाग को पूरा करने के बाद।

प्रतीक ? एक चर्चा का प्रश्न दिखाता है। कभी-कभी प्रश्न अनुभाग का परिचय देता है, और कभी-कभी यह पूरे हुए अनुभाग की समीक्षा करता है। प्रश्न पूछिए और विद्यार्थियों को जवाब पर चर्चा करने दीजिए। उसी समय पूरी तरह से जवाब समझाना आवश्यक नहीं है, खासकर यदि प्रश्न एक खंड को पेश कर रहा है।

इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार, विद्यार्थी को कक्षा में न रहने वाले लोगों को पाठ या पाठ का हिस्सा पढ़ाना चाहिए। यह शिक्षण चर्च, या एक गृह बाइबल अध्ययन समूह, या किसी अन्य जगह में किया जा सकता है। प्रत्येक कक्षा सत्र के अंत में, इस असाइनमेंट के बारे में विद्यार्थियों को याद दिलाइए, और उन्हें पिछली कक्षा सत्र के बाद किसी भी दिये गये शिक्षण के बारे में बताने का मौका दीजिए।

पूरी कक्षा को, पाठ के अंत में "मान्यताओं का वक्तव्य" एक साथ पढ़ना है।

कक्षा के अंत में, प्रत्येक विद्यार्थी को प्रदान की गई सूची से एक पवित्रशास्त्र का भाग निर्दिष्ट किया जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले, उन्हें लेख पढ़ना है और लेख की विषय-वस्तु पर एक अनुच्छेद लिखना है। उन्हें अगली कक्षा के सत्र में कक्षा के अगुए को यह अनुच्छेद दिखाना है।

कक्षा के अंत में, विद्यार्थियों को अगली कक्षा सत्र से पहले अगले अध्याय की सामग्री को पढ़ने के लिए याद दिलाए (घोषणाओं और असाइनमेंट के अनुमानित समय: 10 मिनट)।

विद्यार्थियों की कक्षा की उपस्थिति, परीक्षण, बाहरी समूहों का शिक्षण, और अनुच्छेदों के लिए लिखे गए अनुच्छेदों का अभिलेख बनाए रखना महत्वपूर्ण है। यदि कोई विद्यार्थी किसी कक्षा में आने में असफल होता है तो उसे छुटे हुए पाठ का अध्ययन करना चाहिए, परीक्षा देनी

चाहिए, और असाइनमेंट लिखना चाहिए। अंतिम पाठ के बाद इस पुस्तक में अभिलेख रखने के लिए एक फार्म दिया गया है।

विद्यार्थीयों के लिए निर्देश

कक्षा सभा से पहले आपको प्रत्येक पाठ के लिए सामग्री पढ़नी चाहिए, ताकि आप बेहतर समझ से चर्चा में भाग ले सकें।

प्रत्येक कक्षा सत्र की शुरुआत में, पिछले अध्याय से एक परीक्षा देने के लिए तैयार रहिए। दिए गए परीक्षा प्रश्नों का अध्ययन कीजिए।

हमेशा एक बाइबल, पाठ की मुद्रित प्रतिलिपि और सामग्री में अपनी टिप्पणी जोड़ने के लिए एक कलम लाइए।

पवित्रशास्त्र के संदर्भों को खोजने के लिए तैयार रहिए, चर्चा प्रश्नों के उत्तर दीजिए, और जैसे कक्षा का अगुआ निर्देश करता है वैसे भाग लीजिए।

कक्षा के अंत में आपको पवित्रशास्त्र का एक लेखांश प्रदान किया जाएगा। अगली कक्षा के सत्र से पहले, आपको लेख पढ़ना है और लेख की विषय-वस्तु पर एक अनुच्छेद लिखना है। कक्षा के अगुए को अनुच्छेद दिखाइए।

इस पाठ्यक्रम के समय आपको कम से कम सात बार उन सबको एक पाठ या पाठ का हिस्सा पढ़ाना चाहिए, जो कक्षा में नहीं हैं। यह शिक्षण चर्च, या एक गृह बाइबल अध्ययन समूह, या किसी अन्य जगह में किया जा सकता है। हर बार जब आप किसी को पढ़ाते हैं, तो कक्षा के अगुए को इसके बारे में बताइए।

पाठ 1
परमेश्वर की पुस्तक

विषयवस्तु उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) सामान्य प्रकाशितवाक्य और विशेष रहस्योद्घाटन की अवधारणाएँ।
(2) प्रमाण से कैसे पता चलता है कि बाइबल एकदम सही है ।
(3) पवित्रशास्त्र की प्रेरणा की सही समझ।
(4) पवित्रशास्त्र की प्रेरणा का अर्थ क्यों त्रुटि के बिना है ।
(5) शब्द *प्रेरित,अचूक,* और *न चूकने वाला*।
(6) बाइबल क्यों परिपूर्ण है और इसका विस्तार नहीं किया जा सकता।
(7) कैसे बाइबल शिक्षा के लिए प्राथमिक स्रोत और अंतिम अधिकार है।
(8) मसीह लोगों के दैनिक जीवन में कैसे बाइबल महत्वपूर्ण है।
(9) बाइबल के बारे में मसीही धारणाओं का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक यह है कि विद्यार्थी को सीखना है कि कैसे गलत अधिकार सुनने या सीमित उद्देश्य के साथ बाइबल अध्ययन करने की त्रुटियों से बचें।

''परमेश्वर की पुस्तक''
छपी हुई उपदेश सामग्री

आमतौर पर शिक्षण-सत्र पिछले पाठ पर एक परीक्षा और पिछले पाठ के उद्देश्यों की समीक्षा के साथ शुरू होगा। चूंकि यह पहला पाठ है, इसलिए नीचे दिए गए पवित्रशास्त्र वचन को एक साथ पढ़िए।

भजन संहिता 119:1-16। चर्चा कीजिए कि यह लेखांश बाइबल के बारे में हमें क्या बताता है।

अब एक साथ सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और

जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक । देखते हैं तो एक विद्यार्थी को शास्त्र संदर्भ बाइबल में खोजने और पद पढ़ने के लिए कहिए।

परमेश्वर, दुनिया का निर्माता, बोला। उसने खुद को और अपनी रचना का उद्देश्य प्रगट किया है । परमेश्वर ने हमें जो सत्य प्रगट किया वह प्रकाशितवाक्य कहलाता है। बाइबल में एक पुस्तक है जिसे "प्रकाशितवाक्य" कहा जाता है, लेकिन इस शब्द का इस्तेमाल उस सत्य के बारे में बात करने के लिए भी किया जा सकता है, जिसे परमेश्वर ने हमें प्रगट किया है।

? वे कौन से तरीके हैं जिनके द्वारा परमेश्वर ने हमें सत्य प्रगट किया है?

प्रकाशितवाक्य के रूपों की विविधता

क्योंकि परमेश्वर ने हमें अलग अलग तरीकों से सत्य प्रगट किया है, हम दो श्रेणियों के बारे में बात करते है: सामान्य प्रकाशितवाक्य और विशेष प्रकाशितवाक्य।

सामान्य प्रकाशितवाक्य यह है कि हम परमेश्वर के बारे में उसकी रचना को देखकर क्या समझ सकते हैं। हम ब्रह्मांड की रचना में परमेश्वर की अद्भुत बुद्धि और शक्ति को देखते हैं।

जिस प्रकार से मनुष्य को बनाया गया है हम उसमें परमेश्वर की प्रतिष्ठा देखते हैं। तथ्य यह है कि हम सोच विचार कर सकते हैं, सौंदर्य की सराहना कर सकते हैं, और सही और गलत के बीच अंतर बता सकते हैं (हालांकि पूरी तरह से नहीं) इन सबसे हमें यह पता चलता है कि हमारे सृष्टिकर्ता की क्षमताएँ इनसे भी अधिक हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर कोई ऐसा है जो सोच विचार कर सकता है और बात कर सकता है क्योंकि हमारे पास वे क्षमताएँ हैं।

क्योंकि सामान्य प्रकाशितवाक्य से हमें पता चलता है कि परमेश्वर बात कर सकता है, इससे हमें एहसास हुआ कि विशेष प्रकाशितवाक्य हो सकता है। क्योंकि परमेश्वर बात कर सकता है, यह संभव है कि परमेश्वर की तरफ से संदेश मिल सकें और एक किताब भी।

सामान्य प्रकाशितवाक्य से, लोगों को पता चलता है कि एक परमेश्वर है, और उन्हें उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए, और यह भी कि उन्होंने पहले से ही उसकी आज्ञा का

पालन नहीं किया है। •[1] लेकिन सामान्य प्रकाशितवाक्य हमें यह नहीं बताता कि हमें परमेश्वर के साथ सही संबन्ध कैसे स्थापित करना है। सामान्य प्रकाशितवाक्य हमें विशेष प्रकाशितवाक्य की जरूरत बताता है क्योंकि इससे पता चलता है कि लोग पापी हैं और अपने निर्माता के सामने "बिना बहाना" के हैं , लेकिन विशेष प्रकाशितवाक्य हमें समाधान नहीं बताता है।

विशेष प्रकाशितवाक्य बाइबल की प्रेरणा में और मसीह के अवतार में हुआ है। विशेष प्रकाशितवाक्य हमें उस अवस्था के बारे में, जिसमें हम हैं बताता है। सामान्य प्रकाशितवाक्य हमें उस अवस्था को दर्शाता है: हम पतित और दोषी हैं। विशेष प्रकाशितवाक्य परमेश्वर का वर्णन करता है, पतन और पाप के बारे में समझाता है और दर्शाता है कि परमेश्वर से हमारा मेल मिलाप कैसे हो सकता है।

कल्पना कीजिए कि आप बाइबल के अस्तित्व को नहीं जानते। आपको एहसास होता है कि परमेश्वर है। आप जानते हैं कि आप परमेश्वर की सज़ा के पात्र हैं। आप नहीं जानते कि मृत्यु के बाद क्या होगा। आप जीवन का उद्देश्य नहीं जानते। आप नहीं जानते कि परमेश्वर के पास कैसे जाना है।

तो कल्पना कीजिए कि कोई आपको एक किताब दिखाता है और आपको बताता है कि यह किताब परमेश्वर की ओर से है और उन सवालों के जवाब दे सकती है। क्या आप कल्पना कर सकते है कि यह किताब कितनी मूल्यवान किताब होगी?

बाइबल का दावा

?बाइबल स्वयं के बारे में क्या दावा करती है? बाइबल के कथनों के कुछ उदाहरण दीजिए जो दर्शाते हैं कि यह परमेश्वर की ओर से होने का दावा करती है।

चलिए उस दावे के बारे में बात करते हैं जो बाइबल खुद के बारे में करती है, फिर हम प्रमाण देखेंगे कि बाइबल सत्य है। बाइबल परमेश्वर का वचन होने का दावा करती है। पुराने नियम में 3,000 से अधिक ऐसे कथन हैं कि संदेश परमेश्वर से आये, जो अक्सर इस तरह से दिखते हैं, "फिर यहोवा ने कहा..."[2] यीशु ने पुराने नियम को परमेश्वर से प्रेरित माना। •[3] नए

[1] रोमियों 1:20 कुछ चीजों के बारे में बताता है जो हम परमेश्वर की बनाई हुई दुनिया को ग़ौर से देखके जानते हैं।

[2] उदाहरण के लिए, गिनती 34:1, 35:1 और 35:9 देखिए।

नियम के लेखकों ने पुराने नियम को परमेश्वर की ओर से माना। •[4] नए नियम के • लेखकों ने नए नियम के लेखनों को परमेश्वर से प्रेरित माना।•[5]

यदि कोई व्यक्ति बाइबल के दावे को स्वीकार नहीं करता है, तो उसे प्रमाण पर गौर करना चाहिए।

फिर कल्पना कीजिए कि आपको बाइबल के बारे में पता नहीं था। आपको पता है कि परमेश्वर एक व्यक्ति है और अगर वह चाहे तो बात कर सकता है। तो आप जानते हैं कि परमेश्वर की ओर से एक पुस्तक संभव है। तब कोई आपको एक किताब दिखाता है और आपको बताता है कि यह परमेश्वर की ओर से एक किताब है।

? आप कैसे जान सकते हैं कि बाइबल वास्तव में परमेश्वर का वचन है? आप इसकी कैसा होने की उम्मीद करेंगें?

"यह व्यवस्था [परमेश्वर की] उस उच्च और पवित्र परमेश्वर का विवरण है जो अनंत काल तक वास करता है। यह परमेश्वर है, जिसे किसी भी मनुष्य ने उसकी महिमा में नहीं देखा, वह मनुष्यों और स्वर्गदूतों को दिखा। यह परमेश्वर का अनावरण मुख है; परमेश्वर ने अपने प्राणियों को वह प्रगट किया जो वे सहन करने में सक्षम हैं; जीवन देने के लिए प्रगट किया, नाश करने के लिए नहीं, ताकि वे परमेश्वर को देखें और जीवित रहें। यह परमेश्वर का दिल है जो मनुष्य

दुनिया में कहीं भी, जहां सुसमाचार का प्रचार किया जाता है, लोगों को इसकी सत्यता का आंतरिक दृढ़ विश्वास महसूस होता है। जब वे सुसमाचार पर विश्वास करते हैं और पश्चाताप करते हैं, वे परमेश्वर की क्षमा और एक बदले हुए जीवन का अनुभव करते हैं। ज्यादातर लोगों के लिए, यह उनका बाइबल में विश्वास करने के लिए पहला कारण होता है। •[6]

फिर वे लोग जिनका परमेश्वर के साथ संबंध है, परमेश्वर की आत्मा बाइबल के माध्यम से बोलती है, समझ और विश्वास प्रदान करती है। जिस तरह पवित्र आत्मा बाइबल का उपयोग करती है, इससे यह सिद्ध होता है कि यह परमेश्वर का वचन है।•[7]

---

[3] मति 5:17-18, युहन्ना 10:35, मारकुस 12:36।

[4] प्रेरितो के काम 3:18, 2 पतरस 1:20-21, 2 तीमुथियुस 3:16।

[5] 1 कुरिन्थियों 14:37, 2 पतरस 3:16।

[6] 1 थिस्सलुनीकियों 1:5.

[7] इफिसियों 6:17।

जब हम परमेश्वर के साथ संबंध में चलते हैं, बाइबल सही प्रकार से परमेश्वर के स्वभाव और जिस तरह से वह हमारे साथ काम करता है, हमें पता चलता है। बाइबल हमें परमेश्वर के साथ एक संबंध शुरू करने और उसे जारी रखने के लिए रास्ता दिखाती है। यह इस बात का प्रमाण है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। •[8]

लेकिन क्या अगर आप ऐसा प्रमाण चाहते हैं जो आपके आत्मिक अनुभव पर आधारित नहीं है? अन्य धर्मों के लोगों में आत्मिक अनुभव भी है, लेकिन उनका अनुभव सत्य पर आधारित नहीं है। हम कैसे जान सकते हैं कि हमारा अनुभव सत्य पर आधारित है?

? क्या इस बात का प्रमाण है कि बाइबल किन बातों में सटीक बैठती है?

बाइबल 40 से अधिक लेखकों द्वारा लिखी गयी थी, जिनमें से अधिकांश, 1,500 साल की अवधि में दूसरों के साथ परिचित नहीं थे। क्या हम आमतौर पर ऐसी एक किताब की उम्मीद करेंगें? हम मान लेंगे कि इसमें सभी प्रकार की गलतियां और विरोधाभास होंगे । तथ्यों पर विचार कीजिए। बाइबल में उल्लिखित हजारों भौगोलिक स्थलों को खोजा जा चुका है; बाइबल में उल्लिखित ऐतिहासिक हजारों घटनाओं और व्यक्तियों की इतिहास में पुष्टि की गयी है; कभी भी किसी भी खोज ने बाइबल के किसी कथन का खंडन नहीं किया; और कभी बाइबल स्वयं के प्रतिकूल नहीं हुई। इस तरह के बयान कभी लिखी गई किसी भी किताब के सच नहीं हैं । ये प्रमाण बाइबल के दावे को परमेश्वर से प्रेरित होने का समर्थन करते हैं।

हम छह बिंदुओं में प्रमाणों का सार प्रस्तुत कर सकते हैं जो बाइबल का परमेश्वर के वचन होने के दावे का समर्थन करता है। हम जानते है कि बाइबल वास्तव में परमेश्वर का वचन है, क्योंकि (1) बाइबल के हजारों तथ्यों की पुष्टि की गयी है, (2) बाइबल का कोई भी कथन असत्य सिद्ध नहीं हुआ, (3) बाइबल स्वयं प्रतिवाद नहीं करती, (4) सुसमाचार उसके प्रभावों से सिद्ध होता है, (5) परमेश्वर की आत्मा बाइबल के माध्यम से बोलती है , और (6) बाइबल परमेश्वर के साथ हमारे संबंध का नेतृत्व करती है।

[8] भजन संहिता 119:1-2.

प्रेरणा को परिभाषित करना

दुनिया में कहीं भी, जहां सुसमाचार का प्रचार किया जाता है, लोगों को इसकी सत्यता का आंतरिक दृढ़ विश्वास महसूस होता है। जब वे सुसमाचार पर विश्वास करते हैं और पश्चाताप करते हैं, वे परमेश्वर की क्षमा और एक बदले हुए जीवन का अनुभव करते हैं।[9]

वे लोग जिनका परमेश्वर के साथ संबंध है, परमेश्वर की आत्मा बाइबल के माध्यम से बोलती है, समझ और विश्वास प्रदान करती है।

जब हम परमेश्वर के साथ संबंध में चलते हैं, बाइबल सही प्रकार से परमेश्वर के स्वभाव और जिस तरह से वह हमारे साथ काम करता है, हमें पता चलता है। बाइबल हमें परमेश्वर के साथ एक संबंध शुरू करने और उसे जारी रखने के लिए रास्ता दिखाती है। यह प्रमाण है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है।

?क्या मतलब है कि बाइबल प्रेरित है?

कभी-कभी लोगों को लगता है कि जब उनको महान विचार आते हैं तब वे प्रेरित होते हैं, लेकिन बाइबल का अर्थ उससे अधिक है, जब वह परमेश्वर से प्रेरित होने का दावा करती है।

"हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।"[10]

वाक्यांश "परमेश्वर की प्रेरणा से रचा" का अर्थ "परमेश्वर की सांस से रचा गया" है। यद्यपि पवित्रशास्त्र मानव द्वारा कलमों से लिखा गया, यह पद इस बात पर ज़ोर देता है कि बाइबल परमेश्वर से आई है। इसलिए परमेश्वर की ओर से होने के कारण यह शिक्षा के लिए भरोसेमंद है। मनुष्य जो सबसे उत्तम कर सकता है, बाइबल उससे भी बेहतर है।

"पर पहले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते

[9] 1 पतरस 1:25.

[10] 2 तीमुथियुस 3:16.

थे।"[11]

2 पतरस में ये पद बताते हैं कि लेखकों की *अगुवाई* पूरी तरह से पवित्र आत्मा द्वारा की गयी थी। उनकी सटीकता उनके अपने ज्ञान पर निर्भर नहीं थी। यह तथ्य कि वे अपनी लिखाई में पवित्र आत्मा द्वारा चलाये गये, इससे यह पता चलता है कि बाइबल की विश्वस्तता आख़िरकार परमेश्वर पर निर्भर करती थी। बाइबल इतनी भरोसेमंद है जितना परमेश्वर है।

हम कह सकते हैं कि प्रेरणा एक अलौकिक काम है जिसमें परमेश्वर ने खुद को प्रकट किया और लिखित रूप में उस प्रकाशितवाक्य को लाया। बाइबल प्रेरणा का अंतिम उत्पाद है।

हम कह सकते हैं कि बाइबल किसी अन्य पुस्तक से प्रेरित नहीं है क्योंकि लेखकों को प्रेरित किया गया था। बाइबल की प्रेरणा का मतलब है कि यह पूरी तरह से परमेश्वर का वचन है, यहां तक कि इस्तेमाल किया गया हर शब्द।

प्रेरणा कैसी थी।

? ऐसे कौन से तरीके हैं जिनके द्वारा बाइबल के लेखकों ने लिखने से पहले परमेश्वर के वचन को पाया।

कई बार लोगों को आश्चर्य होता है कि प्रेरणा ने कैसे काम किया। कैसे परमेश्वर ने अपने सत्य को प्रकट किया और यह सुनिश्चित किया कि इसे सही रूप में कैसे लिखा जाए? पहला तथ्य है कि हमें परमेश्वर की प्रकाशितवाक्य की शैली और विविधता पर ध्यान देना चाहिए। वह किसी खास पद्धति तक सीमित नहीं है । •[12]

कभी-कभी परमेश्वर ने श्रव्य आवाज़ से बात की, जैसे उसने मूसा से बात की।[13] दूसरी बार

"इसलिए पुराने और नए नियम का पवित्रशास्त्र ईश्वरीय सत्य की एक सबसे ठोस और बहुमूल्य प्रणाली है। उसका हर भाग परमेश्वर के योग्य है; और सभी एक साथ एक पूरी देह है, जिसमें कोई दोष नहीं है, कोई अतिरिक्त नहीं है। यह स्वर्गीय ज्ञान का सोता है, जिसका जो भी व्यक्ति स्वाद चखने के लिए सक्षम है, वे मनुष्य के सभी लेखन को पसंद करते हैं, हालांकि जो बुद्धिमान या ज्ञानी या पवित्र है" (John Wesley के, *Explanatory Notes on the New Testament* की प्रस्तावना में)।

[11] 2 पतरस 1:20-21.

[12] इब्रानियों 1:1.

[13] निर्गमन 33:11।

उसने सपने या दर्शन दिए, और लेखक ने उनकी व्याख्या की।[14] शायद पवित्रशास्त्र का हिस्सा जो परमेश्वर से सीधे प्रति में आया था, वह इस्त्राएल के साथ वाचा थी जिसे "परमेश्वर ने उंगली से लिखा" था।[15] पवित्रशास्त्र के अन्य वर्गों को पहले बोला गया फिर लिखा गया, क्योंकि निर्गमन, लैव्यवस्था और गिनती के बड़े लेख एक कथन के साथ शुरू होते हैं, "और यहोवा ने मूसा से कहा।"

प्रेरणा का मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर ने एक श्रव्य आवाज़ में लेखक को शब्द बोले। हम विभिन्न लेखकों के बीच व्यक्तित्वों और लेखन शैलियों में अंतर देखते हैं। उदाहरण के लिए, पौलुस की शैली पतरस से बहुत अलग है। प्रेरणा के बारे में हमारी राय में परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किये गये मानव लेखकों के व्यक्तित्व, शब्दावली, लेखन शैलियां, शिक्षा, और ऐतिहासिक अनुसंधान को शामिल करना आवश्यक है।

प्रेरणा का सही दृष्टिकोण यह है कि परमेश्वर ने व्यक्ति को पूरी तरह से प्रेरित किया, मानव लेखक की कल्पना और व्यक्तित्व का उपयोग दैवीय सत्य को व्यक्त करने के लिए, न केवल सत्य का खुलासा करते हुए, बल्कि संपूर्ण सटीकता प्रदान करने के लिए लेखन प्रक्रिया की निगरानी की।

कुछ लोगों का मानना है कि परमेश्वर ने उन विचारों को दिया जिनको वह बताना चाहता था, और मानवीय लेखक ने उनको सबसे उत्तम तरीके से समझाया जितना अच्छा वे समझा सकते थे और मानते है कि अपरिहार्य रूप से लिखाई में मानवीय गलतियाँ हुई। यह दृष्टिकोण बाइबल की प्रेरणा के वर्णन के अनुकूल नहीं है। बाइबल बताती है कि पवित्र आत्मा ने लेखकों को उनकी लिखाई में अगुवाई की, इसलिए हम जानते हैं कि उन्होंने स्वयं की ओर से कुछ नहीं लिखा इसलिए उनसे गलतियां नहीं हुई।

क्योंकि बाइबल परमेश्वर का वचन है, यह ऐसा कुछ नहीं बताती जो गलत है क्योंकि परमेश्वर गलतियाँ नहीं करता।•[16]

इसके अलावा, जब कि परमेश्वर ने स्वंय को सबसे ज्यादा बाइबल में दर्ज इतिहास में

---

[14] दर्शन से प्रकाशितवाक्य के उदाहरणों के लिए, दानिय्येल 7 और 8 देखिए और प्रकाशितवाक्य की अधिकांश पुस्तक देखिए।

[15] व्यवस्थाविवरण 9:10.

[16] नीतिवचन 30:5।

प्रकट किया (और अधिकांश बाइबल, इतिहास है), इसलिए विवरण सही होना चाहिए ताकि हमारे पास परमेश्वर का भरोसेमंद प्रकाशितवाक्य हो। इसलिए, बाइबल में प्रेरणा विवरण के कारण, हम जानते हैं कि परमेश्वर ने लिखाई को निर्देशित किया जिससे कि यह पूरी तरह सही हो।

बाइबल की कुल सटीकता के समर्थन के लिए प्रयुक्त शब्द

प्रेरित: बाइबल प्रेरित है, इसका मतलब है कि यह परमेश्वर का वचन है, जो कि उसके प्रकाशितवाक्य द्वारा दिया गया है। यह शब्द मूल रूप से बाइबल की पूर्ण विश्वसनीयता और सटीकता पर ज़ोर देने के लिए पर्याप्त था, लेकिन अब कुछ लोग जो कहते हैं कि वे बाइबल के प्रेरित होने पर विश्वास करते हैं वे इस बात से इन्कार करते हैं कि यह पूरी तरह सटीक है। प्रेरणा के आवश्यक पहलुओं के समर्थन के लिए निम्नलिखित शब्दों का उपयोग किया गया है।

अचूक: इस शब्द का अर्थ है "चूक नहीं सकता।" जब हम कहते है कि बाइबल अचूक है, हमारा मतलब है कि इस पर विश्वास किया जा सकता है और यह हमें कभी गलत मार्ग नहीं दिखाएगी। बाइबल अपने सैद्धांतिक कथनों में ही अचूक नहीं है, बल्कि हर बयान में यह अचूक है।

दोषातीत: इस शब्द का अर्थ है "त्रुटि के बिना।" बाइबल हर कथन में सटीक है, जो यह बताती है। चूंकि परमेश्वर कभी झूठ नहीं बोलता है और न ही कोई गलती करता है •[17]और बाइबल परमेश्वर का वचन है, हम यह विश्वास कर सकते हैं कि इसमें कोई गलती नहीं है। यदि कोई व्यक्ति कहता है कि बाइबल में गलतियाँ हो सकती हैं क्योंकि इंसान इसकी लिखाई में शामिल थे, तो वह 2 पतरस 1:21-22 में प्रेरणा का विवरण भूल रहा है: लेखकों को पवित्र आत्मा द्वारा "उभारे गये।" बाइबल के ऐतिहासिक दृष्टिकोण की प्रेरणा यह है कि पूरी बाइबल प्रेरित है, यहां तक कि हर शब्द। इसलिए बाइबल बिना त्रुटि के है।•[18]

फिर प्रतिलिपि तैयार करते समय हुई त्रुटियों का क्या?

प्रिंटिंग मशीन आने से पहले पवित्रशास्त्र की प्रतिलिपि हाथ से बनाई जाती थी। हमारे

[17] तीतुस 1:2.

[18] मती 5:18.

पास अभी भी पौलुस, यशायाह या मूसा के द्वारा लिखित मूल हस्तलिपियाँ नहीं हैं। हज़ारों प्राचीन, हस्तलिखित प्रतियों में जो हमारे पास ग्रीक और हिब्रू में हैं, इनमें थोड़े अंतर है, और हम हमेशा ये नहीं जान सकते कि वास्तव में मूल शब्द किस प्रकार थे। हालांकि, अंतर इतने मामूली हैं कि उनके कारण कोई भी शिक्षा संदेहयुक्त नहीं है। इसलिए हम जानते हैं कि मूल हस्तलिपियाँ बिना कोई दोष के थीं, और क्योंकि प्रतियों में अंतर इतने कम हैं, हम जानते हैं कि हम हर कथन पर भरोसा कर सकते हैं जो बाइबल बताती है।

? हम कैसे जानते हैं कि बाइबल सटीक है, हालांकि इसकी कई बार हाथ से प्रतिलिपि बनायी गयी थी?

? ऐसे कौन से कारण है जिनसे कुछ लोग सोचते हैं कि बाइबल में गलतियाँ हैं?

कुछ लोग क्यों सोचते हैं कि बाइबल में गलतियाँ हैं।

कभी-कभी लोग दावा करते हैं कि बाइबल में गलतियां हैं, लेकिन इसका कारण यह है कि वे बाइबल की प्रकृति को नहीं समझते हैं।

बाइबल में ऐसे लेखन के रूपों का इस्तेमाल किया गया है जो सामान्य मानव बोलचाल है। उदाहरण के लिए, एक पद है जो बताता है कि सूर्य आसमान में एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाता है। हम जानते हैं कि वास्तव में पृथ्वी अपनी धुरी पर घूम रही है, जबकि सूर्य अपने स्थान पर स्थित रहता है, जो लोग यह जानते हैं वे फिर भी सूर्योदय और सूर्यास्त के बारे में बात करते हैं, और इसे कोई त्रुटि नहीं माना जाता। हम इसका वर्णन उसी प्रकार करते हैं, जिस प्रकार हम इसे देखते हैं।

इस प्रकार के भी काव्यात्मक कथन हैं, जैसे "पहाड़ियां मेमनों के समान उछलीं" या "पेड़ों ने अपने हाथों से ताली बजायी।" यह साहित्य की एक शैली है जो स्पष्ट रूप से शाब्दिक नहीं है।

लेखन शैलियों में अंतर हैं। इसमें अन्य लेखकों का उद्धरण भी है, जो लोग प्रेरित नहीं थे वे भी शामिल थे। ऐसे संपादक थे जिन्होंने सामग्री को मिलाकर पूरा किया। प्रेरणा की शिक्षा के लिए उसमें कोई भी समस्या नहीं है। परमेश्वर ने यह सुनिश्चित करने के लिए लेखन प्रक्रिया को निर्देशित किया ताकि अंतिम उत्पाद उसका वचन हो।

कभी-कभी लोगों को लगता है कि वे बाइबल में एक विरोधाभास देखते हैं, लेकिन उन्हें इसे और अधिक ध्यान से देखने की ज़रूरत है। उदाहरण के लिए, लूका 8:26-27 और मारकुस 5:1-2 हमें यीशु के द्वारा छुड़ाये गये एक दुष्टआत्मा से ग्रसित व्यक्ति के बारे में बताते है। मैत्ती 8:28 हमें

बताता है कि वास्तव में दो दुष्टआत्मा से ग्रसित व्यक्तियों को उस समय छुड़या गया था। यह एक विरोधाभास नहीं है। लूका और मारकुस ने यह नहीं कहा था कि वहाँ केवल एक ही व्यक्ति था, लेकिन उन्होंने उन लोगों में से एक पर ध्यान केंद्रित किया जिसका उस क्षेत्र में वृत्तांत था। यदि कोई व्यक्ति बाइबल में ऐसे कथन देखता है जो एक-दूसरे के विरोध में प्रतीत होते हैं, तो उसे जल्दी में निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए, बल्कि पूरी परिस्थिति को समझना चाहिए।

मसीह लोगों के लिए बाइबल

?कुछ ऐसे कौन से तरीके हैं जिनमें मसीह लोगों को बाइबल का इस्तेमाल करना चाहिए?

बाइबल हमें परमेश्वर की व्यवस्था प्रदान करती है। व्यवस्था हमारा उद्धार नहीं करती है, लेकिन यह हमें दिखाती है कि हमें कैसे जीना है, जैसे परमेश्वर चाहता है। परमेश्वर की व्यवस्था हमें परमेश्वर का स्वभाव दिखाती है। हमें इसका पालन करना चाहिए क्योंकि हम परमेश्वर की तरह बनना चाहते हैं। क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, इसलिए हमें उसकी व्यवस्था से प्रेम करना चाहिए। भजन संहिता 119, बाइबल में सबसे लंबा अध्याय, बताता है कि परमेश्वर के एक उपासक को परमेश्वर की व्यवस्था में कैसे खुश होना चाहिए। जो व्यक्ति परमेश्वर से प्रेम करता है, वह परमेश्वर से प्रार्थना करेगा कि वह अपने हृदय का परमेश्वर की इच्छा से मेल कर सके। जो व्यक्ति परमेश्वर से प्रेम करता है, उसके लिए यह असंभव है कि वह परमेश्वर को प्रसन्न करने के बारे में बेपरवाह रहे।

परमेश्वर का वचन ज्योति है। प्रेरित पतरस हमें बताता है कि दुनिया आत्मिक अंधकार में है, और परमेश्वर का वचन ज्योति है जो हमारा मार्गदर्शन करता है।•[19] यह हमारी उस मार्ग में मार्गदर्शन करने के लिए ज्योति है जिस पर हम चलते हैं। किसी व्यक्ति को कभी भी उन विचारों या भावनाओं का अनुसरण नहीं करना चाहिए, जो परमेश्वर के वचन के विपरीत हैं। पवित्र आत्मा किसी भी व्यक्ति को ऐसा करने के

"हम दृढ़ता से कहते हैं कि जब से मसीह और उसके प्रेरितों ने धरती पर निवास किया, तब से किसी भी व्यक्ति या कलीसिया के उद्धार के लिए जरूरी किसी चीज की कोई भी प्रेरणा किसी व्यक्ति या किसी भी मंडली को नहीं दी जाती है, जो कि पवित्र शास्त्रों में शामिल एक पूर्ण और सबसे उत्तम तरीके से नहीं है"(James Arminius, “Disputation on the Perfection of the ScripturesÐ- Ïपवित्रशास्त्र की पूर्णता पर विवाद")

[19] 2 पतरस 1:19-21, भजन संहिता 119:105।

लिए कभी भी नेतृत्व नहीं करेगी जो बाइबल कहती है कि वह गलत है।

परमेश्वर का वचन हमारा आत्मिक भोजन है। अच्छी भूख अच्छे स्वास्थ्य का संकेत है, और एक मसीह व्यक्ति परमेश्वर के वचन की अभिलाषा करेगा जैसे एक बच्चा दूध की अभिलाषा करता है।[20] जब एक मसीही व्यक्ति परिपक्व होता है, वह परमेश्वर की सच्चाई को समझने और पचाने में सक्षम हो जाता है, जैसे एक बच्चा ठोस भोजन खाना सीखता है।[21] एक मसीह व्यक्ति को स्वयं को आत्मिक रूप से परमेश्वर के वचन से पोषित करना आवश्यक है।

बाइबल शैतान के खिलाफ हमारी सुरक्षा है। हमें अपने आप को आत्मिक हथियारों के साथ सुसज्जित करना चाहिए, और तलवार जो पवित्र आत्मा हमारे लिए उपयोग करती है वह परमेश्वर का वचन है।[22] यीशु ने शैतान की परीक्षाओं का उत्तर पवित्रशास्त्र से दिया।[23]

परमेश्वर का वचन वह सत्य है, जो हमारी प्रतिक्रिया की मांग करता है। यीशु ने इसकी तुलना उन बीजों से की, जो बोये जाते हैं।[24] कुछ बीज अच्छी तरह से नहीं हुए क्योंकि जमीन तैयार नहीं थी। जब हम बाइबल पढ़ते हैं, हमें इसके सत्य के अनुकूल होना चाहिए और परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह अपने वचन से हमारे जीवन से फल लाए।

क्योंकि बाइबल परमेश्वर का वचन है. . .

यह कभी भी पुराना या निष्फल नहीं होगा। यह सभी समयों और स्थानों में सभी लोगों पर लागू होता है।

यह परमेश्वर की इच्छा समझने के लिए मार्गदर्शक है, क्योंकि परमेश्वर कभी भी स्वयं के विपरीत नहीं होगा और न ही अपने मन को बदलेगा।

यह सबसे अच्छा जीवन पाने के लिए हमारा मार्गदर्शक है, क्योंकि परमेश्वर, हमको बनानेवाले, ने हमारे लिए निर्देशों के तोर पर दिया है।

---

[20] 1 पतरस 2:2।

[21] 1 कुरिन्थियों 3:2।

[22] इफिसियों 6:17।

[23] मत्ती 4:3-4।

[24] लूका 8:11-15।

इसमें वह सब कुछ है जो हमें उद्धार पाने के लिए और परमेश्वर के साथ संबंध में चलने के लिए जानना चाहिए।

हालांकि हम पासबानों और कलीसिया की परंपरा से सीखते हैं, कोई भी विचार स्वीकार नहीं किया जा सकता जो पवित्रशास्त्र के विपरीत है क्योंकि यह अंतिम प्राधिकरण है।

पवित्र आत्मा हमारी समझ के लिए परमेश्वर के वचन को उजागर करता है और हमें इसका पालन करने का मार्ग दिखाता है।

? परमेश्वर अभी भी बोलता है, लेकिन क्या हमें ऐसी अपेक्षा करनी चाहिए कि बाइबल में कुछ भी जोड़ा जा सकता है?

क्या बाइबल संपूर्ण है?

जब से अंतिम प्रेरित की मत्यु हुई, तब से कलीसिया बाइबल को एक संपूर्ण किताब मानती है। कलीसिया में केवल लेखनों को पवित्रशास्त्र बोलने के लिए लेखनों का चयन नहीं किया गया; इसके बजाय, उन्होंने यह स्वीकार किया कि कुछ लेखन परमेश्वर से प्रेरित थे और उनके पास आत्मिक अधिकार था। उन लेखनों को जिनको पवित्रशास्त्र के तौर पर मान्यता दी गयी थी, उन्होंने उन योग्यताओं को पूरा किया था जो बाद के लेखन नहीं कर पाये थे।

पुराने नियम की पुस्तकों के लिए, कलीसिया में उन लेखों को रखा गया जो इस्राइल ने पवित्रशास्त्र के रूप में संरक्षित किये थे। नए नियम के पवित्रशास्त्र को निम्नलिखित योग्यताओं से मान्यता प्राप्त थी: प्रेरितों के साथ ऐतिहासिक संबंध, आत्म-प्रमाणिकता की गुणवत्ता, सर्वसम्मति से कलीसिया स्वीकृति, पुराने नियम का सम्मानजनक उपयोग, और विधर्म के प्रतिरोध के लिए उपयोगिता।

परमेश्वर अभी भी बात करता है, लेकिन क्या बाइबल में कुछ जोड़ा जा सकता है? यह संभव नहीं है कि कोई नया लेखन उन योग्यताओं को पूरा कर सके, जिसमें मूल ग्रंथों का समावेश हुआ। उदाहरण के लिए, प्रेरितों से कोई नया लेखन नहीं जोड़ा जा सकता, क्योंकि वे अभी भी हमारे साथ नहीं हैं। न ही कोई नया लेखन विश्वभर में पूरी कलीसियाओं द्वारा स्वीकार किया जाएगा।

पवित्रशास्त्र पूर्ण है और मुक्ति और मसीह जीवन के लिए पर्याप्त है।[25] पवित्रशास्त्र में महत्वपूर्ण और जरूरी कुछ भी नहीं जोड़ा जा सकता क्योंकि इसमें वह सब कुछ पहले से है जिसकी

[25] 1 तीमुथियुस 3:14-16।

हमें ज़रूरत है। जो लोग नए प्रकाशितवाक्य को प्राप्त करने का दावा करते हैं, उन्हें इसके बजाय उस प्रकाशितवाक्य का अध्ययन करने में समय व्यतीत करना चाहिए जो परमेश्वर ने पहले से ही दिया है। उन्हें उसमें वह सब कुछ मिलेगा जिनकी उन्हें ज़रूरत है और त्रुटि से संरक्षित है।

जानकारी का निम्नलिखित खंड कक्षा के किसी भी सदस्य द्वारा समझाया जा सकता है।

त्रुटियों से बचने के लिए

बाइबल के अधिकार का समझौता

आपका अंतिम अधिकार क्या है? कई मसीह लोग कहेंगे कि बाइबल उनका अधिकार है, लेकिन वे वास्तव में अपनी भावनाओं पर सबसे अधिक विश्वास करते हैं। एक व्यक्ति कहेगा कि कोई काम गलत नहीं है क्योंकि उसे नहीं लगता कि यह गलत है। एक व्यक्ति कहेगा कि कोई काम ठीक है क्योंकि वह ऐसा करते समय दोषी महसूस नहीं करता है। एक व्यक्ति जो ऐसा करता है, वह बाइबल के बजाय अपनी भावनाओं को अंतिम अधिकार मानता है।

कभी-कभी कोई व्यक्ति बाइबल को गंभीरता से नहीं लेता क्योंकि वह दूसरों के द्वारा प्रभावित होता है। पवित्रशास्त्र में एक आज्ञा है कि वह आज्ञा नहीं मानता क्योंकि कई लोग जो मसीह होने का दावा करते हैं इसकी आज्ञा नहीं मानते। वह एक ऐसे मसीह धर्म का अनुसरण कर रहा है जो लोकप्रिय है। हमें यह याद रखना चाहिए कि बाइबल का मसीह धर्म आमतौर पर लोकप्रिय नहीं है।

एक सीमित उद्देश्य के साथ बाइबल का अध्ययन करना

बाइबल शिक्षा का प्राथमिक स्रोत है। यह किसी सैद्धांतिक तर्क के लिए अंतिम प्राधिकरण है। हालांकि, यह एक समस्या है जब लोग बाइबल का अध्ययन केवल अपने सिद्धांतों का सबूत पाने के लिए करते हैं। वे बाइबल का इस्तेमाल आत्मिक भोजन के लिए नहीं करते हैं। वे केवल इस बारे में सोचते हैं कि कैसे दिखाए कि कोई अन्य व्यक्ति गलत है। पवित्रशास्त्र के साथ अपने सिद्धांतों को विकसित और बचाव करना हमारे लिए सही है। हालांकि, अगर हम बाइबल का इसी तरह इस्तेमाल करते हैं, तो हम उस खुशी को खो देंगे जो इसे परमेश्वर के साथ हमारे निजी संबंध में प्रयोग करने से आता है।

कुछ लोग केवल उत्साहित महसूस करने के उद्देश्य से बाइबल पढ़ते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि बाइबल के उद्देश्यों में विश्वास और सुधार शामिल हैं। हमें उन वादों को ढूँढते हुए जो हमें अच्छा महसूस कराते हैं बाइबल की आज्ञाओं को नहीं छोड़ना चाहिए। हो सकता है कि आज जो परमेश्वर आपके लिए करना चाहता है वह दोषसिद्धि या सुधार हो।

जानकारी का निम्नलिखित खंड कक्षा के किसी भी सदस्य द्वारा समझाया जा सकता है।

मतों की त्रुटियां

कुछ धार्मिक समूह बाइबल पर विश्वास करने का दावा करते हैं, लेकिन वे कुछ और अपने अंतिम अधिकार बनाते हैं। उनका दावा है कि केवल वे प्रकाशितवाक्य या एक विशेष व्यवस्था का प्रयोग करके बाइबल की व्याख्या कर सकते हैं, जो केवल उनके पास है। उनके सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत बाइबल से साबित नहीं हो सकते हैं।

उनके पास एक और किताब है जो बाइबल के अलावा वे पवित्रशास्त्र के रूप में उपयोग करते हैं। वे कह सकते हैं कि बाइबल विश्वसनीय नहीं है क्योंकि इसमें अनुवाद और त्रुटियों की नकल है।

उन सभी विचारों का अर्थ है कि बाइबल परमेश्वर के वचन के रूप में पूर्ण नहीं है। उन लोगों के लिए अंतिम प्राधिकरण कुछ और हो जाता है।

कक्षा को "विश्वास का वक्तव्य" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

विश्वास का वक्तव्य

बाइबल परमेश्वर का वचन है। परमेश्वर ने लेखकों को प्रेरित किया ताकि वे बिना किसी त्रुटि के लिखें। बाइबल में वह सब कुछ शामिल है, जिसे हमें पाप से बचने और परमेश्वर के साथ संबंधों में चलने के लिए जानने की आवश्यकता है। बाइबल हमारे सिद्धांत का प्राथमिक स्रोत है और अंतिम प्राधिकरण है। मसीह लोगों को बाइबल का हर रोज़ अध्ययन करना चाहिए ताकि वह परमेश्वर को जानें, मार्गदर्शन करें और आध्यात्मिक रूप से खुद को खिलाएं।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध लेख सौंपे जायें। अगली कक्षा के सत्र से पहले, उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

लेख के असाइनमेंट के लिए

भजन संहिता 119:33-40, **भजन संहिता** 119:129-136, **नीतिवचन** 30:5-6, **प्रकाशितवाक्य** 22:18-19, **मत्ती** 5:17-19, 2 **तीमुथियुस** 3:15-17, 2 **पतरस** 3:15-16

इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार, विद्यार्थी को कक्षा में न रहने वाले लोगों को पाठ या पाठ का हिस्सा पढ़ाना चाहिए। यह शिक्षण कलीसिया, या एक गृह बाइबल अध्ययन समूह, या किसी अन्य जगह में किया जा सकता है। विद्यार्थियों की यह ज़िम्मेदारी होगी के वे इन अवसरों को बनायें।

अनुशंसित पाठ

Dockery, David S. *Christian Scripture.* Nashville:
Broadman and Holman, 1995.

परमेश्वर की पुस्तक

अध्ययन के लिए सवाल

1. सामान्य प्रकाशितवाक्य क्या है?
2. किन रूपों में परमेश्वर ने विशेष प्रकाशितवाक्य दिया है?
3. वे कौन से सत्य हैं जिन्हें विशेष प्रकाशितवाक्य के द्वारा प्रकट किया गया है पर सामान्य प्रकाशितवाक्य के द्वारा नहीं?
4. बाइबल स्वयं के बारे में क्या दावा करती है?
5. वे छह कारण बताइये कि बाइबल वास्तव में परमेश्वर का वचन है।
6. बाइबल क्यों "शिक्षा के लिए, ताड़ना करने के लिए, सुधार के लिए, धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है"?
7. बाइबल उस प्रेरणा का क्या वर्णन देती है जो हमें आश्वस्त करती है कि लेखकों को गलतियाँ करने से रोका गया था?
8. प्रेरणा के लिए परमेश्वर ने कितने विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल किया?
9. बाइबल प्रेरित है, इसका क्या अर्थ है?
10. बाइबल अचूक है, इसका क्या अर्थ है?
11. बाइबल दोषातीत है, इसका क्या अर्थ है?

पाठ 2
परमेश्वर की विशेषताएं

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) एक व्यक्ति की परमेश्वर के बारे में अवधारणा क्यों इतनी महत्वपूर्ण है।
(2) यह कैसे है कि परमेश्वर सृष्टिकर्ता सबसे विशिष्ट है।
(3) परमेश्वर की विशेषताएं, इसका अर्थ है कि वह व्यक्तिगत, आत्मा, अनन्त, त्रिएक, सर्व-शक्तिशाली, हर जगह उपस्थित, अपरिवर्तनीय, सर्वज्ञानी, पवित्र, धर्मी और प्रेमपूर्ण है।
(4) परमेश्वर के साथ हमारे संबंध के लिए परमेश्वर की प्रत्येक विशेषता कैसे महत्वपूर्ण है।
(5) परमेश्वर की संप्रभुता का बाइबल के अनुसार दृष्टिकोण।
(6) परमेश्वर के बारे में विश्वास का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक यह है कि विद्यार्थी आराधना के रूपों के महत्व को गलत तरीके से समझने की गलती से बचना सीखें।

"परमेश्वर की विशेषताएं"
मुद्रित व्याख्यान सामग्री

पिछले पाठ की परीक्षा लेने के बाद, समीक्षा प्रश्न पूछने के लिए उस पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दी गयी लेख पठन पर जाइए।

यशायाह 40 एकसाथ पढ़िए। इस बात पर चर्चा कीजिए कि यह लेख परमेश्वर के बारे में क्या बताता है।

अब एकसाथ सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक? देखें तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक। देखें तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र संदर्भ ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

? किसी व्यक्ति की परमेश्वर के विषय में सही अवधारणा है या नहीं, यह क्यों मायने रखता है?

परमेश्वर कौन है? A.W. Tozer ने इस सवाल का महत्व दिखाया जब उन्होंने कहा, "मेरा मानना है कि शिक्षा में शायद ही कोई त्रुटि है या मसीह नैतिकता को लागू करने में कोई असफलता है, जिस में परमेश्वर के बारे में अपूर्ण और अप्रतिष्ठित विचारों को नहीं खोजा जा सकता।"[26] यीशु ने सामरी स्त्री से कुएँ पर कहा था कि सामरियों की आराधना के साथ एक समस्या यह थी कि उन्हें नहीं पता था कि वे किसकी अराधना करते थे। किसी भी व्यक्ति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता परमेश्वर पर उनकी अवधारणा है। एक व्यक्ति की परमेश्वर पर अवधारणा उसके धर्म की नींव है। इस बात के बारे में गलत होने से गंभीर और कोई त्रुटि नहीं हो सकती कि परमेश्वर कैसा है।

सभी तुलनाएँ परमेश्वर की पूरी तरह से व्याख्या करने में अपर्याप्त हैं, क्योंकि वह असीम रूप से परे है और हम से ऊपर है। यहां तक कि बाइबल भी हमें उसकी एक औपचारिक परिभाषा नहीं देती है, लेकिन हर जगह उसके अस्तित्व और शक्ति का वर्णन करती है। उत्पत्ति की पुस्तक हमें बताती है कि कैसे परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया; सूर्य, चंद्रमा, और सितारे; पौधे और पशु जीवन; और अंत में मनुष्य। पवित्रशास्त्र का पहला पाठ बहुत स्पष्ट है: परमेश्वर उन सभी चीज़ो को बनानेवाला है। इस प्रकार वह सभी से अलग है जो मौजूद है, क्योंकि वह अपने सृजन का हिस्सा नहीं है।

लेकिन पूरी बाइबल में परमेश्वर के बारे में कई अन्य कथन हैं। धर्मशास्त्रियों ने परमेश्वर की विशेषताओं की सूची में सावधानीपूर्वक बाइबल के आँकड़ों को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। हम इनमें अपनी अपूर्ण समझ के साथ कभी भी निपुणता प्राप्त नहीं कर सकते; फिर भी, जैसा A. W. Tozer ने हमें याद दिलाया है, कि एक भक्तियुक्त अध्ययन जिनके बारे में हम जानते हैं, प्रबुद्ध मसीह लोगों के लिए एक मीठा, अवशोषित, आत्मिक शिक्षा हो सकती है। इस प्रकार हम परमेश्वर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हैं। वे बाइबल में उसके स्वयं के प्रकाशितवाक्य पर आधारित हैं, और इस कारण से हम जानते हैं कि वे सही हैं।

---

[26] *The Knowledge of the Holy*,10। *(पवित्र का ज्ञान)*

परमेश्वर की कुछ विशेषताएं

हम जिन चीज़ों को सम्मिलित करेंगे, वह परमेश्वर की विशेषताओं की पूरी सूची नहीं है लेकिन वे चीज़ें हमारे जानने के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं।

? आप परमेश्वर की कौनसी विशेषताओं को सूचीबद्ध कर सकते हैं?

परमेश्वर व्यक्तिगत है। इसका मतलब है कि वह एक वास्तविक और जीवित व्यक्ति है जिसमें बुद्धि, भावनाएं और इच्छाएं हैं। वह प्रकृति के नियमों या बिजली या गुरुत्वाकर्षण जैसे व्यक्तित्वहीन ताकतों का योग नहीं है। वह बनाता है, काम करता है, जानता है, इच्छा करता है, योजना बनाता है, और बोलता है।

? अगर परमेश्वर व्यक्तिगत नहीं होता तो इससे हमें क्या फर्क पड़ता?

यह तथ्य है कि वह व्यक्तिगत है, इससे हमारे लिए संभव है कि हम उसके साथ एक रिश्ता स्थापित कर सकते हैं। अगर वह व्यक्तिगत नहीं होता, तो हम उससे प्रार्थना नहीं कर सकते। यदि वह व्यक्तिगत नहीं होता तो उसके लिए प्रसन्न या अप्रसन्न होना संभव नहीं होता।

परमेश्वर एक आत्मा है। "परमेश्वर आत्मा है, और जो उसकी आराधना करते हैं, उन्हें आत्मा और सच्चाई में आराधना करनी चाहिए।"[27] यह तथ्य है कि परमेश्वर आत्मा है, और वह हमारे आत्मिक तालमेल और आराधना करने का आधार प्रदान करता है। प्रार्थना और आराधना भौतिक वस्तुओं, या विशिष्ट भौतिक पदों, या एक नियत कार्यक्रम, या एक इमारत पर निर्भर नहीं करते। आराधना पर हमारा ध्यान केन्द्रित करने में हमारी मदद करने के लिए ये बातें महत्वपूर्ण हो सकती हैं, लेकिन आराधना उन पर निर्भर नहीं करती।

यह तथ्य है कि परमेश्वर आत्मा है, यह भी एक कारण है कि उसने हमें उसकी कोई भी भौतिक छवि बनाने के लिए मना किया है।[28] आत्मा के रूप में[29], परमेश्वर हमारे लिए अदृश्य है, सिवाय कि वह एक दृश्य रूप धारण करे।[30] क्योंकि परमेश्वर के विषय में हमारी

---

[27] युहन्ना 4:24.

[28] निर्गमन 20:4-6।

[29] 1 तीमुथियुस 1:17।

[30] उत्पत्ति 18:1, यशायाह 6:1।

धारणा सीमित है, यहां तक कि अगर वह कोई दृश्यमान रूप में प्रकट हो, तब भी यह कहना सही होगा कि किसी ने परमेश्वर को पूरी तरह से नहीं देखा।[31]

परमेश्वर अनन्त है। कभी ऐसा कोई समय नहीं था जिसमें वह अस्तित्व में नहीं था, और कभी ऐसा कोई समय नहीं होगा जिसमें वह अस्तित्व में नहीं होगा; परमेश्वर की कोई शुरुआत नहीं है और न ही अंत है। एक नाम जो उसने प्रकट किया है वह है, मैं जो हूं सो हूं;[32] और यूहन्ना ने उसकी व्याख्या इस प्रकार से की है कि वह सर्वशक्तिमान है, जो था, और जो आने वाला है।[33] अनन्त से अनन्तकाल तक, वह परमेश्वर है।[34] कुछ धर्मों में जब उनके देवता पैदा हुए थे, तब के बारे में मिथक हैं, लेकिन सच्चा परमेश्वर अनन्त है।

परमेश्वर त्रिएक है। त्रिएकता का सिद्धांत इस तथ्य से आता है कि बाइबल कहती है कि एक परमेश्वर है, फिर भी तीन अलग-अलग व्यक्तियों का परमेश्वर के रूप में उल्लेख करती है। केवल एक ही परमेश्वर है, लेकिन उसकी प्रकृति में तीन व्यक्ति हैं। यद्यपि हम त्रिएकता को पूरी तरह से समझ नहीं सकते, यह तर्कहीन नहीं है, क्योंकि हम यह नहीं कह रहे हैं कि वह एक के बजाय तीन हैं। केवल एक ही परमेश्वर, जिसका अस्तित्व तीन व्यक्तियों के तौर पर है। क्योंकि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में ईश्वर के सभी गुण हैं, उनमें से प्रत्येक को पूर्ण रूप से परमेश्वर कहा जा सकता है और परमेश्वर के रूप में आराधना की जा सकती है।

परमेश्वर सर्वशक्तिमान है। वह वो सब कुछ कर सकता है, जो वह चाहता है। "हमारा परमेश्वर स्वर्ग में है; वह वो सब कुछ करता है जो उसे भाता है।"[35] उसकी कोई सीमा नहीं है सिवाय इसके कि वह कभी अपने पवित्र स्वभाव के विपरीत काम नहीं करता है और हमेशा अपने किये हुए वादों को पूरा करता है। परमेश्वर के लिए कुछ भी मुश्किल या चुनौतीपूर्ण नहीं है। "प्रभु परमेश्वर सर्वव्यापी शासन करता है।"[36]

? परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, इस बात से हमें क्या फर्क पड़ता है?

---

[31] यूहन्ना 6:46, यूहन्ना 1:18, निर्गमन 33:20।

[32] निर्गमन 3:14।

[33] प्रकाशितवाक्य 1:8।

[34] भजन संहिता 90:2।

[35] भजन संहिता 115:3।

[36] प्रकाशितवाक्य 19:6।

यह उत्साहजनक है, क्योंकि हम जानते हैं कि हमारे संघर्षों के बीच, वह "जितना हम माँगते हैं या सोचते हैं, उससे भी अधिक करने में सक्षम है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हममें काम करती है।"[37] भले ही चीजें नियंत्रण से बाहर हो, हम जानते हैं कि परमेश्वर की महान योजना पूरी होगी। हम विश्वास में प्रार्थना कर सकते हैं कि परमेश्वर किसी भी स्थिति को बदल सकते हैं।

> "जिस प्रकार मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि एक अनन्त और स्वतंत्र प्राणी का अस्तित्व है और ऐसा एक से अधिक होना असंभव है; इसलिए मेरा यह विश्वास है कि यह एक ही परमेश्वर है जो सभी वस्तुओं का पिता है .... मैं विश्वास करता हूँ कि यह पिता केवल वही नहीं कर सकता जो उसे भाता है बल्कि उसके पास वह अनन्त अधिकार है जिससे वह उन सब वस्तुओं में से जो उसने बनायी हैं किसी भी वस्तु को स्वतंत्रतापूर्वक कभी भी, कैसे भी और जैसा उसे भाता है अधिकार में रख सकता है या समाप्त कर सकता है; और मैं विश्वास करता हूँ कि उसने अपनी भलाई से, स्वर्ग, पृथ्वी और जो कुछ उनमें है सभी को बनाया है"(John Wesley, ÏLetter to a Roman CatholicÐ- "रोमन कैथोलिक के लिए पत्र")।

परमेश्वर हर जगह उपस्थित है। ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां वह नहीं है, और ऐसा कुछ नहीं होता जिसे वह नहीं देखता। "यहोवा इस प्रकार कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन है, और पृथ्वी मेरे पांव की चौकी है।"[38] वह पूरी सृष्टि का परमेश्वर है, और उसकी सामर्थ्य किसी भी क्षेत्र तक सीमित नहीं है। फिर यहोवा यह कहता है, "क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूं? क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझसे परिपूर्ण नहीं हैं?"[39] यह हमें भरोसा दिलाता है कि परमेश्वर हमारी परिस्थितियों और हमारी समस्याओं को जानता है। यह हमें यह भी बताता है कि कोई भी परमेश्वर से कभी भी छिप नहीं सकता, और न ही पाप कर सकता है जहां परमेश्वर देख नहीं सकता। सभी चीजें उसकी आँखों के सामने अनावृत और खुली हैं। •[40]

परमेश्वर अपरिवर्तनीय है । कभी ऐसा कोई समय नहीं था जब वह परमेश्वर बना। वह हमेशा परमेश्वर ही रहेगा। •[41] ऐसे धर्म हैं जो मानते हैं कि परमेश्वर विकास की प्रक्रिया

---

[37] इफिसियों 3:20।

[38] यशायाह 66:1।

[39] यिर्मयाह 23:24।

[40] इब्रानियों 4:13।

[41] याकूब 1:17।

में है, लेकिन बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर अपने अस्तित्व और प्रकृति में, और अपने गुणों और उद्देश्यों में, कभी नहीं बदलता •[42] वह हमेशा जो सही है उससे प्रेम करता है, और जो गलत है उससे बैर रखता है। अनन्त परमेश्वर, जिसने खुद को मूसा को "मैं हूं" के रूप में प्रकट किया, वह आज भी "मैं हूं" है, अपने अस्तित्व, बुद्धि, शक्ति, पवित्रता, न्याय, भलाई, और सच्चाई में अनन्त और अपरिवर्तनीय है। वह हमेशा एक सा रहता है, और उसके वर्षों का कोई अंत नहीं होगा।[43]

परमेश्वर सर्वज्ञ है। "उसकी समझ अनन्त है।"[44] परमेश्वर के लिए सीखने की कोई प्रक्रिया नहीं है, क्योंकि वह सब कुछ जानता है। परमेश्वर ने कभी किसी से कुछ नहीं सीखा, और कोई भी उसे सलाह नहीं दे सकता •[45] परमेश्वर भविष्य को जानता है और इसलिए जो कुछ भी होता है उसके लिए कभी भी आश्चर्यचकित या अप्रस्तुत नहीं होता।[46]

?हमें यह जानने में क्या फर्क पड़ता है कि परमेश्वर सब कुछ जानता है?

परमेश्वर के ज्ञान से संबंधित परमेश्वर की बुद्धि है, जो सृष्टि में दिखती है और विशेष रूप से उद्धार की योजना में। •[47] क्योंकि वह सब कुछ जानता है और समझता है, वह हमेशा सही काम करता है। हम जानते हैं कि परमेश्वर की इच्छा हमेशा हमारे लिए सर्वोत्तम है क्योंकि परमेश्वर हर स्थिति को पूरी तरह समझता है और जानता है कि हर काम का नतीजा क्या होगा।

परमेश्वर पवित्र है। परमेश्वर ने खुद को मुख्य रूप से पवित्र के रूप में वर्णित किया है। भविष्यवक्ता यशायाह ने बार-बार परमेश्वर को "इस्राएल का पवित्र" कहा था। स्वर्गदूत उसके सामने लगातार "पवित्र, पवित्र, पवित्र" पुकारते हैं।[48] परमेश्वर की पवित्रता आराधना का विषय था: "वे तेरे महान और अद्भुत नाम की प्रशंसा करें; क्योंकि यह पवित्र है।"[49] वह सभी नैतिक पूर्णता का पूर्ण आदर्श है। उसके कार्यों को सभी भलाई की उपस्थिति और सभी

---

[42] मलाकी 3:6।

[43] भजन संहिता 102:27।

[44] भजन संहिता 147:5।

[45] यशायाह 40:13-14।

[46] भजन संहिता 139:4।

[47] भजन संहिता 104:24, रोमियों 11:33।

[48] यशायाह 6:3.

[49] भजन संहिता 99:3।

बुराइयों की अनुपस्थिति से चिह्नित किया जाता है, और ये कभी भी अन्यथा नहीं हो सकते। परमेश्वर की पवित्रता दर्शाती है कि मनुष्य अनुग्रह से पहली बार परिवर्तित होने के बिना सेवा और आराधना करने के लिए उपयुक्त नहीं है।•[50] परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी ही तरह पवित्र हों। "परन्तु जिसने तुम्हें बुलाया है, वह पवित्र है, तुम भी अपने सारे आचरण में पवित्र बनों, क्योंकि यह लिखा है, पवित्र बनों, क्योंकि मैं पवित्र हूं।"[51]

परमेश्वर धर्मी है। परमेश्वर के कार्य हमेशा सही हैं। उसके पवित्र स्वभाव के कारण ही उसके पवित्र कार्य हैं। •[52] उसकी स्वयं की प्रकृति ही जो सही है उसकी मानक है। वह हमेशा अपना वचन पूरा करता है और कभी झूठ नहीं बोलता।[53]

? हमारे लिए यह बात क्यों महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर धर्मी है?

उसका धर्म उसकी व्यवस्था का आधार है, जो उसके और दूसरों के प्रति हमारे कर्तव्यों का सही मानक है। वह अपनी व्यवस्था को उचित रूप से संचालित करता है, जो इसे मानते हैं, वह उन्हें पुरस्कृत करता है, और जो इसे तोड़ते हैं, उन्हें दण्ड देता है। इससे उन लोगों को दिलासा मिलता है जो दुख उठा रहे हैं और पीड़ित हैं, परन्तु इससे हमें यह भी चेतावनी मिलती है कि कोई भी कभी भी गलत करके बच नहीं सकता। "प्रभु के निर्णय सच्चे और धर्मी हैं।"[54] वह " सबको उनके कार्यों के अनुसार फल देगा।"[55] "हम सभी मसीह की न्यायिक बैठक के सामने खड़े होंगे।"[56]

परमेश्वर प्रेम है। यह विशेषता बिल्कुल महत्वपूर्ण है। कल्पना कीजिए कि परमेश्वर के लिए यह कितनी भयानक बात होती अगर वह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ होकर भी हमसे प्रेम नहीं करता! कैसा होता अगर वह पवित्र और धर्मी होता, लेकिन हमसे प्रेम नहीं करता? लेकिन उसकी पूर्ण शक्ति और पवित्रता के साथ, परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। •[57] परमेश्वर

---

[50] यशायाह 6:5।

[51] 1 पतरस 1:15-16।

[52] व्यवस्थाविवरण 32:4.

[53] गिनती 23:19, 2 शमूएल 7:28।

[54] भजन संहिता 19:9।

[55] रोमियों 2:6।

[56] रोमियों 14:10।

[57] लूका 18:19, भजन संहिता 119:68।

सामान्य रूप में अपनी सृष्टि को आशीष देता है।[58] वह विशेष रूप से जीवन की अच्छी चीजों के साथ मानवता को आशीष देता है और दुनिया को ऐसी जगह के रूप में बनाया जहां वे आनंद में जी सकें।[59] जो लोग प्रेम करते हैं और उसकी सेवा करते हैं, वह उन के लिए जीवन के हर भाग को आशीष में बदल देता है।[60] उसका अनुग्रह, दया, धैर्य, और शांति उसके प्रेम के कारण हमें आशीष देते हैं। •[61]

परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।[62] हमारे पाप और विद्रोह के बावजूद, वह हम पर दया करता है, हमें यीशु के माध्यम से उसके पास आने के लिए आमंत्रित करता है, जिसे उसने हमारे पापों के लिए प्रायश्चित्त बलिदान के रूप में प्रदान किया है।[63] क्रूस पर परमेश्वर हमें अपना वह हृदय दिखाता है, जो हमारे लिए प्रेम और करुणा से उमड़ता है। प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये अपने पुत्र को भेजा।[64] परमेश्वर सभी लोगों से उनकी जाति, प्राकृतिक क्षमता, या सांसारिक स्थिति से प्रभावित हुए बिना प्रेम करता है, और सभी को क्षमा प्रदान करता है। •[65] इसलिए, परमेश्वर चाहता है कि हम सभी लोगों से प्रेम करें और जो हमारे साथ गलत कर रहे हैं, उन्हें क्षमा करने के लिए तैयार हों। प्रेम और क्षमा परमेश्वर के बच्चों की पहचान है। •[66]

> "हे प्रभु, आपने हमें अपने लिए बनाया है, और हमारे हृदय तब तक बेचैन रहेंगे जब तक वे आप में आराम नहीं पाते" (Augustine of Hippo)।

परमेश्वर ने हमें अपनी छवि में बनाया है। यद्यपि हम परिमित हैं, और वह असीम है, हम उसकी रचना में किसी भी चीज़ की तुलना में और अधिक उसके समान हैं। उसने हमें बनाया है ताकि हम उसे जान सकें, और उसकी आराधना कर सकें, और उससे प्रेम कर सकें।

---

[58] उत्पत्ति 1:22, 28।

[59] भजन संहिता 8:4-6, भजन संहिता 23, भजन संहिता 36:5-10, और भजन संहिता 103।

[60] रोमियों 8:28।

[61] निर्गमन 34:6, इफिसियों 1:7, 2:4-5।

[62] यूहन्ना 3:16.

[63] 1 यूहन्ना 2:2।

[64] 1 यूहन्ना 4:10।

[65] रोमियों 2:11, याकूब 2:1-5।

[66] मत्ती 5:43-45।

उसने हमें खुद के लिए बनाया है, और जैसा अगस्त्य हमें याद दिलाते हैं, हम तब तक विश्राम नहीं पायेंगे जब तक हम उसमें अपना विश्राम नहीं पाते। परमेश्वर के विपरीत, धरती पर सब कुछ महत्वहीन है, और केवल वही हमारी पूरी भक्ति के योग्य है। परमेश्वर के अलावा कहीं भी स्थायी संतोष प्राप्त करना असंभव है। उसकी कृपा से हमें छुड़ाया जा सकता है और सब चीजों से बढ़कर उसकी आराधना करने में सक्षम हो सकते हैं, उस पर हमारे स्वर्गीय पिता के रूप में भरोसा कर सकते हैं, और हमारे जीवन के हर क्षेत्र में उसकी इच्छा पूरी कर सकते हैं।

? क्या हमें उसकी आराधना करने के लिए कलीसिया भवनों और चीजों का इस्तेमाल करने की आवश्यकता है?

त्रुटियों से बचने के लिए: आराधना के रूपों के महत्व में गलतफहमी।

परमेश्वर आत्मा है, और हम उसकी आत्मा में आराधना करते हैं। इसका अर्थ है कि भवन, फर्नीचर और संगीत वाद्ययंत्र आवश्यक नहीं हैं। इसका अर्थ है कि हम भौतिक क्रियाओं के बिना आराधना कर सकते हैं जैसे घुटने टेककर, गाकर, या पढ़कर।

परन्तु आरधना के अलग अलग रूप बहुत महत्वपूर्ण हैं, हालांकि वे अराधना के लिए बिल्कुल आवश्यक नहीं हैं। क्योंकि हम भौतिक शरीर के इंसान हैं, जो पृथ्वी पर रहते हैं, हमें अपनी आराधना को व्यक्त करने के लिए अलग अलग तरीकों की आवश्यकता होती है।

क्योंकि हमें अलग अलग तरीकों की आवश्यकता है, परमेश्वर ने आराधना के लिए निर्देशन दिये। पुराने नियम में मंदिर की आराधना के लिए निर्देशन दिए गए हैं। नए नियम में हमारे पास बपतिस्मा, सहभागिता, गायन, सार्वजनिक प्रार्थना, और पवित्रशास्त्र की पढ़ाई के लिए निर्देशन हैं। यहां तक कि बाइबल भी एक भौतिक वस्तु है जिसे हम आराधना में इस्तेमाल करते हैं।

कुछ लोग आराधना के एक रूप के साथ जुड़े रहते हैं। उनका मानना है कि यह सही ढ़ंग से परमेश्वर की आराधना करने का एकमात्र तरीका है। सभा में उनकी आराधना नहीं बदलती, भले ही लोग वास्तव में उन रूपों में आराधना व्यक्त नहीं करते, जो वे उपयोग कर रहे हैं।

अन्य लोगों का मानना है कि आराधना के रूपों को बिना किसी सीमा के बदला जा सकता है। उन्हें याद रखना चाहिए कि हमें अपनी श्रद्धा, प्रेम और परमेश्वर के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त

करने के लिए रूपों की आवश्यकता है। यदि किसी रूप से बातें पूरी हो रही हैं, तो इसे रोका नहीं जाना चाहिए जब तक कि एक ही उद्देश्य के लिए कोई बेहतर रूप न हो।

निम्नलिखित खंड की जानकारी कक्षा के किसी भी सदस्य द्वारा समझाया जा सकता है।

परमेश्वर संप्रभु है

परमेश्वर के पास पूर्ण शक्ति और पूर्ण अधिकार है। सृष्टि के शासक के रूप में, वह जो भी चुनता है उसे पूरा करने में सक्षम है।[67]

वह सब कुछ अपनी इच्छा के अनुसार करता है, उसे किसी के अधीन होने की ज़रूरत नहीं है।[68] वह जो कुछ भी करने का फैसला करता है, वह निश्चित रूप से होता है, क्योंकि ऐसा कोई नहीं है जो उसे रोक सकता है और कोई भी स्थिति उसके लिए इसे असंभव नहीं बना सकती। •[69] जब भी वह चाहे, वह सांसारिक शासकों के कार्यों को नियंत्रित करता है।[70]

परन्तु परमेश्वर ने लोगों को चुनाव करने की क्षमता दी है। वे अच्छी चीजों में से चुन सकते हैं, लेकिन वे अच्छे और बुरे के बीच में भी चुनाव कर सकते हैं। वे परमेश्वर की आज्ञा मानने या उसकी आज्ञा न मानने के बीच भी चुनाव कर सकते हैं। सबसे पहला मनुष्य जो उसने बनाया, उसने पाप करने का चुनाव किया। तब से प्रत्येक व्यक्ति ने चुनाव किये हैं, और हालांकि कुछ लोगों ने अच्छे चुनाव किये हैं, लेकिन सब ने पाप भी किया है।

अगर परमेश्वर सब पर प्रभुता करता है, वह ऐसी दुनिया में अपनी इच्छा कैसे पूरी करता है जहां अरबों प्राणी अपनी पसंद के चुनाव कर रहे हैं?

यह परमेश्वर की इच्छा है कि उसके ऐसे प्राणी हों जो वास्तविक चुनाव करें। इसका अर्थ यह है कि वह उनके लिए सब चुनाव नहीं बनाएगा। इसका यह भी अर्थ है कि वे जो करते हैं उसके अलग परिणाम होंगे; अन्यथा, वे वास्तविक चुनाव नहीं करते। अगर परमेश्वर किसी व्यक्ति

[67] भजन संहिता 115:3, भजन संहिता 135:5-6।

[68] इफिसियों 1:11।

[69] यशायाह 46:9-11।

[70] उत्पति 50:20, प्रेरितों के काम 4:27-28।

के कार्यों के परिणामों को नियंत्रित करता ताकि कोई भी बुराई न हो, तो वह उस व्यक्ति से बुराई करने की संभावना को ले लेता।

परमेश्वर का न्याय सच्चा न्याय है, क्योंकि वह लोगों का न्याय उनके स्वेच्छापूर्वक कार्यों के लिए करता है। •[71] यदि परमेश्वर सभी कार्यों को नियंत्रित करता, तो दण्ड और पुरस्कार देना न्यायविरुद्ध होता।

परमेश्वर इच्छा करता है कि लोग वह चुनें जो सही है, परन्तु सबसे ज्यादा वह यह इच्छा करता है कि वे वास्तविक चुनाव करें। यही कारण है कि दुनिया ऐसी है जैसी यह है। दुनिया परमेश्वर की अच्छी चीजों का अच्छा संयोजन है, अच्छे मानवीय कार्यों के परिणाम, बुरे मानवीय कार्यों के परिणाम हैं, और भलाई जो परमेश्वर बुरे मानवीय कार्यों से भी लाता है।

हम उद्धार की योजना में परमेश्वर की प्राथमिकताओं को देखते हैं। वह सभी को उद्धार प्रदान करता है और चाहता है कि सब बच जायें। वह प्रत्येक व्यक्ति को सुसमाचार पर प्रतिक्रिया देने की शक्ति देता है, लेकिन प्रतिक्रिया को बल नहीं देता। यही कारण है कि पूरे पवित्रशास्त्र में आमंत्रण और अनुरोध का उपयोग किया जाता है।[72] परमेश्वर लोगों को एक विकल्प प्रदान करता है और उसके परिणामों का वर्णन करता है।

हम पूर्ण विश्वास में सुसमाचार प्रचार करते हैं कि हर व्यक्ति को बचाया जा सकता है। हमारा विशेष कार्य है कि लोगों को परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए पवित्र आत्मा के साथ मिलकर काम करें। •[73]

छात्रों को "विश्वास का वक्तव्य" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

विश्वास का वक्तव्य

केवल एक ही परमेश्वर है, जिसने पूरी सृष्टि को बनाया और वह सभी का प्रभु है। वह एक अनन्त, अपरिवर्तनीय आत्मा है। वह सर्व-शक्तिशाली, सर्वज्ञ, और हर जगह मौजूद है। वह

[71] प्रकाशितवाक्य 20:12-13 है।

[72] यशायाह 1:18, यहोशू 24:15, प्रकाशितवाक्य 3:20, यशायाह 55:1, व्यवस्थाविवरण 30:15, 19, यहेजकेल 18:31।

[73] 2 कुरिन्थियों 5:11।

अपने चरित्र में पूरी तरह से पवित्र है और जो कुछ भी करता है वह सभी में धर्मी है। वह अपनी सृष्टि को आशीष देता है और हर व्यक्ति को प्यार करता है, खुद के साथ क्षमा और संबंध पेश करता है।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले, उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

यशायाह 46, नीतिवचन 9:10, भजन संहिता 139:1-4, प्रकाशितवाक्य 4:9-11, योना 1:3।

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब असाइनमेंट के लिए पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

Purkiser, W.T., ed. *Exploring Our Christian Faith (हमारे मसीह विश्वास की खोज)* Kansas City, MO: Beacon Hill Press, 1960.

Tozer, A.W. *The Knowledge of the Holy (पवित्र लोगों का ज्ञान)* New York: Harper and Row, 1961.

परमेश्वर की विशेषताएं
अध्ययन के लिए प्रश्न

1. एक आदमी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता क्या है?
2. कौनसी सबसे गंभीर त्रुटि संभव है?
3. परमेश्वर के बारे में पवित्रशास्त्र का पहला पाठ कौनसा है?

4. परमेश्वर की उस विशेषता का नाम बताइए जो प्रत्येक कथन से मेल खाती है:

क. हम वर्णन नहीं कर सकते कि परमेश्वर कैसा दिखता है।

ख. परमेश्वर हमेशा से अस्तित्व में है।

ग. परमेश्वर एक व्यक्तित्वहीन बल नहीं है।

घ. परमेश्वर की प्रकृति हमेशा एक सी रहेगी।

च. परमेश्वर जो भी करना चाहता है वह कर सकता है।

छ. परमेश्वर सब कुछ देखता है।

ज. परमेश्वर ने अपने बेटे को भेजा ताकि हम दया पा सकें।

झ. परमेश्वर की प्रकृति में तीन व्यक्ति हैं।

ट. परमेश्वर के पास पूर्ण नैतिक सिद्धता है।

ठ. परमेश्वर के कार्य हमेशा निष्पक्ष और धर्मी हैं।

पाठ 3
त्रिएकता

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) सृष्टि त्रिएकता की प्रकृति का उदाहरण कैसे है।
(2) त्रिएकता की शिक्षा के लिए बाइबल का आधार।
(3) क्यों त्रिएकता की शिक्षा सुसमाचार का आधार है?
(4) त्रिएकता के भीतरी संबंधों की संरचना।
(5) त्रिएकता मानव संबंधों के लिए कैसे एक मिसाल है।
(6) त्रिएकता में हमारा विश्वास कैसे हमारी आराधना में अगुआई करता है।
(7) त्रिएकता के विषय में मसीह धारणाओं का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक यह है कि विद्यार्थी को उन सामान्य त्रुटियों को करने से बचना है जो लोगों ने त्रिएकता की व्याख्या करने में कोशिश की हैं।

ï **त्रिएकता”**

मुद्रित व्याख्यान सामग्री

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद, समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन को देखिए।

यूहन्ना 14 को एक साथ पढ़िए। चर्चा कीजिए, कैसे यह लेखांश दर्शाता है कि परमेश्वर त्रिएक है।

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। इस पाठ में इस चिह्न । का उपयोग नहीं किया गया है क्योंकि इस्तेमाल किये गये पद पाठ में छपे हुए हैं।

बहुत से लोग त्रिएकता की शिक्षा से असमंजस में है क्योंकि यह बताती है कि परमेश्वर के एक मायने में तीन रूप हैं, फिर भी दूसरे मायने में एक ही रूप है।

लेकिन जब हम सृष्टि को देखते हैं तो हम तीन में से एक का एक और उदाहरण देखते हैं। सृष्टि के तीन पहलू हैं - अंतराल, समय और पदार्थ। उन तीनों में से किसी एक के बिना, सृष्टि का अस्तित्व नहीं हो सकता।

इन तीनों में से प्रत्येक के तीन पहलू भी हैं।

अंतराल में लंबाई, चौड़ाई और ऊंचाई शामिल हैं - एक में तीन। इन पैमानों में से किसी एक के बिना, अंतराल का अस्तित्व नहीं हो सकता।

समय में अतीत, वर्तमान और भविष्य शामिल हैं - एक में तीन। इन पहलुओं में से किसी एक के बिना, समय का अस्तित्व नहीं हो सकता।

पदार्थ में *गति* करती हुई *ऊर्जा* शामिल है जो *दृष्टिगत वस्तुएं* पैदा करती है - एक में तीन। अगर ऊर्जा नहीं होती, तो गति या दृष्टिगत वस्तुओं का अस्तित्व नहीं होता। यदि गति नहीं होती, तो ऊर्जा या दृष्टिगत वस्तुओं का अस्तित्व नहीं होता। यदि दृष्टिगत वस्तुएं नहीं होती, तो ऐसा होता क्योंकि ऊर्जा या गति का अस्तित्व नहीं होता।

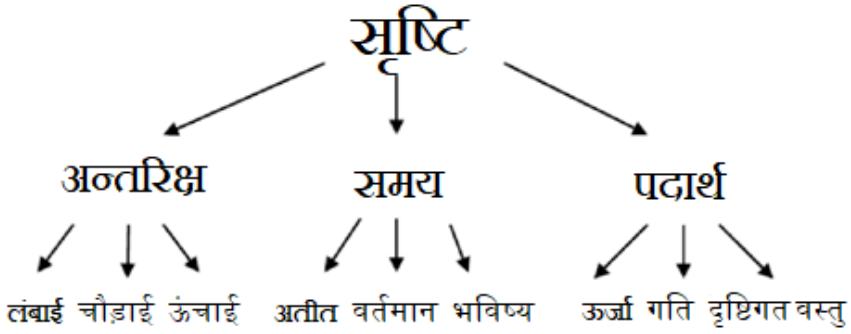

ऐसा लगता है कि सृष्टि एक में तीन के रूप में बनी हुई है। शायद परमेश्वर ने जानबूझकर सृष्टि को एक ऐसा आकार दिया जो परमेश्वर की प्रकृति को दर्शाता है।

तो बाइबल त्रिएकता के बारे में क्या सिखाती है? यह स्पष्ट रूप से *तीन* अलग व्यक्तियों के अस्तित्व की पुष्टि करती है, जिन्हें पूरी सृष्टि में *एक* परमेश्वर के रूप में पहचाना जाता है। यह एक विरोधाभास नहीं है क्योंकि हम यह नहीं कह रहे हैं कि परमेश्वर एक और तीन व्यक्ति भी हैं। न ही हम यह कह रहे हैं कि परमेश्वर एक और तीन परमेश्वर हैं। हम कह रहे हैं कि परमेश्वर मूलतत्व में एक है और तीन व्यक्तियों के रूप में है। जैसे कि सृष्टि अंतराल, समय और पदार्थ के रूप में मौजूद है, वैसे ही परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में भी मौजूद है।

त्रिएकता के लिए बाइबल का प्रमाण

वाक्य का आधार 1: केवल एक ही परमेश्वर है।

> "हे इस्राएल, सुन, हमारा परमेश्वर यहोवा एक ही प्रभु है" (व्यवस्थाविवरण 6:4)।
>
> "क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूं, और कोई दूसरा नहीं है; *मैं* ईश्वर हूं, और मेरे समान कोई नहीं है" (यशायाह 46:9)।

वाक्य का आधार 2: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सभी को पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के रूप में पहचाना जाता है।

> "पिता परमेश्वर" (गलातियों 1:1)।
>
> "वचन परमेश्वर था। वचन देहधारी हुआ" (यूहन्ना 1:1, 14)।
>
> "शैतान को तूने अपने मन में यह बात क्यों डालने दी कि तूने पवित्र आत्मा से झूठ बोला? तूने मनुष्यों से नहीं, परमेश्वर से झूठ बोला है।" (प्रेरितों के काम 5:3-4)।

वाक्य का आधार 3: ये तीन एक-दूसरे से और अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में दुनिया से संबंध रखते हैं।

?हम कैसे जान सकते हैं कि वे तीन व्यक्ति हैं और अलग-अलग भूमिकाओं में सिर्फ एक नहीं हैं?

मरकुस 1:10-11 में, यीशु ने बपतिस्मा लेता है, पवित्र आत्मा कबूतर की तरह उतरता है, और स्वर्ग से एक आवाज़ आती है, "तू मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अति प्रसन्न हूं।" हम यहां देखते हैं कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक ही व्यक्ति नहीं हो सकते; वे एक ही समय में विभिन्न भूमिकाएँ निभा रहे हैं।

अपनी सेवा के अंत में, यीशु ने कहा कि वह पिता से हमें "*एक और* सहायक" भेजने के लिए कहेगा - पवित्र आत्मा (यूहन्ना 15:26)। क्या आप इस अनुरोध में शामिल तीन अलग-अलग व्यक्तियों को देखते हैं?

अगर आप यूहन्ना 14-17 से पढ़ते हैं, तो आप पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच बातचीत के कई संदर्भ पाएंगे।

निष्कर्ष: बाइबल में एक सच्चे परमेश्वर ने स्वयं को तीन अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में प्रकट किया है: पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा। परमेश्वर स्वभाव में एक ही है, लेकिन व्यक्तियों में तीन है।

हालांकि *त्रिएकता* शब्द बाइबल में नहीं लिखा है लेकिन त्रिएकता की शिक्षा स्पष्ट पवित्रशास्त्र के आधार पर आधारित है।

यह बाइबल की शिक्षा प्रेरितों के समय से कलीसिया द्वारा सिखायी जा रही है। नीचे एक आरेख है जिसका कलीसिया ने सदियों से त्रिएकता का वर्णन करने के लिए उपयोग किया है।

त्रिएकता का पारंपरिक आरेख

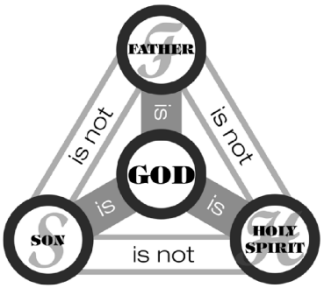

Father = पिता, God = परमेश्वर, Son = पुत्र, Holy Spirit = पवित्र आत्मा, is = है, is not = नहीं है

त्रिएकता की शिक्षा आवश्यक है।

? एक व्यक्ति त्रिएकता में विश्वास करता है या नहीं, इससे क्या फर्क पड़ता है?

त्रिएकता की शिक्षा मुख्य शिक्षाओं का आधार है जो सुसमाचार के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए, उनमें से कुछ जो त्रिएकता से इनकार करते हैं, वे इस बात से भी इनकार करते हैं कि यीशु परमेश्वर है। लेकिन अगर आप जिस यीशु पर विश्वास करते हैं वह परमेश्वर नहीं है, तो आपके पास यीशु नहीं है जो आपको बचा सकता है!

"हमारे उद्धार की उत्पत्ति और छुटकारे का कारण परमेश्वर पिता का प्रेम है जिसने हमें अपने पुत्र के लहू के माध्यम से छुड़ाने के लिए योजना बनाई; अनुग्रहकारी पुत्र जिसने खुशी से हमारे श्राप को अपने ऊपर ले लिया, हमें अपनी अशीष और गुण प्रदान करता है; और पवित्र आत्मा जो पिता के प्रेम और पुत्र के अनुग्रह को हमारे हृदय में पहुँचता है"(John Wesley, “Letter to William LawÐ- " William Law के लिए पत्र")।

फिर भी, अगर हम इनकार करते हैं कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा अलग हैं, तो हम परमेश्वर का उसके प्राकृतिक व्यक्तिगत या संबंधपरक विशेषताओं से इनकार करते हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर अनन्तकाल से एक प्रेम करने वाला परमेश्वर नहीं होता यदि उसे किसी से प्रेम करने के लिए उसकी रचना करने तक इंतज़ार करना होता। लेकिन अगर परमेश्वर एक से अधिक व्यक्ति हैं, तो ये व्यक्ति एक दूसरे से अनन्तकाल से प्रेम कर सकते थे। इस संबंधपरक परमेश्वर (जो आत्मनिर्धारित प्रेम में मौजूद है) में विश्वास करना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विश्वास हमें प्रभावित करता है कि किस तरह से हम एक दूसरे से संबंध रखते हैं, और परमेश्वर से भी ।

शायद सबसे अहम हिस्सा यह है कि हमें केवल परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। जो लोग त्रिएकता से इनकार करते हैं, वे आमतौरपर इनकार करते हैं कि यीशु और पवित्र आत्मा ईश्वर हैं, और उनकी आराधना नहीं करते। सबसे बड़ी गलती जो एक व्यक्ति कर सकता है यह है कि वह उसी की आराधना करता है जो परमेश्वर नहीं है, या उसी की आराधना करने में विफल रहता है जो परमेश्वर है।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा *वे व्यक्ति* हैं जो एक दूसरे से संबंध रखते हैं।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, प्रत्येक का व्यक्तित्व है और हमेशा से एक-दूसरे से व्यक्तिगत संबंध रखते हैं। हम उन्हें व्यक्ति कहते हैं क्योंकि वे एक दूसरे से संबंध रखते हैं।। वे एक दूसरे से प्रेम करते हैं, एक दूसरे को प्रदान करते हैं, एक दूसरे से बात करते हैं, और एक दूसरे के लिए जीते हैं। इससे पता चलता है कि वे *व्यक्ति हैं।*

त्रिएकता की संरचना

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हमेशा से संबंधों की एक संरचना में मौजूद हैं। पिता प्रमुख है, फिर पुत्र है, फिर आत्मा है। इन तीन अनन्त और समान व्यक्तियों के पास अपने संबंधों के आधार पर अधिकार हैं। अधिकार की यह संरचना परिवार और कलीसिया में प्रतिबिंबित होती है। त्रिएकता के सदस्यों की तरह, परिवार के सभी सदस्यों का और कलीसिया के सदस्यों का बराबर मूल्य होता है, लेकिन सभी के पास अधिकार का एक ही पद नहीं होता।

अपने पिता के साथ पुत्र का संबंध

पुत्र का पिता से क्या संबंध है? यीशु ने कहा कि पिता ने उसे पुत्र के तौर पर "अपने आप में जीवन रखने" का अधिकार दिया है, "जैसे पिता में जीवन है।"[74] अनंत काल से पुत्र पिता का "एकमात्र पुत्र है।"[75] पुत्र परमेश्वर की तरह सदा से स्वयं-अस्तित्व में है, और पिता के समान एक ही प्रकृति का है, फिर भी उसका अस्तित्व पिता से है। अनन्तकाल से, पुत्र का

[74] यूहन्ना 5:26।

[75] यूहन्ना 3:16।

पिता से पुत्र के रूप में संबंध है, और पिता का पुत्र से एक पिता के रूप में संबंध है, हालांकि शारीरिक रूप से नहीं।

चूंकि पुत्र का पिता से पुत्र के रूप में संबंध है, इसलिए वह पिता के प्रति सदा के लिए अधीन है। वह एक अधीनस्थ भूमिका में कार्य करता है। यही कारण है कि यीशु ने कहा, "मेरा पिता मुझसे बड़ा है।"[76]

हालांकि पिता की तुलना में यीशु का अधिकार कम है, मगर वह अपने स्वभाव में पिता के समान है। पिता की तरह उसकी उसी स्तर पर आराधना और महिमा की जानी चाहिए। यीशु ने कहा कि सबको उसका उसी प्रकार आदर करना चाहिए "जिस प्रकार वे पिता का आदर करते हैं।"[77]

पिता और पुत्र के साथ पवित्र आत्मा का संबंध

यूहन्ना 15:26 में, यीशु ने कहा था कि वह हमारे लिए पवित्र आत्मा *भेजेगा*, "जो पिता से *निकलता* है।" हालांकि आत्मा पिता से उत्पन्न होता है, वह पिता और पुत्र के बराबर है, और उसका भी समान रूप से आदर किया जाना चाहिए। ध्यान रखिए कि एक दूसरे के साथ प्रेम के संबंध में रहने वाले तीनों व्यक्तियों के बीच में निकलना और भेजना हो रहा है।

हीनता के बिना अधीनता

यीशु ने कहा, "मैं और पिता एक हैं," अपने समान स्वरूपों के बारे में बात करते हुए, और उसने यह भी कहा कि उसने हमेशा पिता की आज्ञा मानी है।

त्रिएकता में अधिकार और अधीनता का मतलब यह नहीं है कि एक सदस्य दूसरे से ज्यादा महत्वपूर्ण है। अधिकार का यह मतलब नहीं है कि स्वभाव में एक सदस्य दूसरे की तुलना में बड़ा है।

हम मानव जीवन में अधिकार और समानता के उदाहरण देखते हैं। परिवार के सदस्य मनुष्य के रूप में सभी समान हैं, और वे सभी परमेश्वर के स्वरूप में समान रूप से मूल्यवान

[76] यूहन्ना 14:28।

[77] यूहन्ना 5:23।

व्यक्ति हैं, फिर भी परिवार के कार्य के लिए अधिकार महत्वपूर्ण है। यही बात मानव नेतृत्व के अन्य पदों के लिए कही जा सकती है।

परमेश्वर की एकता की रक्षा

त्रिएकता के तीनों व्यक्तियों को अलग व्यक्तियों के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। उनके अस्तित्व की एकता का मतलब है कि वे एक ही सार के हैं *और* यह कि तीनों व्यक्ति एक दूसरे में विलीन हैं, एक दूसरे में बसते हैं, और एक दूसरे के साथ अपने गुणों को साझा करते हैं। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा इस तरह से पारस्परिक अन्तर्निवास का अनुभव करते हैं जो मनुष्य नहीं कर पाता।

हम मनुष्य, व्यक्ति *और* अलग-अलग प्राणी हैं। परमेश्वर तीन व्यक्ति हैं, फिर भी केवल एक ही व्यक्ति है। बाइबल में परमेश्वर की एकता के अवधारणा की रक्षा करने के लिए, हम त्रिएकता के सदस्यों को अलग नहीं कहते, बल्कि अलग-अलग रूप में कहते हैं। हम उनको लोग नहीं कहते, बल्कि व्यक्ति कहते हैं।

हम परमेश्वर के व्यक्तित्व और संबंधों को प्रतिबिंबित करते हैं

परमेश्वर ने हमें अपनी छवि में व्यक्तियों के रूप में बनाया है - हम में एक दूसरे से और परमेश्वर के साथ संबंध रखने की क्षमता है। रिश्ते के उद्देश्य के लिए हमारे पास मन, इच्छा और भावनाएं हैं।

व्यक्तिगत रूप से हम अधूरे हैं

जब परमेश्वर ने आदम को बनाया, उसने कहा, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं है।"[78] फिर उसने हव्वा को बनाया। आदम हव्वा के बिना अधूरा था, क्योंकि उसके बिना, उसके पास किसी अन्य इंसान का साथ नहीं था। वास्तव में, एक पद्य से पता चलता है कि आदम और हव्वा में *एकसाथ* परमेश्वर की छवि दिखाई दी: “तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।”[79] आदम और हव्वा के बीच

[78] उत्पत्ति 2:18।

[79] उत्पत्ति 1:27।

के रिश्ते के बारे में कुछ ऐसा प्रतीत होता है, जिससे उन्होंने एक साथ मिलकर परमेश्वर की छवि को इतना प्रतिबिंबित किया जितना आदम अकेला नहीं कर सकता था। इस बारे में सोचिए कि हमारे लिए इसका क्या अर्थ है। हम भी पूरे व्यक्ति के रूप में कार्य नहीं कर रहे हैं जब तक कि हम दूसरों के साथ संबंध नहीं रखते हैं, जैसे त्रिएकता के व्यक्ति हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें शादी करनी है (स्वर्ग में, कोई भी शादी नहीं करेगा, फिर भी हम व्यक्ति होंगे), लेकिन हमें दूसरों के साथ संगती करना आवश्यक है।

ऐसा संबंध ताकि परमेश्वर की छवि प्रतिबिंबित हो

परमेश्वर के स्वभाव और कलीसिया के स्वभाव के बीच एक अद्भुत तुलना है। परमेश्वर और कलीसिया दोनों के भीतर, एकता और विविधता है। 1 कुरन्थियों 12 के अनुसार, मसीह की देह अलग-अलग अंगो से बनी एक ही है जिनका एक ही उद्देश्य है। क्या आप देख सकते हैं कि मसीह का शरीर कैसे परमेश्वर की छवि को दर्शाता है? प्रेरित पौलुस ने कलीसिया के सभी विभिन्न सदस्यों से यह अपेक्षा की कि वे मसीह में एक ही व्यक्ति के रूप में बढ़ें। पौलुस ने प्रार्थना की कि हम:

> वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं। जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण से उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।[80]

इस पद का मतलब है कि हम सभी को मसीह की एकता में एक दूसरे के साथ मिलकर बढ़ने के लिए अपने उपहारों और क्षमताओं का उपयोग करना चाहिए। परमेश्वर की इच्छा यह है कि हम सब उसकी संबंधपरक प्रकृति को व्यक्तिगत रूप के अनुग्रह में बढ़ने के लिए एक दूसरे की मदद करते हुए प्रतिबिंबित करें। अन्य विश्वासियों के साथ करीबी प्रतिबद्ध संगती में आत्मिक विकास समुदाय में होता है। यह परमेश्वर के सामाजिक स्वभाव को दर्शाता है।

यदि त्रिएकता के सदस्य अनंतकाल से एक-दूसरे के साथ आत्म-समर्पण के प्रेम में रहे हैं, तो हमें एक दूसरे के साथ प्रेममय संबंध में रहना चाहिए। हमें परमेश्वर की छवि में सामाजिक, संबंधपरक प्राणियों के रूप में बनाया गया है, इसलिए हमें अपने आप के बजाय दूसरों पर ध्यान देना चाहिए। हमें हमारे व्यक्तित्व से ज्यादा समुदाय पर ज़ोर देना चाहिए।

---

[80] इफिसियों 4:15-16।

परमेश्वर हमें आशीष देगा जैसे जैसे हम दूसरों के साथ अपने संबंधों में उसकी त्रिएक छवि को प्रतिबिंबित करने का प्रयास करेंगे।

त्रिएकतावादी आराधना

त्रिएकतावादी आराधना यह मानती है कि हम आत्मा की सहायता से और पुत्र के प्रायश्चित के काम के आधार पर पिता के पास आते हैं। त्रिएकतावादियों के रूप में, हमें पुत्र के माध्यम से, आत्मा में, पिता से प्रार्थना करनी है।

आराधना का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य हमारे लिए उस प्रेम संबंध में प्रवेश करना है जो त्रिएकता के सदस्यों का एक-दूसरे के लिए है। पिता और पुत्र के बीच के प्रेम के बारे में सोचिए। जो मसीह ने क्रूस पर किया, उसके बारे में सोचिए ताकि हम उस प्रेम को अनुभव कर सकें। पिता और पुत्र की एक-दूसरे के साथ अद्भुत सहभागिता हैं, और बेटे के प्रायश्चित के कार्य के कारण, आत्मा हमें उस उत्कट प्रेम के संबंध में भाग लेने में मदद करने में सक्षम है।

त्रिएकतावादियों के रूप में, हम न केवल पिता से, पुत्र के द्वारा आत्मा में प्रार्थना करते हैं, बल्कि हम पिता, पुत्र और आत्मा से भी प्रार्थना करते हैं। त्रिएकता के प्रत्येक सदस्य की अराधना की जानी चाहिए, मौखिक रूप से महिमा की जानी चाहिए, क्योंकि वे सभी ईश्वर हैं और उन्हें एक समान सम्मानित किया जाना चाहिए। त्रिएकतावादी आराधना से त्रिएकता के प्रत्येक व्यक्ति की महिमा होती है, यह त्रिएकता के हर सदस्य की भूमिका को पहचानती है जो प्रत्येक सदस्य द्वारा हमारे उद्धार के लिए निभायी जाती है।

सर्वशक्तिमान और अनन्त परमेश्वर,
तूने हमें यानि अपने दासों को त्रिएकता की महिमा को स्वीकार करने और दिव्य महायाजक
की
सामर्थ्य में एकता की आराधना
करने के लिए सच्चे
विश्वास की प्रतिज्ञा से अनुग्रह
प्रदान किया है।
हमें इस विश्वास में दृढ़ रख,
ताकि हम हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा,
सब शत्रुओं से सदा के लिए सुरक्षित रहें।

जो आपके और पवित्र आत्मा के साथ अब और सदा के लिए रहता है और
एक ही परमेश्वर है। आमीन।[81]

निम्नलिखित खंड की जानकारी कक्षा के किसी भी सदस्य द्वारा समझाया जा सकता है।

वे त्रुटियां जिनसे आपको बचना चाहिए: त्रिएकता के विषय में सिद्धांत

हम नहीं समझते कि एक बीज मिट्टी में क्यों बढ़ता है, या मस्तिष्क कैसे काम करता है, या ताकतें सितारों को उनके स्थानों पर कैसे रखती हैं। वैज्ञानिक देखते हैं कि क्या होता है, लेकिन वे यह नहीं समझा सकते कि यह क्यों और कैसे होता है। त्रिएकता के सिद्धांत को अस्वीकार करना किसी व्यक्ति के लिए तर्कविरुद्ध नहीं है क्योंकि वह इसको पूरी तौर से नहीं समझा सकता। परमेश्वर के बारे में हर सिद्धांत हमारे स्पष्टीकरण से परे है। उदाहरण के लिए, कोई भी यह नहीं समझा सकता कि कैसे परमेश्वर हर जगह हो सकता है और सब कुछ जान सकता है। त्रिएकता के तथ्य तर्क विरुद्ध नहीं हैं, लेकिन वे मानव अनुभवों और सीमाओं से परे हैं। समुद्र में एक मछली, भले ही बुद्धिमान हो, वह कभी भी यह नहीं समझ पाएगी कि मनुष्य बनना कैसा होता है, भले ही उसे समझाया गया हो।

त्रिएकता का तथ्य यह है कि एक ही परमेश्वर है जो तीन व्यक्तियों की समान प्रकृति में मौजूद है और एक ही ईश्वर है। लोगों ने इसे समझाने की कोशिश की है, लेकिन वे अक्सर एक महत्वपूर्ण हिस्से को छोड़ देते हैं। नीचे त्रुटियों के कुछ उदाहरण हैं। प्रत्येक त्रुटि को एक नाम दिया गया है, लेकिन उन्हें कई अलग-अलग नामों के तहत सिखाया गया है।

मॉडलवाद एक विचार है कि परमेश्वर वास्तव में एक व्यक्ति है जिसने विभिन्न भूमिकाएं निभायी हैं। इस सिद्धांत में, स्वर्ग में परमेश्वर पिता था, पृथ्वी पर वह यीशु था, और अब वह हमारे साथ पवित्र आत्मा के रूप में बोलता है। लेकिन यूहन्ना 14-16 के अध्यायों में, यीशु के शब्द खुद के, पिता और पवित्र आत्मा के बीच बातचीत का वर्णन करते हैं। यदि वे तीन अलग-अलग व्यक्ति नहीं थे तो यह विवरण समझ में नहीं आता।

त्रिमितवाद एक विचार है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा अलग-अलग प्राणी हैं। इस सिद्धांत में, उनके स्वभाव में भी अंतर हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, शायद पिता न्याय

[81] *सामान्य प्रार्थना की पुस्तक।*

करना चाहता हो, लेकिन बेटा दया करना चाहता हो। यह विचार बाइबल के सिद्धांत के विपरीत है कि केवल एक ही परमेश्वर है।

अधीनतावाद एक विचार है कि त्रिएकता में एक व्यक्ति दूसरे से कमज़ोर है। एक व्यक्ति जो इस विचार को मानता है वह सोचता है कि पिता परमेश्वर है, और पुत्र और पवित्र आत्मा छोटे प्राणी हैं। वह आत्मा के व्यक्तित्व से इनकार कर सकता है, और बेटे को एक विशेष व्यक्ति के रूप में समझ सकता हैं जिसे परमेश्वर ने इस्तेमाल किया था। यह त्रुटि लोगों को परमेश्वर के रूप में पुत्र और पवित्र आत्मा की आराधना नहीं करने देती, और एक गलत सुसमाचार को जन्म दे सकती है।

छात्रों को "विश्वास का वक्तव्य" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

विश्वास का वक्तव्य

परमेश्वर त्रिएक है, तीन व्यक्तियों में एक परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। ये तीनों की अलग-अलग भूमिकाएं हैं, लेकिन स्वभाव में एक से हैं और ईश्वरीय गुणों में बराबर हैं और आराधना के योग्य हैं।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले, उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

इब्रानियों 1:1-3, 8, कुलुस्सियों 1:12-19, इफिसियों 1:17-23, यूहन्ना 15:26, यूहन्ना 17:1-5

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब असाइनमेंट को पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

अनुशंसित पाठन

Morey, Robert। *The Trinity: (त्रिएकता) Evidence and Issues (साक्ष्य और मुद्दे)।* Iowa Falls, IA: Word Bible Publishers, 1996.

White, James. *The Forgotten Trinity: (भुलाई हुई त्रिएकता) Recovering the Heart of Christian Belief. (मसीह विश्वास के दिल को पुनर्प्राप्त करना)* Minneapolis: Bethany House Publishers, 1998.

त्रिएकता

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. सृष्टि कैसे परमेश्वर की प्रकृति का वर्णन करती है?
2. त्रिएकता के सिद्धांत के लिए बाइबल से तीन आधारित वाक्य कौन-से हैं?
3. त्रिएकता के भीतरी संबंधों की संरचना क्या है?
4. वो कौनसे मानव संबंध हैं जिन्हें त्रिएकता के संबंधों को प्रतिबिंबित करना चाहिए?
5. एक त्रिएकतावादी के रूप में आराधना करने का क्या मतलब है?
6. मॉडलवाद की त्रुटि क्या है?
7. त्रिमितवाद की त्रुटि क्या है?
8. अधीनतावाद की त्रुटि क्या है?

पाठ 4

मानवता

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) हम कैसे जानते हैं कि मानवता में परमेश्वर की छवि भौतिक समानता नहीं है।
(2) मानवता में परमेश्वर की छवि की आठ विशेषताएँ।
(3) कि लोग विशेष रूप से परमेश्वर के साथ संबंध के लिए बनाए गए हैं।
(4) वह मायना जिसमें लोगों के पास स्वतंत्र इच्छा है।
(5) कि लोगों का असीम मूल्य है जो सांसारिक जीवन में व्यावहारिक मूल्य से परे है।
(6) मानवता के बारे में मसीह धारणाओं का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक यह है कि विद्यार्थी समझ सके कि वह परमेश्वर के साथ संबंध के बिना वह एक व्यक्ति के रूप में पूर्ण नहीं हो सकता।

"मानवता"

मुद्रित व्याख्यान

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद, समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन को देखिए।

भजन संहिता 8 को एक साथ पढ़िए। यह लेखांश हमें मनुष्य के विषय में क्या बताता है?

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक । देखते हैं तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र संदर्भ ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

? ऐसी क्या चीजें हैं जो दुनिया के हर व्यक्ति में समान हैं?

आइये सोचें कि हमें हमारी पहचान किस चीज से मिलती है। इंसान होने का वास्तव में क्या मतलब है?

शुरुआती स्थान उत्पत्ति 1:26 है। वहाँ हम पढ़ते हैं: "फिर परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपनी छवि में बनाएँगे।'" जाहिर है मानव परिवार का हिस्सा होने के बारे में कुछ विशेष है।

हमारे स्वभाव के बारे में कुछ ऐसा है जो परमेश्वर की तरह है। हम परमेश्वर नहीं हैं, लेकिन कुछ ऐसी चीज है जो हमें बाकी जानवरों से अलग करती है और हमें अद्वितीय बनाती है। भजन संहिता 8:5 में, लेखक को खुशी है कि हमें "स्वर्गदूतों से थोड़ा कम" बनाया गया है और "महिमा और सम्मान के साथ ताज पहनाया गया है।"

परमेश्वर ने इंसानों को पृथ्वी और उन जीवों का प्रबंधन करने की विशेष जिम्मेदारी सौंपी जो उस पर रहते थे। •[82] लोगों को जीवित प्रजातियों के नुकसान से बचने के लिए धरती का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए, संसाधनों का उपयोग समझदारी से करना चाहिए, और भविष्य की पीढ़ियों के लिए धरती को अच्छी स्थिति में रखना चाहिए।

क्रमिक विकास के सिद्धांत के बजाय मानवता की यह उच्च दृष्टि हमारे आत्म-सम्मान के लिए निश्चित रूप से बेहतर है! क्रमिक विकास में मानव जीवन के लिए कोई विशेष महत्व नहीं है, कोई उद्देश्य नहीं है, कोई अर्थ नहीं है, मानव होने के बारे में कुछ भी खास नहीं है।

कुछ प्राचीन मिथकों के अनुसार, मनुष्य कोई अप्रत्याशित घटना से बने, जिनका कोई उद्देश्य नहीं है और न ही उनका कोई बनानेवाला है जो उनसे प्रेम कर सकता है।

लेकिन पवित्रशास्त्र सिखाता है कि हम "परमेश्वर की छवि" में एक विशेष रचना हैं। इसका क्या मतलब है?

? हम कैसे जानते हैं कि मनुष्यों में परमेश्वर की छवि का अर्थ शारीरिक रूप से नहीं है?

[82] उत्पत्ति 1:26, भजन संहिता 8:5-6।

मनुष्य में परमेश्वर की छवि का अर्थ शारीरिक रूप से नहीं है (1) परमेश्वर एक आत्मा है। सुलैमान ने महसूस किया कि परमेश्वर पूरे स्वर्ग और पृथ्वी में भी नहीं समा सकता।[83] परमेश्वर अपने आप को कोई भी रूप में जिसमे वह चाहे प्रकट कर सकता है, लेकिन ऐसा कोई रूप नहीं है जो हम कह सकते हैं कि परमेश्वर की तरह दिखता है। यही कारण है कि हमें आराधना करने के लिए परमेश्वर की छवियाँ नहीं बनानी चाहिए। यहां तक कि (2) बाइबल में उसकी मनुष्य की तरह दिखने वाली छवियां बनाना मूर्तिपूजा कहलाता है।[84]

(3) मनुष्य को शारीरिक रूप से पृथ्वी पर जीवन के लिए बनाया गया है, चलने के लिए पैरों के साथ, चीजों को स्थानांतरित करने के लिए हाथ, और दृष्टि की इंद्रियों और सुनने के लिए अनुभूति के साथ, परमेश्वर ने हमें एक ऐसे रूप में बनाया है जो हमें धरती पर जीवन जीने के लिए तैयार करता है। लेकिन परमेश्वर पूरी सृष्टि में वास करता है, अपने वचन से चीजें बना और स्थानांतरित कर सकता है, और हमारी जैसी उसकी कोई सीमाएं नहीं है। ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं है कि उसका एक मानवीय भौतिक रूप है।

परमेश्वर के पुत्र ने पूरी तरह से मनुष्य का रूप धारण किया, जो मानवता का सबसे बड़ा सम्मान है जिसकी कल्पना की जा सकती है।

धर्मशास्त्रियों ने बहुत कुछ सोचा है कि इसका क्या अर्थ है कि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में है, और निम्न गुणों के बारे में सबसे अधिक सहमत हैं।

परमेश्वर की छवि के तत्व जो मानवता को दिए गये हैं।

? मनुष्य की कुछ विशिष्ट विशेषताएं कौनसी हैं जो परमेश्वर की छवि को प्रतिबिंबित करती हैं?

हमारे पास एक **रचनात्मक वृत्ति** है जो हमारे भीतर परमेश्वर की छवि से विकसित होती है। हमारे सृष्टिकर्ता ने हमें रचनात्मक बनाया है! कभी-कभी जानवरों को चिह्न बनाने लिए प्रशिक्षित किया जाता है। जिन्हें लोग कला कहते हैं। लेकिन यह उस व्यक्ति द्वारा उत्पादित कला से बहुत अलग है जो एक विचार व्यक्त करता है। गुफाओं पर प्राचीन चित्र

[83] 1 राजा 8:27।

[84] रोमियों 1:23।

पाए गए हैं। हमें उन लोगों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, जिन्होंने उन्हें बनाया, लेकिन कोई भी संदेह नहीं है कि उन्हें लोगों द्वारा बनाया गया था और जानवरों द्वारा नहीं।

रचनात्मकता संगीत में भी प्रकट है। संगीत में हमारे विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने की एक अद्भुत क्षमता है। संगीत के माध्यम से विचारों को व्यक्त करने की क्षमता हमारे भीतर परमेश्वर की इस छवि से आती है।

सोचने की क्षमता एक और "ईश्वर-समान" क्षमता है। बेशक जानवरों का दिमाग भी हैं, लेकिन हम यह बता सकते हैं कि जानवरों की "मस्तिष्क की गतिविधि" बुनियादी वृत्ति और अंतर्ज्ञान के स्तर से ऊपर नहीं बढ़ती है। केवल इंसान विश्लेषण, मूल्यांकन, अनुमान और परावर्तित करने और फिर प्रेरक रूप से संचार करने में सक्षम हैं।

न केवल हम सोच सकते हैं पर हम सोचने के बारे में सोच भी सकते हैं। हम सोच की प्रक्रियाओं का विश्लेषण कर सकते हैं। न केवल हम तर्कसंगत सोच सकते हैं, *हम तर्क के बारे में भी सोच सकते हैं।*

मनुष्यों में **एक दूसरे से बात करने की क्षमता है**। यह भाषा के उपयोग के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जहां विचारों को ध्वनि या प्रतीकों में डाला जाता है जो अन्य लोग समझते हैं। पशु जैसे कुत्ते और पक्षी ध्वनियों के माध्यम से "विचार व्यक्त" कर सकते हैं, लेकिन मानव भाषा के जैसी जटिलता जानवरों के बीच नहीं पायी जाती। पशुओं के पास दूसरों को डराने, क्षेत्र का दावा करने, या भोजन साझा करने के तरीके हैं, लेकिन वे जीवन के अर्थ के बारे में चर्चा नहीं कर सकते।

संप्रेषण की क्षमता सोचने और तर्क करने की क्षमता पर निर्भर करती है। पशु शब्द नहीं बोल सकते, लेकिन अगर वे बोल भी सकें, तो उनके पास बोलने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं होगा।

मनुष्य का एक **सामाजिक स्वभाव** है। हमें अन्य लोगों के साथ बातचीत करने, प्रतिबद्धताएं

मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में पवित्र बनाया गया था जैसा उसका बनानेवाला पवित्र है। जैसे परमेश्वर प्रेम है उसी प्रकार मनुष्य, प्रेम में रहते हुए, परमेश्वर में रहता था और परमेश्वर उसमें रहता था। वह शुद्ध था क्योंकि परमेश्वर शुद्ध है, पाप के हर दोष से। उसमें कोई बुराई नहीं थी, अंदरूनी और बाहरी रूप से पापहीन था। वह "प्रभु अपने परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, अपनी पूरी बुद्धि, प्राण और सामर्थ्य से प्रेम करता था" (John Wesley, उपदेश में “Justification by FaithÐ- "न्याय दवारा औचित्य")।

करने और एक दूसरे पर निर्भर रहने के लिए बनाया गया है। हम जीवन एक दूसरे पर निर्भर होकर शुरू करते हैं, और एक बच्चे को वयस्क बनने में कई सालों लगते हैं। इसका कारण यह है कि संबंध परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण हैं। परमेश्वर ने मानव जीवन भी बनाया है ताकि लोग मिलकर काम करें और अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए रिश्ते बनाए रखें। यहां तक कि अगर कोई व्यक्ति किसी की मदद के बिना भोजन और आश्रय जैसे चीजें प्राप्त कर सके, तो उसकी महत्वपूर्ण ज़रूरतें होंगी जो केवल दूसरों के साथ संबंध बनाये रखने से पूरी होती हैं। सामाजिक स्वभाव परमेश्वर के स्वभाव का प्रतिबिंब है। परमेश्वर त्रिएक है, और अनन्तकाल तक स्वभाव से संबंध में है।

मानव संबंधों में कई समस्याएं हैं। समस्याओं के कारण, कुछ लोग सोचते हैं कि उन्हें और अधिक स्वतंत्र होने की आवश्यकता है। वे किसी पर निर्भर हुए बिना जीने में सक्षम होना चाहते हैं। अकेले जीना वास्तव में समाधान नहीं है और वह जीवन नहीं है जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किया। इसके बजाय, उसने हमें संबंधों में रहने के सिद्धांत दिए, और समस्याएं आती हैं जब हम परमेश्वर की योजना का पालन नहीं करते हैं।

हमारे पास **नैतिक समझ** है जो हमारे स्वभाव का हिस्सा है। हमारे अंदर कुछ ऐसा है जो कहता है कि कुछ कार्य सही हैं और कुछ गलत हैं। •[85] यह हमें बताता है कि कब इच्छा का पालन करना सही है और जब हमें नहीं करना चाहिए। आदम और हव्वा को पवित्र और पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा का पालन करने के लिए बनाया गया था।

इसलिए कि पूरी मानवता पाप में पड़ गयी है और उस बुनियादी नैतिक धारणा को क्षति पहुंची, यह पूरी तरह से सटीक नहीं है, लेकिन अभी भी हम में से हर एक में सही और गलत की अवधारणाओं को समझने की क्षमता है।

क्योंकि हमारे पास नैतिक समझ है, हमारे पास सही करने के कर्तव्य की समझ है, और यदि हम पाप करते हैं तो दोषी हैं। हम पशुओं के समान नहीं हैं, जो अपराध की भावना के बिना अपनी प्राकृतिक प्रवृत्ति का पालन करते हैं।

स्वतंत्र इच्छा, या चुनने की क्षमता, मनुष्य की विशेषता है। इसके विपरीत, जानवरों के विकल्प क्षणिक आवेग और सहज प्रवृत्ति के स्तर पर हैं। पशु सावधानीपूर्वक, विचार-

[85] रोमियों 1:20, 2:15।

विमर्श के फैसले नहीं करते हैं जो नैतिकता या उनके कार्यों के व्यावहारिक परिणामों को नहीं माप सकते। मनुष्य के पास अर्थपूर्ण, जीवन-फेरबदल के विकल्प बनाने की क्षमता है। •[86]

?स्वतंत्रता क्यों मानवता का एक महत्वपूर्ण पहलू है?

इसलिए कि हम वास्तविक विकल्प बनाते हैं, हम परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं। वह पाप का न्याय करेगा और धार्मिकता के लिए इनाम देगा।[87]

क्योंकि हम एक पापी प्रकृति के साथ पैदा हुए हैं, इसलिए हम स्वाभाविक रूप से इस तरह से अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग नहीं करते हैं जिससे कि ईश्वर का सम्मान किया जाता है। एक व्यक्ति स्वभाव से "पाप का गुलाम है," •[88] सही करने में असमर्थ है, परन्तु परमेश्वर की कृपा प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचती है, जो उसे सुसमाचार के प्रति जवाब देने की इच्छा और क्षमता प्रदान करती है। यही कारण है कि एक व्यक्ति पश्चाताप करने और सुसमाचार पर विश्वास करने का चुनाव कर सकता है। •[89]

अमरता, परमेश्वर की छवि का एक महत्वपूर्ण गुण है। एक समय था जब हमारा अस्तित्व नहीं था, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति उसके पैदा होने के बाद से उस व्यक्ति का सदा के लिए अस्तित्व होगा। हम न केवल भौतिक प्राणी हैं, बल्कि आत्मा भी हैं जो हमेशा के लिए जीवित रहेंगी, और यहां तक कि हमारे शरीर भी एक अनन्त रूप में पुनर्जीवित होंगे। •[90] परमेश्वर ने हमें एक अनन्त उद्देश्य के लिए बनाया है। अमरता हमारे चुनावों को सनातन रूप से महत्वपूर्ण बनाती है क्योंकि हम स्वर्ग या नरक में हमेशा के लिए जीवित रहेंगे।

प्रेम की क्षमता परमेश्वर की छवि का हिस्सा है। अन्य विशेषताएं इस के लिए महत्वपूर्ण हैं। पशुओं में, रिश्ते बहुत सीमित है, और अपने सहज-ज्ञान से ही चलते हैं। प्रेम का अर्थ कोई ज़्यादा नहीं होता, अगर हमारे पास संवाद करने की क्षमता नहीं होती, हमारे प्रेम करने वालों की प्रतिबद्धता और उनको प्रतिबद्ध करने की योग्यता और दूसरों से प्यार होने की समझने की योग्यता नहीं होती।

---

[86] यहोशू 24:15।

[87] प्रकाशितवाक्य 20:12-13।

[88] रोमियों 6:16-17, इफिसियों 2:1-3।

[89] मरकुस 1:15।

[90] 1 कुरिन्थियों 15:16-22, 52-54।

मानव प्रेम एक रिश्ते से खुशी में व्यक्त किया जाता है, जैसे वादे करना और उनको निभाना, त्याग करना, सेवा करना और क्षमा करना। ये सब भी परमेश्वर के प्रेम के भाव हैं।

एक बहुत महत्वपूर्ण विशेषता हमारी **आराधना करने की क्षमता है**। अपने पसंदीदा भजनों या आराधना के सहगानों के बारे में सोचिए। हम गाते हैं "हमारा परमेश्वर एक अद्भभुत परमेश्वर है।" "तू कितना महान है" तीव्र आराधना का एक कालातीत भजन है। भजन लिखनेवाला कहता है, "हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कहे! और जो कुछ मेरे भीतर है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे! "[91] ये अभिव्यक्तियाँ और इनके ही जैसे हजारों और, केवल इसलिए संभव है क्योंकि हमारे भीतर "परमेश्वर की छवि" उस महिमामय परमेश्वर को पहचानती और उत्तर देती है जिसके स्वरूप में हम बनाये गये हैं।

मानवता में परमेश्वर की छवि का उद्देश्य

यह सोचना अच्छा होगा कि परमेश्वर ने हमें अपनी छवि में क्यों बनाया? बाकी सृष्टि से हम इतने अलग क्यों हैं? इसका उत्तर यह है कि हम विशेष रूप से परमेश्वर के साथ संबंध में होने और उसकी आराधना करने के लिए बनाये गये हैं।

बाइबल हमें बताती है कि सृष्टि सामान्य रूप से परमेश्वर की महिमा करती है। हम उन चीजों में परमेश्वर की महानता को देखते हैं जिन्हें उसने बनाया है। लेकिन अन्य प्राणी बिना समझ के परमेश्वर की महिमा करते हैं। वे समझ नहीं सकते हैं कि परमेश्वर किस प्रकार का है क्योंकि उनका ऐसा कोई स्वभाव नहीं है जो उससे संबंधित हो सके।

हम परमेश्वर की अनंत रचनात्मकता की प्रशंसा कर सकते हैं क्योंकि हमारे पास कुछ रचनात्मकता है। हम उसकी पवित्रता और धार्मिकता की आराधना कर सकते हैं क्योंकि हमारे पास सही और गलत की समझ है। हम उसके प्रेम से आश्चर्यचकित हो सकते हैं क्योंकि हमारे पास प्रेम करने की क्षमता है।

जितना अधिक हम परमेश्वर को जानेंगे, केवल ज्ञान में नहीं बल्कि संबंध में, हम उतना ही अधिक उससे प्रेम और उसकी आराधना करेंगे। हम परमेश्वर के साथ संबंध में आनंद और पूर्ति प्राप्त करते हैं, क्योंकि उसने हमें इसी लिए बनाया है।

---

[91] भजन संहिता 103:1।

अन्य महत्वपूर्ण विचार

सभी मनुष्यों में परमेश्वर की छवि है। ऐसे लोग हैं जो मानसिक सीमाओं की वजह से तर्क नहीं कर सकते हैं, स्वयं को रचनात्मक रूप से अभिव्यक्त नहीं कर सकते और स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग नहीं कर सकते। परमेश्वर की छवि उन में बनी है, लेकिन यह उनके सांसारिक जीवन में पूर्ण नहीं होती।

हर मानव जीवन का अनन्त मूल्य है। कभी-कभी हम एक व्यक्ति के व्यावहारिक मूल्य, उसकी बुद्धिमत्ता, शिक्षा, योग्यतायें या ताकत जैसी चीजों को देखते हैं। परन्तु हर व्यक्ति का मूल्य है जो उसके व्यावहारिक मूल्य से अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह परमेश्वर की छवि में बना है। यही कारण है कि हर व्यक्ति एक इंसान होने के नाते आदर का हकदार है, भले ही वह उन चीजों के अभाव में है जो लोगों को व्यावहारिक प्रतिष्ठा देते हैं, और भले ही वह एक दुष्ट व्यक्ति क्यों न हो। परमेश्वर की छवि का यह कारण भी है कि हर बच्चा परमेश्वर के लिए मूल्यवान है, और गर्भपात एक भयानक पाप है।

स्वर्गदूत भी सृजन में अद्वितीय हैं। उनके पास उच्च बुद्धि, तर्क क्षमता, संचार क्षमता और आराधना की क्षमता होती है। इसलिए उनके पास परमेश्वर की छवि के कुछ पहलू हैं और पवित्रशास्त्र में उनको "परमेश्वर के पुत्र" कहा जाता है।[92] वर्तमान में हम सामर्थ्य में स्वर्गदूतों से कम हैं,[93] फिर भी वे हमारी सेवा करते हैं।[94] अनन्त काल में हमारी गौरवपूर्ण स्थिति स्वर्गदूतों की अपेक्षा अधिक होगी, •[95]और हम मसीह के साथ शासन करेंगे, जिसका अर्थ है कि मनुष्यों को स्वर्गदूतों की तुलना में और अधिक परमेश्वर की छवि में बनाया गया है।

दुनिया अपने मूल रूप में नहीं है। प्रतिभाशाली कलाकार द्वारा बनाई गई एक सुंदर चित्रकला की कल्पना कीजिए। कल्पना कीजिए कि चित्रकला को फर्श पर फेंक दिया जाता है, और लोग इस पर गंदी जूतियाँ पहने हुए चढ़ते हैं। यदि आप उस चित्रकला को उठाते हैं और इसे देखते

[92] अय्यूब 1:6।

[93] भजन संहिता 8:5।

[94] इब्रानियों 1:14।

[95] 1 कुरिन्थियों 6:3।

हैं, तो आप अभी भी उस महान प्रतिभा को देख सकते हैं जो इसमें डाली गयी थी, फिर भी चित्रकला वैसी नही है जैसे कलाकार ने उसे बनाके पूरा किया था। सृजन भी उसी प्रकार है। यह बिल्कुल वैसा नहीं है जैसा परमेश्वर ने इसके होने का आश्य किया था, लेकिन उसकी महिमा अभी भी इसमें दिखाई देती है।

पाप ने लोगों में "परमेश्वर-समान" क्षमताओं को विकृत कर दिया है। कलात्मक अभिव्यक्ति एक दुष्ट हृदय को प्रकट कर सकती है और शैतान का एक उपकरण भी हो सकती है, भले ही उपहार परमेश्वर की ओर से हो। परन्तु अनुग्रह के हस्तक्षेप के कारण, पाप से हमारे भीतर परमेश्वर की छवि पूरी तरह से नहीं मिटी। और अनुग्रह से हमारे अंदर परमेश्वर की छवि को नवीनीकृत, विकसित और हमारे सृष्टिकर्ता की महिमा के लिए व्यक्त किया जा सकता है![96]

हमारे भीतर परमेश्वर की छवि हमारे बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात है। हमें दी गयी परमेश्वर की छवि की विशेषताएँ हमें सुसमाचार के अनुकूल होने के लिए संभव बनाती है। हमारी नैतिक समझ अनुग्रह के लिए हमारी अंतरात्मा को जागृत करने और हमें पाप से दोषी सिद्ध करती है। अनुग्रह के द्वारा पुनः स्थापित की गयी स्वतंत्र इच्छा जो हममें काम करती है उससे हमारे लिए यह चुनाव करना संभव होता है कि "हम किसकी सेवा करेंगे?" हमारी रचनात्मक प्रवृत्ति के माध्यम से हम अपने परमेश्वर की महिमा कर सकते हैं और उसका आदर कर सकते हैं, और विवेक बुद्धि का इस्तेमाल करके परमेश्व के काम करने के तरीकों को समझ सकते हैं। परमेश्वर को समझने की खोज, आराधना में बदल जाती है, जब हम अपने सृष्टिकर्ता की पूर्ण अद्भुता को समझते हैं, जिसने बहुत अनुग्रहकारी रूप से "हमें महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाया है!"

वे त्रुटियाँ जिनसे बचना है।

कभी-कभी लोग सोचते हैं कि परमेश्वर के साथ संबंध का महत्व मृत्यु के बाद ही होता है। वे सोचते हैं कि यदि कोई व्यक्ति पृथ्वी पर एक अच्छा जीवन जीता है, तो इससे ज्यादा फर्क नहीं पड़ता कि वह मसीह है या नहीं। लेकिन अगर हम समझते हैं कि मानवता के स्वभाव को परमेश्वर के साथ रिश्ता स्थापित करने के लिए बनाया गया है, तो हम समझते हैं कि अगर कोई व्यक्ति परमेश्वर को नहीं जानता, तो उसका जीवन आम तौर पर व्यर्थ होता है। हमें

[96] कुलुस्सियों 3:10, इफिसियों 4:22-24, 2 कुरिन्थियों 3:18।

हमारे भीतर परमेश्वर की आत्मा की आवश्यकता है जो, हमारा मार्गदर्शन कर सके, हमारी क्षमता को पूरी कर सके, और जो भी हम करते हैं, उसके बारे में अनन्त दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

छात्रों को "विश्वास का वक्तव्य" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए

विश्वास का वक्तव्य

परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी आराधना करने के उद्देश्य के लिए मनुष्य परमेश्वर की छवि में बनाये गये हैं। परमेश्वर ने उन्हें अपने उद्देश्य के लिए उन्हें सोचने, संवाद करने और प्यार करने के लिए रचा है। एक व्यक्ति के पास नैतिक समझ है, एक व्यक्तिगत इच्छा है, और एक अमर आत्मा है। परमेश्वर का अनुग्रह एक व्यक्ति को स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति देता है। हर मानव जीवन का अनन्त मूल्य है।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले, उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

याकूब 1:12-15, रोमियों 6:12-23, 1 थिस्सलुनीकियों 5:23, रोमियों 8: 22-26, यहोशू 24:14-18, उत्पत्ति 3:1-6, इफिसियों 2:1-9

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब यह असाइनमेंट के लिए पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

अनुशंसित पाठन

Purkiser, W. T., ed. ***हमारे मसीह विश्वाश की खोज।*** *(Exploring Our Christian Faith.)* Kansas City, MO: Beacon Hill, 1978.

अध्याय 10 देखिए: "मनुष्य क्या है?"

मानवता
अध्ययन के लिए प्रश्न

1. मनुष्य के बारे में मसीह दृष्टि कैसे दूसरों से अलग है?
2. हम कैसे जानते हैं कि मानवता में परमेश्वर की छवि भौतिक समानता नहीं है? तीन कारण दीजिए।
3. मानवता में परमेश्वर की छवि के नौ तत्वों को सूचीबद्ध कीजिए।
4. किस कारण से हमें परमेश्वर की छवि में बनाया गया है?
5. नैतिक समझ से क्या क्षमता मिलती है?
6. परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हमें अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता क्यों है?

पाठ 5
पाप

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) पाप को समझना महत्वपूर्ण क्यों है।
(2) स्वतंत्र इच्छा की वजह से पाप संभव था, न कि कुछ ऐसा जो परमेश्वर ने बनाया हो।
(3) विरासत में मिली दुष्टता की परिभाषा और विवरण।
(4) जानबूझकर किये गये पाप की बाइबल में अवधारणा।
(5) मानव त्रुटि की परिभाषा और मसीह परिपक्वता की प्रक्रिया के प्रति सही दृष्टिकोण।
(6) मानव दुर्बलता की परिभाषा और इसका पाप से अंतर।
(7) पाप के बारे में मसीह धारणाओं का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक यह है कि विद्यार्थी जानबूझकर किये गये पाप की स्पष्ट परिभाषा के आधार पर रूपांतरण को बेहतर समझें।

"पाप"

मुद्रित व्याख्यान सामग्री

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद, समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन को देखिए।

उत्पत्ति 3 को एक साथ पढ़िए। यह लेखांश हमें पाप के विषय में क्या बताता है?

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक । देखते हैं तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र संदर्भ ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

हमें पाप को समझने की आवश्यकता क्यों है

?हमें पाप को समझने की आवश्यकता क्यों है?

बाइबल हमें बताती है कि पाप मानव दुखों का कारण है। यह पाप ही था जिसके कारण मृत्यु दुनिया में आई थी। •[97] बीमारी, बुढ़ापा और कष्ट पाप के अभिशाप का कारण है। पापी कर्म के कारण जो लोग करते हैं जैसे झूठ, चोरी, हत्या, व्यभिचार, लड़ाई, दारूपन और उत्पीड़न इन्हीं के कारण संसार कष्ट से भरा है। पापी कार्य उस पाप से होते हैं जो दिल में होते हैं, जैसे नफरत, कामुकता, लोभ, अभिमान और स्वार्थ।

हमें दुनिया के हालात को समझने के लिए पाप (1) को समझना ज़रूरी है। कभी-कभी परमेश्वर उस प्रकार दुनिया के हालात में हस्तक्षेप नहीं करता जिस प्रकार हम उम्मीद करते हैं। हमें दुनिया में परमेश्वर की प्राथमिकताओं को समझने के लिए पाप (2) को समझना होगा।

परमेश्वर ने अनुग्रह और उद्धार के साथ मनुष्य के पाप पर प्रतिक्रिया दी। यही कारण है कि पाप को सावधानीपूर्वक परिभाषित किया जाना चाहिए। अनुग्रह और उद्धार को समझने के लिए हमें पाप (3) को समझना होगा।

पापपूर्णता पवित्रता के विपरीत है और परमेश्वर के प्रति समर्पण के विरुद्ध है। एक व्यक्ति को पवित्र और परमेश्वर के प्रति समर्पित होने के लिए, पाप से अलग होना आवश्यक है। पवित्रता को समझने के लिए हमें पाप (4) को समझना होगा।

"इस स्थिति में मनुष्य का मन अंधकार से भरा होता है, परमेश्वर के उद्धार के ज्ञान से वंचित होता है और प्रेरित के अनुसार, वह उन वस्तुओं के योग्य नहीं होता जो परमेश्वर के आत्मा की हैं" (James Arminius, *Twenty-Five Public Disputations*, Disputation 11 - पच्चीस सार्वजनिक विवाद, विवाद 11)।

पाप की उत्पत्ति

परमेश्वर की सृष्टि सिद्ध थी और जो

[97] रोमियों 5:12।

कुछ उसने बनाया था वह दोष रहित था। जब परमेश्वर ने सृष्टि बनायी, तो उसने देखा कि यह अच्छी है।[98] इसलिए, हम जानते हैं कि पाप परमेश्वर की गलती नहीं थी। आदम और हव्वा परमेश्वर के साथ संबंध में थे, वे परमेश्वर को खुश करने की इच्छा रखते थे और जो कुछ भी सही था उसे करने की क्षमता रखते थे।

शैतान ने हव्वा को लुभाकर उससे गलत करवाया। इस से हम जानते हैं कि पाप सृष्टि में पहले से मौजूद था। शैतान पहले ही पाप में पड़ चुका था। लेकिन पाप ने अभी तक मानवता या उस सृष्टि के हिस्से में जो उसके अधिकार में था, प्रवेश नहीं किया था।

आदम और हव्वा के पास स्वतंत्र इच्छा थी। पाप इसलिए संभव था क्योंकि वे वास्तविक चुनाव कर सकते थे। उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने का फैसला किया और यह मानव पाप की शुरुआत थी। परमेश्वर ने पाप को नहीं रचा।

पहले पाप के कर्म से मानवता परमेश्वर से अलग हो गयी। पाप ने मानवता के स्वभाव को भी भ्रष्ट किया।•[99] उसके बाद पैदा होने वाले सभी बच्चों का स्वभाव भ्रष्ट होता था और वे पाप के कार्य करते थे।•[100]

पाप से सृष्टि पर अभिशाप आया।[101] पाप के कारण जीवन में बदलाव आ गया। कष्ट, बुढ़ापे और मौत की शुरूआत हुई।•[102] कार्य और उत्तरजीविता मुश्किल हो गया। मानव संबंध संघर्ष से भर गए। जैसे-जैसे साल बीतते गए और लोग बढ़ने लगे, पापों के परिणाम भी बढ़ने लगे जिनकी आदम और हव्वा कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

---

[98] उत्पत्ति 1:31।

[99] भजन संहिता 51:5।

[100] रोमियों 5:12, 14, 18-19।

[101] उत्पत्ति 3:16-19।

[102] 1 कुरिन्थियों 15:22

विरासत में मिली दुष्टता

? आप किस प्रकार उस पापी स्वभाव का वर्णन करेंगे जिसके साथ लोग पैदा होते हैं?

विरासत में मिली दुष्टता मनुष्य के नैतिक स्वभाव की भ्रष्टता है जो उसे जन्म से पाप की ओर ले जाती है। इसे कभी-कभी "मूल पाप" कहा जाता है। आदम के पाप के कारण हम अपने स्वभाव की पापपूर्णता के साथ पैदा होते हैं।

> क्या मनुष्य स्वभाव से सब प्रकार की बुराई से भरा है? क्या वह सब भली वस्तुओं से रहित है? क्या वह पूरी तरह से हारा हुआ है? क्या उसकी आत्मा पूरी तरह से भ्रष्ट है? या, हम इस कथन के विषय में सोचें कि, "उसके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है?" अगर आप इसे स्वीकार करते हैं तो आप अभी भी एक मसीही हैं। अगर आप इसे अस्वीकार करते हैं तो अभी भी एक गैर-मसीही हैं। (John Wesley, ÏThe doctrine of Original SinÐ- "मूल पाप का सिद्धांत")

दुष्ट लोगों की जन्म से ही दुष्टता की प्रवृत्ति होती है। •[103] एक व्यक्ति का स्वभाव पहले से ही एक पापी प्रवृत्ति से विकृत हो जाता है जब उसकी जिंदगी शुरू होती है। एक व्यक्ति जैसे ही वह चुनाव करना शुरू कर देता है वह पाप करना शुरू कर देता है। पापी प्रवृत्ति वह नहीं है जो वह अपने पर्यावरण से सीखता है।

दाऊद ने कहा कि वह अधर्म के साथ पैदा हुआ और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पला। •[104] उसका मतलब यह नहीं था कि उसकी माता ने कुछ गलत किया था। उसका मतलब था कि जब भी गर्भ में एक बच्चा पलता है, उसका स्वभाव पहले से ही पाप से भ्रष्ट होता है।

भ्रष्ट प्रकृति की वजह से, लोगों में परमेश्वर की छवि बिगड़ी हुई है। हर व्यक्ति एक इच्छा के साथ पैदा होता है जो आत्म केन्द्रित होती है और उसका रुझान पाप की ओर होता है।[105] हमारी इच्छाएं उचित बात का चुनाव करने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं, जब तक कि परमेश्वर हमें इच्छा और ताकत नहीं देता। •[106]

---

[103] भजन संहिता 58:3।

[104] भजन संहिता 51:5।

[105] फिलिप्पियों 3:19।

[106] रोमियों 6:16-17।

विरासत में मिली दुष्टता आंतरिक पापों को प्रेरित करती है जैसे गर्व, ईर्ष्या, नफरत और क्षमा न करने की इच्छा। यह पाप की क्रियाओं को भी प्रेरित करती है।

स्वाभाविक रूप से लोगों की परमेश्वर के अधिकार की ओर विद्रोह की प्रवृत्ति है और वे उसकी व्यवस्था पर क्रोधित रहते हैं। पापी लोगों का न केवल उनके पाप के कर्मों के लिए बल्कि परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह के लिए भी न्याय किया जाएगा। •[107]

एक पापी प्रकृति वाला व्यक्ति स्वाभाविक रूप से आत्म केन्द्रित होता है। वह परमेश्वर और अन्य लोगों के अधिकार पर भरोसा करने के बजाय अपनी इच्छा का अधिकार जताना चाहता है। वह परमेश्वर को खुश करने की बजाय अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहता है। उसे खुद पर भरोसा है और वह परमेश्वर पर निर्भर नहीं होना चाहता। परमेश्वर की महिमा की तुलना में उसकी अपनी सफलता उसके लिए अधिक महत्वपूर्ण है।

लोग सही ढंग से यह नहीं पहचान सकते कि क्या सही है या क्या गलत, क्योंकि उनकी बुद्धि में अंधकार छाया है। •[108] वे स्वभाव से विद्रोही दुनिया की दिशा, शैतान के नियंत्रण और अपनी पापी इच्छाओं का पालन करते हैं; और वे परमेश्वर के क्रोध के नीचे खुद को लाते हैं। •[109] उनकी प्राकृतिक प्रवृत्ति हर क्षण पाप की ओर होती है।[110]

विरासत में मिली दुष्टता की सीमा को धर्मशास्त्र में कुल दुष्टता के रूप में वर्णित किया गया है। उस बदलाव के बिना जो परमेश्वर का अनुग्रह लाता है, मनुष्य कुछ भी अच्छा नहीं कर पाता या कुछ अच्छा करने की इच्छा भी नहीं रख पाता। वह पश्चाताप करने या परमेश्वर की खोज करने में असमर्थ होता। •[111] उसे "अपराधों और पापों में मृत" के रूप में वर्णित किया जाता है।[112]

यह जानना महत्वपूर्ण है कि कैसे परमेश्वर के अनुग्रह से विरासत में मिली दुष्टता की ओर प्रतिक्रिया दिखती है। सबसे पहले, सुसमाचार के संदेश से परमेश्वर का सामर्थ्य आता है, जो उस व्यक्ति को सुसमाचार के साथ अनुकूल होने की क्षमता प्रदान करता है जिसकी

---

[107] यहूदा 15।

[108] इफिसियों 4:17-18।

[109] इफिसियों 2:2-3

[110] उत्पत्ति 6:5।

[111] यूहन्ना 6:44।

[112] इफिसियों 2:1।

सुसमाचार के लिए अभिलाषा समाप्त हो गयी है। •[113] तब, जब एक व्यक्ति का उद्धार हो जाता है, वह पाप के नियंत्रण से बच जाता है।[114] हालांकि, विरासत में मिली दुष्टता का प्रभाव नये मसीह लोगों में जारी है।

मसीही लोगों में विरासत में मिली दुष्टता का प्रभाव कई तरीकों में यह दर्शाता है। (1) नये मसीह लोग कभी-कभी परखे जाने के दौरान अपनी इच्छा से संघर्ष करेंगे। (2) नये मसीह लोग उचित उद्देश्यों को महसूस करेंगें जो सही नहीं हैं, जिनका उन्हें अवश्य सामना करना होगा (3) नये मसीह लोगों की गलत प्रतिक्रियाएं और व्यवहार उन्हें पता चलने से पहले ही होंगे।

आज के मसीह लोगों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि वह अपना विश्वास न छोड़े। उन्हें संदेह हो सकता है कि उनका उद्धार हुआ है या नहीं क्योंकि वे अभी भी गलत अभिप्रेरणाओं के साथ संघर्ष करते हैं।

एक पासबान को नए मसीह लोगों के साथ धैर्य रखना चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि वे जो भी कहते और करते हैं, उन सभी चीजों में वे तर्कयुक्त नहीं होंगे। हो सकता है कि वे तुरंत उस समस्या को न देख सकें, जो अभी उनके पास है। इन्हें विरासत में मिली दुष्टता से शुद्ध होने के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए लेकिन उन्हें इसे समझने के लिए समय की आवश्यकता होगी।

सुविचारित पाप

? सुविचारित पाप क्या है?

सुविचारित पाप परमेश्वर की ज्ञात इच्छा का उद्देश्यपूर्ण उल्लंघन है। •[115] यह तब होता है जब कोई व्यक्ति वह करने का चुनाव करता है जो वह जानता है कि गलत है या वह नहीं करता जो उचित है।

---

[113] रोमियों 1:16।

[114] रोमियों 6:11-14।

[115] 1 यूहन्ना 3:4, याकूब 4:17।

पाप का स्वभाव यीशु के अलावा सभी लोगों को पाप के कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। •[116] कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अपने पूरे जीवन में धर्मी रहा हो। •[117]

रोमियों 3:10-19 में, हमारे पास उन लोगों का वर्णन है जो अनुग्रह के द्वारा किए गए बदलाव के बिना अपने स्वभाव का पालन करते हैं। यह विद्रोह, नफरत और विनाश द्वारा चिह्नित जीवन है।

ऐसे कुछ लोग हैं जो प्रभु को जानने से पहले भी दुष्ट प्रतीत नहीं होते हैं। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि वे दूसरों के खिलाफ विनाशकारी, हानिकारक पाप करते हैं लेकिन वे लोग भी पापी हैं क्योंकि वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के बजाय अपने तरीके से जीने का चयन करते हैं। बाइबल कहती है कि लोग भेड़ों की तरह हैं जो भटक गयी हैं।[118]

एक ऐसा व्यक्ति जो अपना रास्ता चुनने के अधिकार का दावा करता है और अपने बनानेवाले जो उसका मार्गदर्शन करता है उसके अधिकार से इन्कार करना, वह पाप का मूलतत्त्व है। यह परमेश्वर के अधिकार के खिलाफ विद्रोह है। यह आदम और हव्वा का पाप था, जो खुद के परमेश्वर बनने के प्रलोभन में आकर परमेश्वर से स्वतंत्र होना चाहते थे।

अंतिम न्याय में पापियों का न्याय उनके पापों के अनुसार किया जाएगा और आग की झील में दण्ड की आज्ञा दी जाएगी।[119]

एक पापी जो पश्चाताप करता है और सुसमाचार पर विश्वास करता है, सुविचारित पाप पर विजय में रहना शुरू करता है। यदि वह परखे जाने के समय हार मान लेता है और पाप करता है वह इससे पश्चाताप कर सकता है और क्षमा पा सकता है लेकिन एक विश्वासी का सामान्य जीवन पाप पर विजय है। •[120]

---

[116] रोमियों 3:23।

[117] 1 यूहन्ना 1:10।

[118] यषायाह 53:6।

[119] प्रकाशितवाक्य 20:12-14।

[120] 1 यूहन्ना 2:1-6, 3:3-10।

अनैच्छिक उल्लंघन

एक व्यक्ति कभी-कभी गलती से या अज्ञानता से परमेश्वर के वचन का उल्लंघन करता है।

लैव्यव्यवस्था 4:2-3 में, हम देखते हैं कि जब एक व्यक्ति को एहसास होता कि उसने कुछ गलत किया है, उसको बलिदान देने की जरूरत होती है। इसलिए कि मसीह की मृत्यु पुराने नियम के सभी बलिदानों की जगह लेती है, हम जानते हैं कि मसीह लोग अनजाने में किये गये उल्लंघनों से छुड़ाये जाते हैं।

अनैच्छिक उल्लंघन इस अभिप्राय में पाप कहा जा सकता है कि वे परमेश्वर के पूर्ण मानक से कम हैं, परन्तु ये वे नहीं हैं जिन्हें बाइबल आमतौर पर पाप कहती है। एक व्यक्ति जो उन्हें पाप कहता है, उसके लिए परमेश्वर की व्यवस्था से जानबूझकर किये जानेवाले उल्लंघनों को मानवीय त्रुटियों से अलग करना और मानवीय जिम्मेदारी का अर्थ समझना मुश्किल होगा। परमेश्वर ने जानबूझकर किये जाने वाले उल्लंघनों की निंदा की है परन्तु मानव त्रुटियों की नहीं।

ये तब तक लाज़मी है जब तक हमारी समझ सीमित है। वे परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते को नहीं तोड़ सकते क्योंकि वे परमेश्वर के लिए हमारे प्रेम के बीच नहीं आ सकते। परमेश्वर ने कहा पूर्ण प्रेम उस चीज़ को पूरा करता है जो वह हमसे चाहता है। •[121] जो हम नहीं जानते उसके लिए हम जवाबदेह नहीं हैं। •[122]

जब हम ज्योति में चलते हैं [उस सत्य के अनुसार जो हम जानते हैं] हम सभी पापों से शुद्ध हो जाते हैं। •[123] हमें डरने की ज़रूरत नहीं है कि अज्ञात उल्लंघन परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते को तोड़ देगा क्योंकि हम मसीह के प्रायश्चित में भरोसा करते हैं।

अनजाने में किये जाने वाले उल्लंघनों के बारे में जो हम लैव्यव्यवस्था से सीखते हैं वह यह है कि जब हमें एहसास होता है कि हमने कुछ गलत किया है, तो हमें इसका पश्चाताप

[121] मत्ती 22:37-40, रोमियों 13:8-10।

[122] याकूब 4:17।

[123] 1 यूहन्ना 1:7।

करना चाहिए, परमेश्वर से क्षमा माँगिए और अपने जीवन को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सही कीजिए।

जब हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं, पवित्र आत्मा का पालन करते हैं, अन्य विश्वासियों के साथ संगती करते हैं और परिपक्वता में बढ़ते हैं, हमें उन व्यवहारों को बदलना चाहिए जो अनजाने में परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करते हैं।

? हमें परमेश्वर की इच्छा को जानना और उसके अनुसार और बेहतर क्यों करना चाहिए?

कुछ कारण हैं कि हमें परमेश्वर की इच्छा को बेहतर तरीके से समझना चाहिए और इसका पूरी तरह से पालन करना चाहिए: (1) हम ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहते जिससे परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता, (2) गलत काम करने के परिणाम बुरे होते हैं भले ही वे अनजाने में ही किये गये हों, (3) हमें मसीह होने के नाते अच्छे उदाहरण बनने की जरूरत है और (4) अगर हम परमेश्वर की इच्छा से बचने या टालने की कोशिश करते हैं, तो हम पाप के दोषी हैं।

जब हम परमेश्वर की इच्छा के बारे में अपनी समझ को विकसित करते हैं, हम कभी-कभी अपने जीवन में गलत कर्मों को पहचानते हैं। अगर हम पहचानते हैं कि हम कुछ ऐसा कर रहे हैं जो गलत है, लेकिन फिर भी इसको करते हैं, तो यह अज्ञानता से की गयी त्रुटि नहीं है। अगर हम बदलने से इन्कार करते हैं, तो वह पाप एक सुविचारित पाप बन जाता है।

दुर्बलता

दुर्बलताएं शारीरिक या मानसिक सीमाएं या कमियां हैं। हर व्यक्ति में मानवीय दुर्बलता है। आदम के पाप में पड़ने और निरंतर पाप से मानवता के पतन के कारण हम मानसिक रूप से, शारीरिक रूप से और भावनात्मक रूप से उससे भी अधिक कमजोर हो गये हैं, जितना परमेश्वर ने हमें बनाया था।

हम जानते हैं कि दुर्बलता एक प्रकार का पाप नहीं है, क्योंकि यीशु में भी दुर्बलता थी लेकिन उसने कोई पाप नहीं किया था। •[124] मानव होने पर भी यीशू ने अपने आप पर मानवीय सीमाएँ लगायी थी और वह भी हर प्रकार से परखा गया जिस प्रकार हम परखे जाते

[124] इब्रानियों 4:15।

हैं। पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि उसे भूख लगी, थकान लगी और पीड़ा हुई। यद्यपि यीशु ने मानवीय सीमाओं को अपनाया, फिर भी उसने कभी ऐसा कुछ नहीं किया जिससे पिता अप्रसन्न हुआ क्योंकि वह अपने दिव्य स्वभाव और पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित था।

प्रेरित पौलुस आनन्दित हुआ कि उसकी दुर्बलता परमेश्वर के सामर्थ्य के लिए प्रकट होने का अवसर है लेकिन हम जानते हैं कि वह पाप के बारे में बात नहीं कर रहा था क्योंकि वह अपने जीवन में पाप को लेकर आनन्दित नहीं होता। •[125]

जब तक हम नश्वर शरीर में हैं तब तक हम दुर्बल रहेंगे। हमारी समझ की सीमाएं मानव त्रुटियों को अपरिहार्य बनाती हैं। दुर्बलता सुविचारित पाप उत्पन्न नहीं करती। यदि हम पाप करना चुनते हैं, तो हम दोषी हैं इसके लिए हम अपने मानव स्वभाव को दोष नहीं दे सकते। परमेश्वर हमारा मनुष्य होने के लिए न्याय नहीं करता लेकिन जब हम उसकी इच्छा के अनुसार नहीं चलते तब हमारा न्याय होता है।

? अनजाने में उल्लंघन से सुविचारित पापों में अंतर महत्वपूर्ण क्यों है?

त्रुटियाँ जिनसे हमें बचना है: सुविचारित पाप की एक अस्पष्ट परिभाषा

कुछ लोगों को सुविचारित पाप, विरासत में मिली दुष्टता, अनजाने में उल्लंघन और दुर्बलता सभी को एक साथ जोड़ते हैं और इन सभी को बिना किसी भेदभाव के पाप कहते हैं।

एक पापी तब पश्चाताप करता है जब वह अपने पापों के कारण दुखी होता है और उन पापों को छोड़ देता है। इसका मतलब है कि वह सुविचारित पापों से पश्चाताप करता है क्योंकि यही है जो परमेश्वर के सामर्थ्य से बदलेगा।

यदि हम अन्य श्रेणियों से सुविचारित पापों को अलग करते हैं, तो हम समझ सकते हैं कि इसका अर्थ है कि एक विश्वासी पाप पर विजय प्राप्त करता है। जो लोग श्रेणियों में अंतर नहीं करते हैं वे विश्वास नहीं करते कि पाप पर विजय संभव है।

[125] 2 कुरिन्थियों 12:9-10।

पवित्रशास्त्र से संबन्धित उद्धार के विवरण इन्हीं अंतरों से तर्कसंगत है जो मानव स्थिति के पहलुओं के बीच है। उद्धार को समझने के लिए हमें ठीक से पाप को परिभाषित करना अवश्य है।

कक्षा को "मान्यताओं का कथन" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

मान्यताओं का कथन

पाप पहले निर्मित लोगों के मुक्त निर्णय, यानी परमेश्वर की अवहेलना करने से उत्पन्न हुआ। यीशु को छोड़कर सभी लोगों को आदम की भ्रष्टता विरासत में मिली है और वे सभी लोग पापों के कार्यों के लिए भी दोषी हैं। मानव त्रुटियां परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन कर सकती हैं लेकिन परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को नहीं तोड़ सकती। हर पापी हमेशा के लिए अपराधी ठहरा रहेगा यदि वह अंतिम न्याय से पहले परमेश्वर की क्षमा प्राप्त नहीं करता।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले, उसे इस पाठ का विषय पढ़ना होगा और इस अनुच्छेद के विषय के बारे में एक लेखांश लिखना होगा।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

गलातियों 5:16-21, इफिसियों 5:1-8, तीतुस 1:10-16, याकूब 4:1-4, 2 पतरस 2:9-17, रोमियों 1:21-32, रोमियों 3:10-20

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब इस असाइनमेंट को पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

अनुशंसित संसाधन

Wesley, John. ÏThe Doctrine of Original Sin,Ðin *The Complete Works of Wesley*. (Ïमूल पाप का सिद्धांत", वेस्ले के पूर्ण कार्य में) Vol. 9.

Wilcox, Leslie. *Profiles in Wesleyan Theology.* Salem, OH: Schmul Publishing, 1985. अध्याय 7 देखिये: पाप की शुरुवात और प्रकृति ("Origin and Nature of Sin," 141-170.)

पाप

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. हमें यह क्यों समझने की ज़रूरत है कि पाप क्या है? चार कारण दीजिए।
2. हम यह कैसे जानते हैं कि पाप परमेश्वर की त्रुटि नहीं है?
3. निम्न में से प्रत्येक की एक-वाक्य परिभाषा दीजिए: विरासत में मिली दुष्टता, सुविचारित पाप, अनजाने में उल्लंघन और दुर्बलता।
4. हमें परमेश्वर की इच्छा को समझना और उसके अनुसार बेहतर क्यों करना चाहिए?
5. हम कैसे जानते हैं कि दुर्बलता पाप नहीं है?

पाठ 6
आत्माएँ

पाठ के उद्देश्य
इस पाठ के अंत में, विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) स्वर्गदूतों के स्वभाव के बारे में कुछ विवरण।
(2) विश्वासी के जीवन में स्वर्गदूतों की भागीदारी।
(3) शैतान और अन्य बुरी आत्माओं का पतन।
(4) आत्माओं की दुनिया में मौजूद आत्मिक संघर्ष।
(5) बुरी शक्तियों पर परमेश्वर और विश्वासियों की अंतिम विजय।
(6) आत्माओं के बारे में मसीह धारणाओं का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक यह है कि विद्यार्थियों को सावधानी बरतनी है कि वे आत्माओं की दुनिया में गलत तरह की दिलचस्पी न रखें।

"आत्माएँ"

मुद्रित व्याख्यान सामग्री

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद, समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन पर जाइए।

मत्ती 4:1-11 को एक साथ पढ़िए। यह पठन हमें बुरी आत्माओं के बारे में क्या बताता है?

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक । देखते हैं तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र संदर्भ ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

जब लोग स्वर्गदूतों के बारे में बात करते हैं, तो पहला सवाल यह है, "स्वर्गदूत कैसे दिखते हैं?" कई कलाकारों ने उनका वर्णन करने का प्रयास किया है।

? स्वर्गदूत कैसे दिखते हैं?

क्या स्वर्गदूतों के पंख होते हैं? यशायाह ने जो साराप देखा था उसके छः पंख थे।[126] वाचा के संदूक पर जो करूब की छवी परमेश्वर ने मूसा को लगाने के लिए बोला था उसके पंख थे।[127] जो करूब यहेजकेल ने देखा था उसके चार पंख थे।[128]

हम नहीं जानते कि आमतौर पर स्वर्गदूतों के पंख होते हैं। उन्हें यात्रा के लिए पंखों की ज़रूरत नहीं है क्योंकि वे आत्माएं हैं और पंखों से उड़ने की तुलना में अधिक गति की यात्रा करते हैं। आत्माओं के रूप में, उनका भौतिक शरीरों के जैसे वजन नहीं होता, जिसके कारण पंखों का होना अनावश्यक है।

हम जितनी चित्रकारी देखते हैं, उसके विपरीत, बाइबल कभी भी स्वर्गदूतों का वर्णन महिलाओं या बच्चों के रूप में नहीं करती। वे पुरुष रूप में प्रकट हुए हैं लेकिन मानवीय समझ में उनका कोई लिंग नहीं होता। उनका किसी तरह का कोई विवाह संबंध या परिवार संघ नहीं होता। •[129] प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से बनाया गया है।

स्वर्गदूत आमतौर पर लोगों के लिए अदृश्य होते हैं लेकिन जब उनका कोई उद्देश्य होता है तो वे खुद को प्रकट कर सकते हैं। कभी-कभी जब कोई स्वर्गदूत दिखाई देता था, तो लोग सोचते थे कि वह एक साधारण आदमी है।[130] और कभी-कभी स्वर्गदूत ऐसी चमक के साथ प्रकट होते थे कि लोग डर के कारण ज़मीन पर गिर जाते थे।[131] जब कोई स्वर्गदूत किसी के पास संदेश लाता था, तो आमतौर पर वह इन शब्दों के साथ अपनी बातचीत शुरू करता था "मत डर"। •[132]

---

[126] यशायाह 6:2।

[127] निर्गमन 25:20।

[128] यहेजकेल 1:6, 10:15।

[129] मत्ती 22:30।

[130] उत्पत्ति 19:1-2।

[131] मत्ती 28:2-4।

[132] लूका 1:13, 1:30, 2:10।

स्वर्गदूत आत्माएं हैं, [133] लेकिन हमें इस कारण यह नहीं सोचना चाहिए कि वे कम वास्तविक हैं। बाइबल बताती है कि आत्माएं स्वाभाविक रूप से किसी भी भौतिक वस्तु से अधिक शक्तिशाली हैं। • [134]

स्वर्गदूतों को परमेश्वर के पुत्र कहा जाता है [135] और उनके पास कुछ ऐसा है जो परमेश्वर के स्वभाव में से है लेकिन उस प्रकार नहीं है जैसा मनुष्यों के पास है। स्वर्गदूत मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली हैं और बुद्धि में श्रेष्ठ हैं लेकिन मनुष्य एक दिन स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ होंगे। • [136]

उत्पत्ति के अभिलेख में स्वर्गदूतों की उत्पत्ति के विषय में वर्णन नहीं किया गया है। उनको पृथ्वी से पहले बनाया गया था और उन्होंने खुशी मनाई जब उन्होंने परमेश्वर को पृथ्वी की रचना करते हुए देखा। [137]

स्वर्गदूत अमर हैं। [138] तथ्य यह है कि उन्हें धरती से पहले बनाया गया था, इसका अर्थ है कि सभी स्वर्गदूत हजारों सालों से जीवित हैं और उन्होंने पूरे मानव इतिहास को देखा है।

स्वर्गदूतों में व्यक्तित्व है। वे बोल सकते हैं और बातचीत कर सकते हैं। [139] वे परमेश्वर की आराधना करते हैं, जिसका अर्थ है कि वे परमेश्वर के स्वभाव के बारे में कुछ समझ सकते हैं और भय के साथ इसका उत्तर दे सकते हैं। [140] जब एक पापी पश्चाताप करता है तो वे आनन्द लेते हैं जिससे पता चलता है कि उनके पास भावनाएं हैं। • [141] वे उद्धार की योजना को समझने में अत्यधिक रुचि रखते हैं जो दर्शाता है कि उनके पास बौद्धिक क्षमता है। • [142] उन्होंने यीशु के जन्म की घोषणा की खुशी मनायी थी। [143]

---

[133] इब्रानियों 1:14। दुष्टात्माओं को भी मत्ती 8:16, 12:45, प्रेरितों के काम 19:12 में आत्माएँ कहा जाता है।

[134] यशायाह 31:3।

[135] अय्यूब 1:6।

[136] 1 कुरिन्थियों 6:3।

[137] अय्यूब 38:4-7

[138] लूका 20:36।

[139] लूका 1:18-20।

[140] इब्रानियों 1:6।

[141] लूका 15:10।

[142] 1 पतरस 1:12।

[143] लूका 2:13-14।

सभी स्वर्गदूत एक जैसे नहीं होते, क्योंकि कुछ करूब और कुछ साराप कहलाते हैं। स्वर्गदूतों के स्तर भी होते हैं क्योंकि बाइबल दोनों स्वर्गदूतों और कम से कम एक प्रधान स्वर्गदूत के विषय में बताती है और "शैतान और उसके स्वर्गदूतों" का उल्लेख करती है। उनके बीच प्राधिकरण ढांचे की एक प्रणाली है जिसे सिंहासन, प्रभुत्व, और रियासत कहा जाता है।[144]

जो हम पवित्रशास्त्र में से जानते हैं उससे भी कहीं अधिक यहूदियों और ईसाई परंपराओं में स्वर्गदूतों के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है।

स्वर्गदूतों के बीच अंतर के बारे में पवित्रशास्त्र में ज़्यादा विवरण नहीं है। शब्द *प्रधान स्वर्गदूत* बाइबल में केवल दो बार इस्तेमाल किया गया है। मीकाईल को प्रधान स्वर्गदूत कहा जाता है और यीशु की वापसी के समय एक प्रधान स्वर्गदूत की आवाज़ होगी।[145] *प्रधान स्वर्गदूत* शब्द का शाब्दिक अर्थ "मुख्य दूत" है। हम नहीं जानते कि कितने प्रधान स्वर्गदूत मौजूद हैं।

सारापों का उल्लेख बाइबल में केवल यशायाह 6 में ही है। उनके छह पंख थे। उनके पंखों के अलावा, वे कुछ कुछ मनुष्य जैसे दिखते होंगे क्योंकि उनके हाथ, पैर और चेहरे थे।

करूबों और एक ज्वालामय तलवार को अदन की वाटिका के बाहर तैनात किया गया था जब आदम और हव्वा को वाटिका से बाहर किया गया था।[146] स्पष्ट रूप से, ऐसा इसलिए किया गया था ताकि वाटिका में कोई प्रवेश न कर सके। यहेजकेल ने जो करूब देखा था, उसका विवरण किसी दूसरे प्राणियों से बहुत भिन्न है जिन्हें हम जानते हैं। उनके चार पंख, चार चेहरे थे और सभी अलग थे, कई हाथ, एक चमकदार आग, बिजली की चमक और बिजली की गति थी।[147]

दो करूबों की छवियाँ वाचा के सन्दूक के छोरों पर थी, उनके बीच प्रायश्चित्त का ढक्कन था। बाइबल में कम से कम आठ बार परमेश्वर को करूबों के बीच में बैठनेवाला कहा

---

[144] कुलुस्सियों 1:16, इफिसियों 6:12।

[145] यहूदा 1:9, 1 थिस्सलुनीकियों 4:16।

[146] उत्पत्ति 3:24।

[147] यहेजकेल 1:5-14, 10:15।

जाता है।[148] इससे उसे इस्राएल के परमेश्वर के रूप में पहचाना जाता था जिसकी मन्दिर में आराधना की जाती थी और इससे यह भी पता चलता है कि उन तरीकों को छोड़कर जो उसने समाझाये थे उसके पास कोई नहीं जा सकता था।

परमेश्वर की सामर्थ्य और महिमा उन सेवकों में देखी जाती है जो उसके पास हैं। करूब ऐसे प्राणी हैं जिन्हें कोई व्यक्ति देखकर यह सोचेगा कि वह परमेश्वर को देख रहा है और इसकी आराधना करने की इच्छा करेगा, फिर भी यह केवल परमेश्वर का एक दास ही है।

यह तथ्य है कि बहुत स्वर्गदूत परमेश्वर की सेवा करते हैं, इससे उसकी महिमा के विषय में पता चलता है। प्रेरित यूहन्ना ने परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर स्वर्गदूतों की एक भीड़ को देखा जिनकी गिनती को उसने लाखों और करोड़ों में व्यक्त किया।[149]

एक स्वर्गदूत की शक्ति असीमित नहीं है क्योंकि हम पढ़तें हैं कि दानिय्येल के लिए संदेश लाते समय एक स्वर्गदूत को संघर्ष में विलंब हो गया था। •[150] फिर भी परमेश्वर उन्हें उस कार्य को पूरा करने के लिए इतनी शक्ति दे सकता है जितनी की उन्हें आवश्यकता है, जैसे उस समय जब एक स्वर्गदूत ने 185,000 सैनिकों को मार डाला था।[151]

यह स्पष्ट है कि स्वर्गदूतों को जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती हैं। बाइबल हमें बताती है कि उन्हें उद्धार प्राप्त करने वालों की सेवा के लिए भेजा जाता है। •[152] स्वर्गदूत परमेश्वर की सेवा करने वाले लोगों को घेरे रहते हैं और उनकी रक्षा करते हैं।[153] हम मान सकते हैं कि बहुत से स्वर्गदूत हमारे साथ हर समय मौजूद रहते हैं। यीशु ने कहा कि बच्चों के स्वर्गदूत हैं जो उन के लिए नियुक्त किये गये हैं। •[154] प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल को राजकुमार कहा जाता है जो इस्राएल के राष्ट्र की रक्षा करता है।[155]

---

[148] भजन संहिता 99:1, यशायाह 37:16, 2 राजा 19:15।

[149] प्रकाशितवाक्य 5:11।

[150] दानिय्येल 10:12-13।

[151] 2 राजा 19:35।

[152] इब्रानियों 1:14।

[153] भजन संहिता 34:7।

[154] मत्ती 18:10।

[155] दानिय्येल 12:1।

बाइबल कभी नहीं कहती कि हमें स्वर्गदूतों से प्रार्थना करनी चाहिए। यह कभी यह भी नहीं कहती कि हमें उनसे बात करने का प्रयास करना चाहिए। वे हमारे और परमेश्वर के बीच मध्यस्थ नहीं हैं। उन लोगों के बारे में चेतावनी दी गई है जो स्वर्गदूतों की पूजा करते हैं और आत्माओं की दुनिया की चीजों में शामिल होते हैं जिसे वे वास्तव में नहीं समझते। •[156] अगर हम स्वर्गदूतों के साथ ऐसा करने की कोशिश करते हैं जो परमेश्वर नहीं चाहता तो दुष्ट आत्माएं परमेश्वर के स्वर्गदूतों के बदले हमें जवाब देंगी।

शैतान और पथभ्रष्ट स्वर्गदूत

?दुष्ट आत्माओं की उत्पत्ति क्या है?

दुष्ट आत्माएं वे स्वर्गदूत हैं जिन्होंने परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह किया। ऐसा मनुष्य की रचना होने से पहले हुआ था और बाइबल में इसके विषय में ज़्यादा उल्लेख नहीं है।

हम यह निश्चय जानते हैं कि सभी स्वर्गदूतों को मूल रूप से अच्छा और पवित्र बनाया गया था और बाइबल उन्हें "पवित्र स्वर्गदूत" कहती है।[157]

शैतान विद्रोह का अगुआ था और एक तिहाई स्वर्गदूत उसके पीछे हो लिए थे।[158] यहूदा की पुस्तक उन स्वर्गदूतों के बारे में बताती है जिन्होंने अपने पहले पदों को छोड़ दिया था।[159] वे पहले से ही परमेश्वर के न्याय से अपराधी ठहर चुके हैं। •[160]

भविष्यद्वक्ताओं कि पुस्तकों में दो लेख हैं जो शैतान के पतन का उल्लेख करते हैं (यशायाह 14:12-17 और यहेजकेल 28: 12-19)। प्रत्येक लेख एक मनुष्य, संसारिक राजा के बारे में बताता है, फिर ऐसा प्रतीत होता है कि ये लेख उन बातों के बारे में बताते हैं जो एक मानव राजा से बढ़कर है। यह लेख शैतान के पतन के साथ एक राजा के पतन की तुलना कर रहा होगा।

---

[156] कुलुस्सियों 2:18।

[157] मत्ती 25:31।

[158] प्रकाशितवाक्य 12:4।

[159] यहूदा 6।

[160] यूहन्ना 16:11, 2 पतरस 2:4

ऐसा प्रतीत होता है कि शैतान घमंड से भरकर परमेश्वर से स्वतंत्र हो जाना चाहता था। प्रेरित पॉलुस ने चेतावनी दी कि एक व्यक्ति अभिमानी होकर उस दण्डाज्ञा में पड़ सकता है जिसमें शैतान पड़ा था। •[161] यह वही प्रलोभन था जब शैतान ने आदम और हव्वा की पेशकश की थी, जब उसने कहा था, "तुम देवताओं की तरह हो।" यह परमेश्वर के अधिकार को अस्वीकार करने और अपने खुद के ईश्वर बनने का प्रलोभन है।

? शैतान के बारे में वे क्या बातें हैं जो हम जानते हैं?

शैतान अभी भी परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह करता है। उसे "हवा का राजकुमार और शक्ति" कहा जाता है।[162] शैतान को "इस दुनिया का शासक" कहा जाता है, क्योंकि इस दुनिया के लोग परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह में रहते हैं।[163] वह दुनिया के राज्यों के स्वामित्व का दावा करता है, उन्हें जिसे वह चुनता है अस्थायी रूप से दे देता है।[164] वह पापियों के मन को अंधा कर देता है ताकि उन्हें सुसमाचार स्वीकार करने से रोक सके। •[165] पापी वास्तव में उसके कैदी हैं।[166] वह लोगों के मन से परमेश्वर का वचन चुरा लेता है, ताकि इसका कोई प्रभाव न हो। •[167] उसने हनन्याह और सफीरा के मन में कलीसिया और पवित्र आत्मा [168] से झूठ बोलने का विचार डाला और यीशु को पकड़वाने की इच्छा के साथ यहूदा में प्रवेश किया।[169] वह गलत धार्मिक सिद्धांत बनाता है जिनको परमेश्वर का वचन "शैतान के सिद्धांत" कहता है और वह लोगों को उन्हें सिखाने के लिए प्रोत्साहित करता है। •[170]

"शैतान खुद को एक पापी के हृदय, आंखों और जीभ का स्वामी बनाता है। उसके हृदय को वह पाप के प्रेम से भरता है; उसकी आंखों को वह अंधा कर देता है ताकि वह उस अपराध और विनाश को न देख पाये जो उसकी प्रतीक्षा करते हैं; और उसकी जीभ वह प्रार्थना करने से रोकता है"(Adam Clarke, *Christian Theology*, ÏGood and Bad AngelsÐ - Ïमसीहीधर्मशास्त्र," अच्छे और बुरे स्वर्गदूत ")।

[161] 1 तीमुथियुस 3:6।
[162] इफिसियों 2:2।
[163] यूहन्ना 12:31।
[164] लूका 4:4-6।
[165] 2 कुरिन्थियों 4:4।
[166] 2 तिमोथी 2:26।
[167] मरकुस 4:15।
[168] प्रेरितों के काम 5:3।
[169] लूका 22:3।
[170] 1 तीमुथियुस 4:1।

शैतान परमेश्वर से नफरत करता है और इसलिए मनुष्य से नफरत करता है जिसे परमेश्वर की छवि में बनाया गया है और परमेश्वर के सबसे बड़े उपहारों में से एक वस्तु है। वह उसी दण्डाज्ञा के तहत जितने लोग संभव हो सके उतने लोगों को लाने की कोशिश करता है जो उसे परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करने के कारण प्राप्त हुई थी।

जो लोग जानबूझकर शैतान की सेवा करते हैं, वे दुनिया में सबसे अधिक धोखा खाए हुए लोग हैं क्योंकि वे उस विद्रोह में हैं जो कभी सफल नहीं हो सकता और वे ऐसे मालिक की सेवा कर रहे हैं जो उनसे नफरत करता है और केवल उन्हें नष्ट करने में रुचि रखता है। वह ऐसे वादे करता है जो वह जानता है कि वह पूरा नहीं कर सकता।

कुछ लोग शैतान का अनजाने में अनुसरण करते हैं जब वे पाप में रहने का चुनाव करते हैं। यही कारण है कि वह प्रलोभन और धोखे के लिए बहुत समय और ऊर्जा लगाता है। वह लोगों से परमेश्वर की आराधना करने के बजाय बनी हुई वस्तुओं की मुर्तियां बनवाकर लागों का परमेश्वर पर से विश्वास उठाना चाहता है। उसका प्रलोभन धोखा है क्योंकि वास्तव में उसके पास देने के लिए कुछ नहीं है बजाय उन चीज़ों की विकृतियों के जो परमेश्वर ने रची हैं। शैतान ने कोई सुख या आनंद नहीं बनाया है: परमेश्वर ने उन सभी को बनाया है। शैतान उन्हें केवल उन दुर्व्यवहार के रूप में पेश कर सकता है जो परमेश्वर की इच्छा से बाहर हैं।

कुछ बुरी आत्माएं स्पष्ट रूप से विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों या लोगों के समूह पर ध्यान केंद्रित करती हैं। जैसे दूत मीकाईल को वह राजकुमार कहा जाता है जो इस्राएल की रक्षा करता है वैसे ही बुरी आत्माएं थीं जिन्हें फारस और ग्रीस के राजकुमार कहा जाता था।[171] कुछ आत्माएं राष्ट्रों के देवता बन गईं।

शैतान आराधना चाहता है। •[172] बुरी आत्माएं झूठे धर्मों के माध्यम से काम करती हैं। बाइबल हमें बताती है कि जब लोग मूर्तियों की पूजा करते हैं तो वे दुष्टात्माओं की पूजा करते हैं। •[173] दुष्टात्माएँ उन लोगों की पूजा का जवाब देती हैं, जो लोग नहीं जानते कि वे किस चीज़ की पूजा कर रहे हैं। जैसे परमेश्वर के आराधक और अधिक परमेश्वर के समान बनते हैं और पवित्रता में प्रसन्न होते हैं वैसे ही दुष्टात्माओं के भक्त और अधिक बुरे बनते हैं और

[171] दानिय्येल 10:13, 20।

[172] मत्ती 4:9।

[173] व्यवस्थाविवरण 32:17, 1 कुरिन्थियों 10:20-21।

बुराई में प्रसन्न होते हैं। शायद सबसे दुष्टतम पूजा जो कभी हुई होगी वह यह है जब लोगों ने अपने बच्चों को दुष्टात्माओं के लिए बलिदान कर दिया। •[174]

शैतान और अन्य दुष्टात्माएँ लोगों के मन और व्यवहार पर पूरा नियंत्रण करने की कोशिश करते हैं। इसे "दुष्टात्मा का कब्ज़ा" कहा जाता है। कुछ लोगों ने अपने आप को इस तरह के कब्जे के लिए जान-बूझकर समर्पित किया है; शायद दूसरों ने ऐसा होने दिया बिना यह एहसास किये कि वे ऐसा कर रहे हैं। कुछ लोग इस स्थिति में धीरे धीरे प्रवेश करते हैं, यह सोचकर कि वे अपने स्वयं के प्रयोजनों के लिए उपयोग करने के लिए शक्तियाँ प्राप्त कर रहे हैं। एक ऐसा व्यक्ति जो बुरी आत्माओं का दास बन जाता है, वह आत्म-विनाश के लिए प्रेरित होता है, मन और भावनाओं की भयानक पीड़ाओं का कष्ट भुगतता है। •[175] केवल यीशु ही इस बंधन से एक व्यक्ति को बचा सकता है।

परमेश्वर की विजय

ऐसे देशों में जहां सुसमाचार का व्यापक रूप से प्रचार किया गया है वहाँ बुरी आत्माओं की गतिविधि आमतौर पर छिपा हुआ है। विडंबना यह है कि इन "सभ्य" देशों में लोग सबसे अधिक धर्मनिरपेक्ष हैं जो भी अलौकिक है उसकी हँसी उड़ाते हैं और आत्माओं के अस्तित्व को नकारते हैं। इस तरह के वातावरण में, बुरी आत्माएं खुले तौर पर कार्य नहीं करतीं, क्योंकि अगर वे सुसमाचार सुन चुके लोगों को डराती हैं तो बहुत से लोग छुटकारे और सुरक्षा के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ेंगे।

ऐसे देशों में जहां लोग सुसमाचार के बारे में ज़्यादा नहीं जानते वहाँ बुरी आत्माएं खुले तौर पर काम करती हैं। लोग नहीं जानते कि वे छुटकारे के लिए मसीह के पास जा सकते हैं इसलिए दुष्टात्माओं की शक्तियां उन्हें भयभीत करती हैं और उन्हें अधीनता में लाती हैं। वे आत्माओं की सेवा करते हैं, स्वेच्छा और खुशी से नहीं बल्कि भय से। सुसमाचार उद्धार और स्वतंत्रता के एक अद्भुत संदेश के रूप में आता है।

शैतान के लगातार हमले के कारण हम एक आत्मिक युद्ध में हैं। हमें यह याद रखने की चेतावनी दी गयी है कि हमारा युद्ध आत्माओं की दुनिया में है न कि शारीरिक दुश्मनों के

[174] भजन संहिता 106:37।

[175] मरकुस 5:2-5।

खिलाफ। •[176] हमें आत्मिक कवच पहनने के लिए कहा गया है ताकि हम स्वयं की रक्षा कर सकें।[177] हमें विजय का भरोसा हो सकता है क्योंकि शैतान परमेश्वर की शक्ति का सामना नहीं कर सकता जो हमारे अंदर है और जब हम शैतान का सामना करेंगे तो वह हमारे पास से भाग निकलेगा।[178]

?क्या शैतान परमेश्वर के विपरीत है?

शैतान मनुष्यों की वर्तमान, नश्वर अवस्था से कहीं अधिक शक्ति रखता है। हालांकि उसकी शक्ति परमेश्वर की तुलना में कुछ भी नहीं है। उसको परमेश्वर के विपरीत नहीं समझा जाना चाहिए कि वह सामर्थ्य में परमेश्वर के तुल्य है। कुछ दार्शनिकों का मानना है कि दुनिया में अच्छाई और बुराई की ताकतें लगभग बराबर हैं। यह सत्य से परे है। शैतान हर जगह मौजूद नहीं है, सभी चीजें नहीं जानता और गलतियां करता है। परमेश्वर आत्माओं का सृजनकर्ता है और वे उसे पराजित नहीं कर सकतीं। जब मनुष्य की परिक्षा का समय समाप्त हो जायेगा तो पापी मनुष्यों के साथ सभी दुष्ट आत्माओं का न्याय किया जायेगा, कैद किया जाएगा और दंडित किया जाएगा।

> "शैतान आपको हरा नहीं सकता अगर आप लगातार उसका सामना करते हैं। वह कितना भी ताकतवर क्यों न हो परमेश्वर कभी भी उसे उन मनुष्यों को हराने नहीं देता जो लगातार उसका सामना करते हैं। वह मनुष्य की इच्छा से जबरदस्ती नहीं कर सकता" (Adam Clarke, *Christian Theology*, ÏGood and Bad AngelsÐ- Ïमसीही धर्मशास्त्र," अच्छे और बुरे स्वर्गदूत")।

शैतान की हार का वादा बहुत पहले से ही किया जा चुका है। परमेश्वर ने साँप के सिर को कुचलने के लिए एक उद्धारकर्ता भेजने का वादा किया था।[179] यीशु हमें पाप पर विजय प्रदान करने और शैतान के कामों को नष्ट करने के लिए आया है। •[180] यीशु अपनी मृत्यु

[176] इफिसियों 6:12।

[177] इफिसियों 6:13।

[178] याकूब 4:7।

[179] उत्पत्ति 3:15।

[180] 1 यूहन्ना 3:8।

और पुनरुत्थान के द्वारा शैतान को मृत्यु पर शक्ति हासिल करने नहीं देता।[181] शैतान और अन्य बुरी आत्माओं का अंतिम और अनन्त भाग्य आग की झील है। •[182]

पहले से ही परमेश्वर ने शैतान क्या कर सकता है या क्या नहीं इस पर सीमाएँ लगाई हैं।[183] इसका मतलब है कि हमें डर में नहीं रहना है कि शैतान हमारे साथ क्या कर सकता है। जब तक परमेश्वर अनुमति नहीं देता तब तक कुछ भी नहीं हो सकता और वह जानता है कि हम कितना सह सकते हैं।

न केवल हमारा शैतान के हमले से बचाव होता है बल्कि हमारे पास शैतान के राज्य के खिलाफ परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने की सामर्थ्य होती है। यीशु ने न सिर्फ अपने चेलों को बल्कि प्रेरितों को भी दुष्ट आत्माओं को बाहर निकालने के लिए शक्ति दी थी। •[184] जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं तो ईश्वर अपनी सच्चाई को शक्ति देता है और सुसमाचार पर प्रतिक्रिया देने वाले शैतान से बचाता है।

नीचे दिए गए ब्लॉक में दी गई जानकारी की व्याख्या के लिए कक्षा का एक सदस्य चुना जा सकता है।

त्रुटियाँ जिनसे हमें बचना है: आत्माओं की दुनिया में गलत तरह की दिलचस्पी।

कुछ लोग आत्माओं की दुनिया से आकर्षित हो जाते हैं। वे स्वर्गदूतों का अध्ययन करना शुरू करते हैं और उनके साथ बातचीत करने का प्रयास कर सकते हैं। बाइबल कभी हमें स्वर्गदूतों से प्रार्थना करने के लिए या उनके साथ संबंध बनाने की कोशिश करने के लिए कभी नहीं कहता है। बाइबल हमें उनकी आराधना न करने के लिए या उनके बारे में और अधिक जानने की कोशिश करने के लिए जिसे हम समझने में सक्षम हैं उसके लिए चेतावनी देती है।[185]

यह और भी खतरनाक है यदि कोई व्यक्ति बुरी आत्माओं में बहुत रुचि लेता है। कुछ लोग अपनी शक्ति और जो चीजें वे करते हैं, उससे मोहित हो जाते हैं। ऐसे खेल हैं जो आत्माओं के साथ बातचीत करते हैं। आत्माओं से जानकारी प्राप्त करने के लिए लोगों का उपयोग करने के

[181] इब्रानियों 2:14, प्रकाशितवाक्य 1:18।

[182] मत्ती 25:41।

[183] अय्यूब 1:12, 2:6।

[184] लूका 10:17।

[185] कुलुस्सियों 2:18।

तरीके हैं। ईश्वर की शक्ति से उनका विरोध करने को छोड़कर हमें कभी भी बुरी आत्माओं के साथ शामिल नहीं होना चाहिये।

कुछ लोगों ने आत्मा की दुनिया के जटिल और यह कैसे काम करता है विस्तृत स्पष्टीकरण विकसित किए हैं। तथ्य यह है कि बाइबल ने हमें बहुत कुछ नहीं बताया है। हमें जो पता करने की आवश्यकता है वह परमेश्वर ने प्रकट किया है।

कक्षा को "मान्यताओं का कथन" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

मान्यताओं का कथन

परमेश्वर ने सभी आत्माओं को बनाया। पवित्र स्वर्गदूत परमेश्वर की आराधना करते हैं और विश्वासियों की रक्षा करते हैं। स्वर्गदूत अमर हैं, व्यक्तिगत प्राणी हैं जो बोल सकते हैं, आराधना कर सकते हैं और तर्क कर सकते हैं। उन्होंने नैतिक चुनाव किये हैं। शैतान और अन्य स्वर्गदूत पाप में पड़ गए और परमेश्वर और मनुष्यों के दुश्मन हैं। परमेश्वर शैतान की शक्ति को सीमित करता है और उसे अनन्तकाल के दण्ड के लिए अपराधी ठहराया है।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले, उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

1 पतरस 5:8-9, प्रेरितों के काम 12:7-11, मती 12:43-45, 2 कुरिन्थियों 11:13-15, लूका 8:27-35।

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब असाइनमेंट को पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

अनुशंसित पाठन

Lewis, C. S. *The Screwtape Letters.* New York:
Macmillan Co., 1968.

Wesley, John. ÏSatanÒs Devices.Ð(शैतान की युक्तियाँ) *Wesley's 52 Standard Sermons*. Salem, OH: Schmul Publishing, 1988.

आत्माएँ

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. स्वर्गदूतों को कब बनाया गया था?
2. स्वर्गदूत कितने समय तक जीवित रहते हैं?
3. हम कैसे जानते हैं कि स्वर्गदूतों के आमतौर पर भौतिक शरीर नहीं होते?
4. ऐसे कौनसे कारण हैं जिनसे हम जानते हैं कि स्वर्गदूतों का व्यक्तित्व होता है?
5. बाइबल में ऐसे कौन कौनसे शब्द हैं जो स्वर्गदूतों का उल्लेख करते हैं?
6. ऐसी क्या चीज़ है जो स्वर्गदूत विश्वासियों के लिए करते हैं?
7. बुरी आत्माओं की उत्पत्ति क्या है?
8. एक मूर्तिपूजक वास्तव में किसकी पूजा करता है?
9. शैतान और अन्य बुरी आत्माओं की अंतिम नियति क्या है?

पाठ 7
मसीहा

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) यीशु मसीहा है इसका क्या अर्थ है।
(2) "प्रभु यीशु मसीह" इस वाक्यांश के विश्वास का कथन।
(3) यीशु की मानवता का साक्ष्य और महत्व।
(4) यीशु के प्रभु होने का साक्ष्य और महत्व।
(5) पाप की क्षमा के लिए मसीहा की मृत्यु की पर्याप्तता।
(6) मसीह विश्वास के लिए पुनरुत्थान का महत्व।
(7) मसीहा के विषय में मसीह विश्वास का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक यह है कि विद्यार्थियों को यह सीखना है कि अन्य धर्मों के लोग मसीहा के विषय में क्या कहते हैं।

"मसीहा"

मुद्रित व्याख्यान

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद, समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन को देखिए।

प्रकाशितवाक्य 5:11-14 को एक साथ पढ़िए। यह लेख हमें यीशु के बारे में क्या बताता है?

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक? देखते हैं प्रश्न पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक । देखते हैं तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र में संदर्भ ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

बाइबल इस बात की भविष्यद्वाणी करती है कि अंत के दिनों में झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता आएंगे और कई लोगों को धोखा देंगे। बहुत से लोग झूठे या काल्पनिक मसीहों पर अपनी आशा लगा रहे हैं जो उनका उद्धार नहीं कर सकते। शायद आप इन दो झूठे मसीहों से मिलें, जो मॉर्मन और यहोवा विटनेस वाले उनसे आपका परिचय कराएंगें।

मॉर्मनों का यीशू

यदि कोई मॉर्मन कभी आपके दरवाजे पर दस्तक देता है तो वह उस यीशु के विषय में बताएगा जो लूसिफर का आत्म भाई है। यह यीशु उन अरबों आत्माओं में से एक है जिसे हमारे "स्वर्गीय पिता" और "स्वर्गीय माता" इस दुनिया में लाये। मॉर्मनों के अनुसार जब यीशु धरती पर रहा तब उसकी कई पत्नियां थीं जिनमें से एक मरियम मगदलीनी थी। उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद वह अमरीका के मूल निवासियों के पास प्रचार करने के लिए अमेरिका गया।

यहोवा विटनेस वालों का यीशु

यहोवा विटनेस वाले आपको बताएंगे कि यीशु मीकाईल है वह प्रधान स्वर्गदूत जो सबसे पहले रचा गया था और मनुष्य बनकर क्रूस पर मरने के बजाय उसे जलाकर मारा गया। उसे एक आत्म प्राणी के रूप में पाला पोसा गया जिसके दौरान वह फिर से प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल बना जबकि उसका शरीर गैसों में विलीन हो गया।

वास्तविक यीशु

मुझे यकीन है कि आप यह मानते हैं कि इन धर्म-संप्रदायों का यीशु बाइबल के यीशु से अलग है लेकिन क्या आप सच्चे बाइबल के यीशु का वर्णन कर सकते हैं? बहुत से अमेरिकी नहीं कर सकते। हाल के एक सर्वेक्षण में यह पता चला है कि हालाँकि 80% अमेरिकी यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानते हैं फिर भी केवल 40% ही विश्वास करते हैं कि वह परमेश्वर था और केवल 40% विश्वास करते हैं कि वह निष्पाप था। इससे पता चलता है कि लाखों लोगों की झूठे मसीह के विषय में गलत अवधारणा है जो उनका उद्धार नहीं कर सकता।

यह आपके लिए महत्वपूर्ण है कि आप यीशु के विषय में अपनी धारणाओं के बारे में निश्चित हो जायें ताकि आप धोखा न खाएं और आप उसके विषय में दूसरों को बता सकें।

अन्य धर्म यीशु के बारे में क्या सिखाते हैं? इस पर अधिक जानकारी के लिए "अन्य धर्म क्या कहते हैं" शीर्षक देखिए जो पाठ के अंतिम अनुभाग में है।

यीशु मसीह

? मसीहा के विषय में बाइबल में क्या भविष्यद्वाणियाँ हैं?

चार सुसमाचार यीशु को इस्राएल के अपेक्षित मसीहा के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मसीहा के विषय में कई बातों की भविष्यद्वाणियाँ की गईं थीं। वह राजा दाऊद का वंशज होगा और इसलिए राजा बनने के योग्य होगा। वह अपने लोगों को उत्पीड़न और बंधन से बचाएगा। उसका विशेष रूप से परमेश्वर द्वारा अपने कार्य को पूरा करने के लिए अभिषेक किया जाएगा। शब्द *मसीहा* का अर्थ है "अभिषिक्त।"

पुराने नियम में मसीहा के विषय में सबसे महत्वपूर्ण विवरण तब तक स्पष्ट नहीं थे जब तक नया नियम नहीं लिखा गया था। उसकी यह प्राथमिकता थी कि वह अपने लोगों को पाप से बचाए। •[186] उसका राज्य पृथ्वी पर आधारित नहीं था •[187] लेकिन आत्मिक और स्वर्गीय था, हालांकि अंततः उसका राज्य पूरी पृथ्वी पर फैल जाएगा।[188]

मसीहा शब्द एक इब्रानी शब्द था। इसका यूनानी तुल्यार्थक शब्द *क्रिसतोस* है जिससे हमें मसीहा *शब्द मिलता है।* वाक्यांश "यीशु मसीह" का उपयोग करने का अर्थ यह है कि हम ब्यान दे रहे हैं कि यीशु ही मसीहा है।

यीशु प्रभु है

शुरुआती कलीसिया के लोग *प्रभु* शब्द का इस्तेमाल यह कहने के लिए करते थे कि यीशु सर्वोच्च सामर्थ्य है। जब वे कहते थे कि "यीशु ही प्रभु है" तो उनका यह कहने का अर्थ था कि वह सब का प्रभु है, सृष्टि का निर्माता और परमेश्वर है। यह विश्वास का एक अनिवार्य कथन बन गया जिसने मसीह लोगों को दूसरों से अधिक प्रमुख बनाया क्योंकि केवल वे ही विश्वास करते थे कि मनुष्य यीशु जो धरती पर रहा वह सब का महान परमेश्वर था।

---

[186] मत्ती 1:21, लूका 1:74-75।

[187] यूहन्ना 18:36।

[188] फिलिप्पियों 2:10-11, प्रकाशितवाक्य 19:11-16, प्रकाशितवाक्य 20:6।

"प्रभु यीशु मसीह" से एक महान कथन बनता है क्योंकि वे इस बात का वर्णन करते हैं कि यीशु मसीहा है और वह परमेश्वर भी है। ये तीनों शब्द फिलिप्पियों 2:10-11 में हैं। ये आयतें हमें बताती हैं कि वह समय आएगा जब दुनिया में हर कोई मानेगा कि यीशु मसीह प्रभु है।

तीन विशेष दिन

यीशु के बारे में हमारी बुनियादी धारणाओं को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है जो ऐसे तीन विशेष दिनों से संबंधित हैं जिनमें हम खुशी मनाते हैं।

हम यीशु के जन्म के कारण बड़े दिन का जश्न मनाते हैं

बड़ा दिन यीशु मसीह के एक कुमारी से जन्म की खुशी मनाता है क्योंकि यीशु पवित्र आत्मा से जन्मा था। •[189] यद्यपि यीशु मनुष्य था, क्योंकि उसे एक महीला ने जन्म दिया था, फिर भी वह स्वयं परमेश्वर था, वह उस संसार का परमेश्वर था जिसमें उसने प्रवेश किया। यह आश्चर्यजनक है लेकिन सच है: जब यीशु एक शिशु था उसकी मां मरियम ने उसे गोद में उठाया जिसने स्वयं मरियम को बनाया था।

परमेश्वर का पुत्र शब्द का प्रयोग विश्वासियों और स्वर्गदूतों[190] के लिए भी किया जाता है लेकिन यीशु एक अद्वितीय तरीके से परमेश्वर का पुत्र है।[191] केवल वही है जिसका स्वभाव पूरी तरह से पिता के समान है। वह इतनी पूर्णता से पिता के स्वरूप में है कि वह पिता के समान परमेश्वर है। •[192]

परमेश्वर का स्वभाव और मानव स्वभाव एक साथ यीशु के व्यक्तित्व में आये। इसे *अवतार* कहा जाता है जिसका अर्थ है कि परमेश्वर मनुष्य की देह धारण करता है जिसमें वह एक मनुष्य बनता है। यीशु ही एकमात्र है जो हमारा उद्धारकर्ता बन सकता है क्योंकि वह सृष्टि में एकमात्र व्यक्ति है जो मनुष्य और परमेश्वर दोनों है।

---

[189] लूका 1:34-35।

[190] यूहन्ना 1:12, अय्यूब 1:6।

[191] यूहन्ना 3:16।

[192] इब्रानियों 1:2-3।

यीशु एक मनुष्य है।

नए नियम के यीशु को वास्तव में मनुष्य के रूप में पहचानना मुश्किल नहीं है। उसका एक मां के गर्भ मे गर्भधारण हुआ, वह बड़ा हुआ, उसने सीखा और एक व्यक्ति के रूप में विकसित हुआ। •[193] वह थका, सोया, परखा गया और पापों को छोड़कर,जो मनुष्य करते वह सब किया। यहाँ तक की उसकी मृत्यु भी हुई। उसकी पहचान मानव जाति में हुई क्योंकि वह हम में से एक था। •[194]

? यह क्यों महत्वपूर्ण है कि यीशु मनुष्य है?

क्योंकि यीशु मनुष्य है इसलिए (1) वह एक बलिदान के रूप में दुख उठा सकता था और जान दे सकता था।

क्योंकि यीशु मनुष्य है (2) उसका धार्मिक जीवन हमारे पापी जीवन का स्थान ले सकता है। पहले आदम ने जब पाप किया तो उसने पूरी मानव जाति का प्रतिनिधित्व किया और परमेश्वर से अलग हो गया। इससे सभी लोगों पर मृत्यु आयी। यीशु ने एक पवित्र जीवन जीया और परमेश्वर की सब अपेक्षाओं को पूरा किया। वह उन सभी को अनन्त जीवन देता है जो उसके साथ पहचाने जाते हैं। पवित्रशास्त्र में उसे अंतिम आदम कहा जाता है।[195]

क्योंकि यीशु मनुष्य है (3) वह हमारा याजक बन सकता है जो हमें परमेश्वर के सामने पेश करता है। हमारे मध्यस्थ के रूप में वह न सिर्फ हमारे लिए विनती करता है वह वास्तव में हम में से प्रत्येक का प्रतिनिधित्व करता है। यह आवश्यक था कि वह हमारे और परमेश्वर के बीच मेल कराने के लिए एक मनुष्य बना। •[196] याजक के रूप में उसकी भूमिका अनन्त उद्धार प्रदान करती है।[197] यीशु का मनुष्य बनना सुसमाचार का एक आवश्यक हिस्सा है। •[198]

---

[193] लूका 2:52।

[194] यूहन्ना 1:14।

[195] 1 कुरिन्थियों 15:22, 45-49, रोमियों 5:17-19।

[196] इब्रानियों 2:17।

[197] इब्रानियों 10:5-7।

[198] 1 यूहन्ना 5:1।

अधिक बाइबल के प्रमाण के लिए कि यीशु मनुष्य था, इस पाठ के अंत के करीब "यीशु के मनुष्य होने का बाइबल में प्रमाण" बॉक्स देखिए।

यीशु परमेश्वर है।

यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया।

यद्यपि बाइबल का यीशु सिर्फ एक मनुष्य नहीं है। वह सृष्टि का अनंत (असीम) ईश्वर भी है। यीशु ने खुद यह दावा किया। उसने कहा, "मैं और मेरा पिता एक हैं।"[199] जब उसने यह कहा यहूदियों ने उस पर पथराव करना शुरू कर दिया क्योंकि उन्होंने उसे यह कहते हुए समझा कि वह परमेश्वर के तुल्य है। क्या यीशु ने उन्हें यह कहा "नहीं, तुमने मुझे गलत समझा। मैं वास्तव में परमेश्वर नहीं हूँ!"? नहीं, यीशु ने उनके शब्दों की व्याख्या को स्वीकार किया। उसने सिखाया कि वह पिता परमेश्वर के तुल्य है।

जब यीशु ने कहा, "पहले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं, मैं हूं,"[200] वह निर्गमन 3:14 में सृष्टि का स्वयं विद्यमान परमेश्वर होने का दावा कर रहा था।[201] यहूदियों ने उस पर इस दावे के लिए भी पत्थराव करने की कोशिश की।[202]

धरती पर यीशु ने ईश्वरीय कार्य किये।

जब यीशु धरती पर था तब उसने ईश्वरीय कार्य किये। उसने अनंत जीवन दिया।•[203] उसने पापों को माफ किया।[204] ये ऐसे कार्य हैं जो केवल परमेश्वर ही कर सकता है।

जब यीशु ने लकवा मारे हुए आदमी के पापों को क्षमा किया तो उसने यह साबित करने के लिए उस आदमी को चंगा किया कि "उसके पास पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का सामर्थ्य है।"[205] एक कार्य दूसरे का प्रमाण था जिससे यह स्पष्ट हुआ कि यीशु ने चंगाई के चमत्कार उतने साधारण तरीके से नहीं किये थे जितने एक परमेश्वर से अभिषक्त भविष्यद्वक्ता ने

---

[199] यूहन्ना 10:30।

[200] यूहन्ना 8:58।

[201] निर्गमन 3:14।

[202] यूहन्ना 8:59।

[203] यूहन्ना 10:28।

[204] मरकुस 2:10।

[205] मरकुस 2:10-12।

किये थे। यीशु के पास क्षमा करने और चंगा करने के लिए ईश्वरीय अधिकार और सामर्थ्य था।

"मैं ... एक ही प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करता हूँ जो परमेश्वर का एकमात्र पुत्र है; जो पूरी सृष्टि से पहले अपने पिता से उत्पन्न हुआ, परमेश्वर ही परमेश्वर, ज्योतियों की ज्योति, जो सच्चा ईश्वर है, इकलौता पुत्र जिसे बनाया नहीं गया; जो पिता के समान है; जिसके द्वारा सभी वस्तुएँ उत्पन्न हुईं"(निकिन पंथ)।

उसने लाजर को यह कहके पुनर्जीवित किया कि "मैं पुनरुत्थान और जीवन हूं।"[206] यह एक और ईश्वरीय कार्य था जिसके साथ एक ईश्वरीय दावा भी था। केवल परमेश्वर ही जायज तौर पर पुनरुत्थान *होने* का दावा कर सकता है क्योंकि यह परमेश्वर का सामर्थ्य ही है जो किसी मरे हुओं को जिला सकता है। यीशु ने "जीवन दाता" होने का दावा किया और फिर लाजर को जीवन दिया, यह दर्शाने के लिए कि जो होने का वह दावा करता है वह वास्तव में वही है। इस घटना में यीशु ने दर्शाया कि वह अन्य भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों से जिन्होंने परमेश्वर के सामर्थ्य से मृतकों को जीवित किया था, भिन्न है। इनमें से किसी ने यह दावा नहीं किया था कि उनमें चमत्कार करने का सामर्थ्य है। वे सिर्फ परमेश्वर के औज़ार थे। यूहन्ना 5:21 में यीशु ने कहा कि वह वैसे ही मरे हुओं को जिलाता है जैसे पिता मरे हुओं को जिलाता हैं।

जब यीशु ने अपने चमत्कार किए तो उसने "अपनी महिमा को प्रकट किया,[207] " वह महिमा जो पिता के एकमात्र पुत्र की है, अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण"।[208] ये चमत्कार परमेश्वर के पुत्र की महिमा के प्रमाण थे जिससे यह साबित हुआ कि वह ईश्वरीय है।

यीशु सृष्टिकर्ता और निर्वाहक है।

प्रेरित यूहन्ना और पोलुस के अनुसार यीशु ने सब कुछ रचा और सब कुछ सम्भालता है और उसके लिए सब कुछ मौजूद है। •[209] निश्चित यह किसी के बारे में नहीं कहा जा

"जैसे पिता इस अभिव्यक्ति का उपयोग करता है, मैं हूं, वैसे ही मसीह भी करता है, क्योंकि यह उसके उस निरंतर अस्तित्व को दर्शाता है जो समय से प्रभावित नहीं होता" (John Chrysostom)।

[206] यूहन्ना 11:25।

[207] यूहन्ना 2:11।

[208] यूहन्ना 1:14।

[209] यूहन्ना 1:3, कुलुस्सियों 1:17।

सकता बल्कि केवल परमेश्वर के लिए।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि यीशु परमेश्वर है।

? हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण क्यों है कि यीशु परमेश्वर है?

क्योंकि यीशु परमेश्वर है (1) उसके मृत्यु के बलिदान का अनंत मूल्य है - जो कि दुनिया के पापों की माफी के लिए पर्याप्त है। क्योंकि वह परमेश्वर है (2) उसके पास हमारा उद्धार करने का सामर्थ्य है; वह मार्ग, सत्य और जीवन है। क्योंकि वह परमेश्वर है (3) हमें उसकी उस प्रकार आराधना करनी चाहिए जिस प्रकार हम पिता की आराधना करते हैं।

अगर हम यीशु को परमेश्वर के रूप में देखने में विफल रहते हैं तो हम उसका परमेश्वर के रूप में आदर नहीं करते जो यीशु बताते हैं कि हमें अवश्य करना चाहिए। उसने कहा कि "जैसे वे पिता का आदर करते हैं वैसे सभी को पुत्र का आदर भी करना चाहिए।"[210] अगर हम पिता और पुत्र दोनों का परमेश्वर के रूप में आदर नहीं करते तो हमारा उद्धार नहीं हो सकता।

मसीहियत न केवल यीशु की शिक्षाओं और कार्यों पर आधारित है बल्कि एक विशिष्ट व्यक्ति यीशु पर आधारित है। वह केवल उद्धार के संदेश का शिक्षक नहीं है। वह स्वयं उद्धारकर्ता है और केवल वह - परमेश्वर और जन - उद्धारकर्ता हो सकता था।

और इसके अलावा अधिक बाइबल के प्रमाण के लिए कि यीशु परमेश्वर है, इस अध्याय के अंत में "यीशु के परमेश्वर होने का प्रमाण" बॉक्स देखिए।

➧ यीशु एक ही व्यक्ति है।

यद्यपि यीशु का स्वभाव पूरी तरह से परमेश्वर और मनुष्य दोनों का था फिर भी वह एक साथ दो व्यक्ति नहीं था। उसके दोनों स्वभाव उसको एक व्यक्ति बनाते हैं जो एकदम सही सामंजस्य हैं। यीशु एक ईश्वर-पुरूष है और यीशु के हर कार्य को उसकी पूर्ण मानवता और पूर्ण दिव्य प्रकाश में समझा जाना चाहिए।

---

[210] यूहन्ना 5:23।

कलीसिया ने हमेशा यह सिखाया है कि यीशु के दोनों स्वभाव एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते हैं फिर भी दोनों स्वभाव एक-दूसरे से मिश्रित नहीं होते हैं जिससे एक-दूसरे का स्वभाव अपनी विशेषताओं को खो दें।[211]

पवित्रशास्त्रों की प्रकृति और यीशु की प्रकृति की तुलना करना उपयोगी हो सकता है। यीशु की तरह बाइबल पूरी तरह से दिव्य और मानवीय है। एक मानवीय पुस्तक होने के नाते, गलतियों को छोड़कर इसमें अन्य मानवीय पुस्तक की विशेषताएं हैं। दैवीय होने के नाते यह उन दिव्य विशेषताओं को दर्शाता है जो कोई अन्य पुस्तक नहीं कर सकती। उसी तरह यीशु मानव और दिव्य गुणों दोनों को दिखाता है। तथ्य यह है कि बाइबल ईश्वर के गुणों को दिखाती है फिर भी यह मानवीय किताब है। इसी तरह तथ्य यह है कि यीशु अपने दिव्य काम करता है फिर भी यह उसे कम मानव नहीं बनाता है। और तथ्य यह है कि यीशु अपने मानवता में काम करता है जो उसे कम दिव्य नहीं बनाता।

सिद्धांत की सामान्य त्रुटियां

जब लोग मसीहा के बारे में बात करते हैं तो ये सिद्धांतों की सबसे आम त्रुटियां हैं: (1) इससे इन्कार करना कि यीशु परमेश्वर है, (2) इससे इन्कार करना कि यीशु मनुष्य है, (3) उसके ईश्वरत्व या मानवता को कम समझना जैसे कि वे महत्वहीन है और (4) मसीह के व्यक्तित्व की एकता को नकारना।

यह त्रुटियां परमेश्वर के अवतरण से इन्कार करती हैं। अवतरण हमारे उद्धार के लिए आवश्यक था इसलिए यदि कोई व्यक्ति अवतार से इन्कार करता है तो वह झूठे सुसमाचार और उद्धार के झूठे साधनों के साथ समाप्त होगा।

नीचे दिए गए ब्लॉक में दी गई जानकारी की व्याख्या के लिए कक्षा का एक सदस्य चुना जा सकता है।

[211] चल्ल्स्डोनियन पंथ (ए.डी. 451) कहता है कि मसीहा के दो रूप अपरिवर्तनीय, अविभाजित, अविभाज्य, और असंबद्ध हैं।

अन्य धर्म क्या कहते हैं

यहोवा विटनेस वाले कहते हैं कि यीशु एक मनुष्य था। उनका मानना है कि वह सबसे महान व्यक्ति था जो इस धरती पर रहा, लेकिन वह केवल एक मनुष्य था। यही कारण है कि वे यह विश्वास नहीं करते कि उसकी मृत्यु हमारे उद्धार के लिए पर्याप्त बलिदान है। उनके पास कार्यों के द्वारा उद्धार का सुसमाचार है। वे मसीह होने का दावा तो करते हैं लेकिन उनका एक अलग मत है।

मॉर्मन मानते हैं कि यीशु मूल रूप से परमेश्वर द्वारा बनायी गयी आत्मा थी जो लूसिफर के लिए एक भाई के समान था। यीशु को मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर जन्म लेने के लिए भेजा गया था। मॉर्मन यह नहीं मानते कि यीशु परमेश्वर है।

मुसलमान मानते हैं कि यीशु परमेश्वर द्वारा भेजा गया एक भविष्यद्वक्ता था। वे यह नहीं मानते कि वह परमेश्वर है या कोई त्रिएकता है। वे यह नहीं मानते हैं कि उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था या वह मरे हुओं में से जी उठा।

हिंदू और बौद्ध मानते हैं कि यीशु एक पवित्र मनुष्य था जिसने चमत्कार किए। वह उनके धर्म के लिए महत्वपूर्ण नहीं है। वे उस परमेश्वर में विश्वास नहीं करते जो सृष्टिकर्ता और परमेश्वर है इसलिए वे विश्वास नहीं करते कि यीशु परमेश्वर का अवतार है।

हम उस प्रायश्चित के कारण फसह मनाते हैं।

फसह वह दिन है जिसमें यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। इस भयानक और अद्भुत दिन पर यीशु ने क्रूस पर हमारे पापों को उठा लिया। वह हमारे पापों के लिए बलिदान के रूप में मरा गया ताकि हम क्षमा किये जा सकें।

एक बलिदान आवश्यक था।

एक बलिदान की आवश्यक्ता थी ताकि परमेश्वर हमें क्षमा करें और फिर भी धर्मी और पवित्र रहें। यह सिद्धांत पुराने नियम में बलिदानों के द्वारा सिखाया गया था।[212] यदि परमेश्वर बिना कोई आधार के पाप क्षमा करता तो इससे यह प्रकट होता कि वह धर्मी नहीं है

[212] इब्रानियों 9:22।

और पाप एक गंभीर बात नहीं है। लेकिन कोई भी क्रूस पर यीशु की मृत्यु को देखकर यह नहीं कह सकता कि पाप एक गंभीर बात नहीं है। उसके बलिदान ने हमारे पापों की क्षमा के लिए आधार प्रदान किया।

केवल यीशु ही एक पर्याप्त बलिदान है।

? ऐसा क्यों है कि यीशु ही हमारे पापों के लिए बलिदान हो सकता है?

परमेश्वर के न्याय और पाप की गंभीरता के लिए एक बहुत बड़े बलिदान की आवश्यक्ता थी। •[213] हमने एक अनंत परमेश्वर के खिलाफ पाप किया है जिससे हमारे ऊपर असीम पाप आता है। यही कारण है कि केवल यीशु ही हमारे लिए बलिदान हो सकता था। वह बलिदान के योग्य था क्योंकि वह परमेश्वर है और वह मनुष्य भी है। उसके ईश्वरत्व के कारण वह पापरहित था और उसके बलिदान का मूल्य अनंत था। उसकी मानवता के कारण वह हमारा प्रतिनिधित्व कर सकता था और हमारे स्थान पर जान दे सकता था।

यीशु का लहू उसके बलिदान की मृत्यु को दर्शाता है।

परमेश्वर ने बलिदानों को स्थापित करने के द्वारा प्रायश्चित के बारे में लोगों को सिखाया। याजकों ने जानवरों का वध किया और उनकी मौत को दर्शाने के लिए उनका लहू चढ़ाया। इब्रानियों की पुस्तक में लिखा है कि लहू के बिना पापों की कोई माफी नहीं है।[214]

परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा दी कि वे लहू को अहमियत दें क्योंकि यह उस प्राणी के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है।[215] "लहू बहाना" का अर्थ हत्या करना है।[216] मंदिर में इस्तेमाल होने वाले लहू का अर्थ था कि एक पशु की हत्या की गई है।

मसीहा की मृत्यु एक अंतिम बलिदान थी जिससे सभी के लिए हर पीढ़ी में उद्धार उपलब्ध हुआ। •[217] उसने स्वर्ग में अपने लहू को पेश किया जो उसके बलिदान की मृत्यु को

---

[213] इब्रानियों 10:4।

[214] इब्रानियों 9:18-22।

[215] लैव्यवस्था 17:11, 14।

[216] उत्पत्ति 9:5-6।

[217] इब्रानियों 10:4, 12।

दर्शाता है। •[218] यीशु का लहू हमें उद्धार प्रदान करता है क्योंकि उसने अपनी जान एक बलिदान के रूप में दी ताकि हमारा उद्धार हो सके।

यीशु ने अपनी जान किसी अन्य तरीके के बजाय क्रूस पर क्यों दी? पुराने नियम के समय में यदि किसी को पेड़ पर लटकाकर मारा जाता था तो यह परमेश्वर के श्राप का संकेत होता था।[219] प्रेरित पौलुस हमें बताता है कि यीशु को सूली पर चड़ाकर मारा गया जो यह दर्शाता है कि उसने परमेश्वर का श्राप अपने ऊपर लिया।

➧ यीशु परमेश्वर और मनुष्य को एक साथ लाया।

यीशु दो अलग-अलग दलों के पक्षों के बीच मेल कराने आया - परमेश्वर और मनुष्य। मध्यस्थ के रूप में यीशु ने एक ही समय में दोनों पक्षों को दर्शाया। परमेश्वर के रूप में वह मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रतिनिधि बना। मनुष्य के रूप में वह परमेश्वर के लिए मनुष्य का प्रतिनिधि बना। दोनों पक्षों का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व करते हुए यीशु मनुष्य और परमेश्वर को एक साथ लाया। उसने वह सब किया जो प्रत्येक पक्ष का मेल मिलाप करने के लिए करना था।

पुनरुत्थान के कारण हम फसह मनाते हैं

फसह मनाने के कई पारंपरिक तरीके हैं लेकिन बहुत से लोग उन चीजों का अर्थ नहीं जानते जो वे करते हैं और शायद उन्हें इस बात का पता न हो कि फसह के विषय में महत्वपूर्ण बात क्या है। क्रूस पर चढ़ाये जाने के तीसरे दिन यीशु इतवार की सुबह कब्र से जी उठा। उसने यह दर्शाया कि उसके पास पाप, मृत्यु और शैतान पर अधिकार है। उसने न केवल हमारी मृत्यु को उठाया बल्कि जीवन के साथ इस पर विजय प्राप्त की। क्योंकि वह विजयी था इसलिए हम भी हो सकते हैं!

➧ यीशु शारीरिक रूप से जी उठा।

यीशु ने एक बार यहूदियों से कहा, "इस मंदिर को ढा दो और तीन दिनों में मैं इसको खड़ा कर दूँगा।" यद्यपि यहूदियों ने सोचा कि वह उस मंदिर का जिक्र कर रहा था जिसको हेरोदेस ने बनाया था लेकिन यूहन्ना का सुसमाचार बताता है कि यीशु वास्तव में अपने शरीर

---

[218] इब्रानियों 9:12, 24

[219] व्यवस्थाविवरण 21:23।

का जिक्र कर रहा था।[220] सभी सुसमाचारो में यह तथ्य है कि यीशू के दफनाये जाने के तीन दिन बाद उसकी कब्र खाली थी। यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बाद स्वयं को अपने चेलों को प्रकट किया, "मुझे अपने हाथों से छूओ और देखो क्योंकि आत्मा की मांस और हड्डियां नहीं होती जैसे तुम देखते हो कि मेरी हैं।"[221] वह यह साबित कर रहा था कि वह शारीरिक रूप से मृतकों में से जी उठा है।

? इसका क्या प्रभाव होता अगर यीशु मृतकों में से जी न उठता?

(1) यीशु के शारीरिक पुनरुत्थान ने पाप और मृत्यु पर उसकी पूर्ण विजय को दर्शाया।[222]

(2) यीशु के शारीरिक पुनरुत्थान से साबित हुआ कि वह वही था जो उसने होने का दावा किया था।[223] इस प्रकार यह सुसमाचार भी सिद्ध हुआ। वे लोग जो यीशु के मृतकों में से जी उठने से इन्कार करते हैं वे सुसमाचार से भी इन्कार करते हैं।[224]

(3) यीशु के जी उठने से हमें आश्वासन मिलता है कि हम भी मृतकों में से जी उठेंगे। यीशु ने वादा किया कि वह मरे हुओं में से जी उठेगा लेकिन यह तब तक अविश्वसनीय होगा जब तक कि वह खुद न जी उठे।[225] हमारी यीशु के समान महिमान्वित देहें होंगी जब हम जिलाए जाएँगे।[226]

यीशु अभी भी मनुष्य है।

पुनरुत्थान यह दर्शाता है कि अवतार स्थायी है। यीशु हमेशा मनुष्य और ईश्वरीय दोनों रहेगा। परमेश्वर ने मानव स्वभाव को अनंत काल के लिए अपने स्वभाव में जोड़ा है ताकि वह अपने प्राणियों का खुद के साथ प्रेम संबंध में पुनःस्थापन कर सके। यीशु, अभी भी

---

[220] यूहन्ना 2:19-21।

[221] लूका 24:39।

[222] प्रकाशितवाक्य 1:17-18, कुलुस्सियों 2:14-15।

[223] यूहन्ना 2:18-21, मत्ती 17:22-23।

[224] 1 कुरिन्थियों 15:17।

[225] यूहन्ना 5:28-29।

[226] 1 यूहन्ना 3:2।

परमेश्वर-मनुष्य, अब पिता के साथ हमारी मध्यस्थता करता है[227] और एक दिन हमें स्वर्ग ले जाने के लिए वापस आएगा।[228]

जो वह है और जो उसने किया इसके कारण हम यीशु की आज्ञा का पालन करते हैं।

विश्वासी होने के नाते हम मसीह के साथ दैनिक संबंध में रहते हैं। वह न केवल इतिहास का एक व्यक्ति है और न केवल स्वर्ग में परमेश्वर है बल्कि वह हमारे साथ मौजूद है। उसने हमेशा अपने शिष्यों के साथ रहने का वादा किया।[229]

वह कलीसिया में एक विशेष तरीके से मौजूद है। वह कलीसिया का सर है और कलीसिया को उसकी देह कहा जाता है।[230] वह कलीसिया का मार्गदर्शन करता है, इसे बनाये रखता है और इसकी ज़रुरतें पूरी करता है। •[231]

एक व्यक्ति जो सच्चाई को स्वीकार करता है जिसे हमने यीशु के बारे में बताया है उसे विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ उस सच्चाई का जवाब देना होगा। आप दूसरों की नीचे दी गयी प्रार्थना से विश्वासी बनने में मदद कर सकते हैं।

> पिता मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने मुझसे इतना प्रेम किया कि आपने अपने बेटे यीशु को मेरे लिए इस संसार में भेजा। मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु पाप रहित ईश्वर और मनुष्य है जो मरा और फिर जीवित हो गया इसलिए मेरे पाप क्षमा किये जा सकें और आपके साथ संबन्ध पुनःस्थापित हो सके। मैं उन पापों से पश्चाताप करता हूँ जो मैंने किये हैं। मैं जानता हूँ कि यीशु मेरे पापों के लिए क्रूस पर चढ़ा। अब मैं उन सब बातों को छोड़ता हूँ जो मैं जानता हूँ कि गलत हैं और मैं यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करता/करती हूँ। अब से मेरी अगुवाई कीजिए। मैं सदा के लिए आप के लिए जीऊँगा/जीऊँगी! मुझे क्षमा करने के लिए धन्यवाद। मैं आपसे प्रेम करता/करती हूँ। आमीन।

छात्रों को "विश्वास का कथन" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

---

[227] रोमियों 8:34।

[228] 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17।

[229] मत्ती 28:20।

[230] इफिसियों 1:22-23।

[231] कुलुस्सियों 2:19।

विश्वास का कथन

यीशु मसीहा और सब का प्रभु है, एक कुंवारी से पैदा हुआ परमेश्वर का पुत्र है जिसमें मनुष्य और परमेश्वर का स्वभाव है। उसने पाप रहित जीवन जिया और एक बलिदान के रूप में अपनी जान दी ताकि हमारे पाप क्षमा हो सकें। वह मरे हुओं में से जी उठा और जब वह वापस आयेगा तब सब विश्वासियों को जिलाएगा। उसका राज्य सार्वभौमिक है और उसका कोई अंत नहीं है।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

मरकुस 1:1-12, यूहन्ना 5:19-26, यूहन्ना 6:44-51, यूहन्ना 8:51-59, प्रकाशितवाक्य 1:12-18, प्रेरितों के काम 2:22-36

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब इस असाइनमेंट को पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

नीचे दिए गए दो सूचना के ब्लॉक वैकल्पिक हैं। कक्षा अगर इन बिंदुओं के लिए और अधिक बाइबल के प्रमाण चाहती है तो कक्षा उन्हें पढ़ सकती है।

यीशु की मानवता का पवित्रशास्त्र में प्रमाण

यीशु हव्वा का वंशज था (उत्पत्ति 3:15) अब्राहम की संतान था (उत्पत्ति 22:18 – प्रेरितों के काम 3:25 से तुलना कीजिए), एक स्त्री से जन्मा (गलातियों 4:4), मरियम से जन्मा (मत्ती 1:21-25) उसे मनुष्य का पुत्र कहा गया (मत्ती 13:37) और एक साधारण परिपक्वता की प्रक्रिया से गुजरा (लूका 2:40, 52)।

जब वह अपने गृह नगर में वापस लौटा तो लोगों की प्रतिक्रिया से पता चलता है कि उसका बचपन सामान्य था (मत्ती 13:54-56)

उसकी एक मनुष्य की तरह आज्ञा मानने के लिए देह थी (इब्रानियों 10:5- 9); वह मांस और लहू से बना (इब्रानियों 2:14); वह हमारे जैसे ही बनाया गया था ताकि वह हमारे जैसे दुख उठा सके (इब्रानियों 2:10-18); वह पीड़ा के माध्यम से परिपूर्ण हुआ (इब्रानियों 2:9-10); और वह मानव प्रलोभनों के अधीन था (इब्रानियों 4:15)।

उसने मनुष्य का रूप लिया (फिलिप्पियों 2:6-8)।

वह परमेश्वर का शाश्वत वचन था, उसने देह धारण की और पृथ्वी पर रहा (यूहन्ना 1:14)।

यीशु की मानवता मसीह विश्वास का एक मूलभूत कथन है (1 यूहन्ना 1:14, 4: 2-3)।

यीशु के ईश्वरत्व का पवित्रशास्त्र से संबन्धित प्रमाण

तीन तरीके हैं जिनसे सिद्ध होता है कि यीशु परमेश्वर है: (1) उसे परमेश्वर कहा जाता है, (2) उसमें परमेश्वर के गुण हैं और (3) उसे परमेश्वर की भूमिकाएँ निभाते हुए देखा गया है।

यीशु परमेश्वर कहलाता है

यूहन्ना 1:1, 14, बताता है कि अनन्त वचन परमेश्वर था। यूहन्ना 12:41 बताता है कि यशायाह ने यीशु को देखा। प्रेरितों के काम 20:28 बताता है कि परमेश्वर की कलीसिया उसके स्वयं के लहू द्वारा खरीदी गयी। रोमियों 9:5 बताता है कि मसीहा आया जो सदा के लिए आशीषित परमेश्वर है। तीतुस 2:13 उसे हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के रूप में संदर्भित करता है। यशायाह 7:14 बताता है कि उसके नाम का अर्थ है कि "परमेश्वर हमारे साथ है।" यशायाह 9:6 कहता है कि उसका नाम पराक्रमी परमेश्वर रखा जाएगा। 1 तीमुथियुस 3:16 बताता है कि परमेश्वर देह में प्रकट हुआ, उसका प्रचार हुआ और महिमा में ऊपर उठाया गया। यूहन्ना 10:30, 33 में यीशु ने कहा कि वह पिता के समान है। यूहन्ना 5:17-18 में यहूदियों को पता था कि उसने कहा कि वह परमेश्वर के बराबर है। यूहन्ना 14:9 में उसने कहा, "अगर तुमने मुझे देखा है तो तुमने पिता को देखा है।" यूहन्ना 20:28 में थोमा ने उसके घावों को देखा और कहा, "मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर" और यीशु ने उन लोगों को आशीष दिया जो विश्वास करते हैं। यूहन्ना 8:58 में उसने स्वयं को मैं हूं कहा और यहूदी जानते थे कि यह परमेश्वर होने का दावा था। प्रकाशितवाक्य 1:8, 11, 17-18 में उसने सबका आदी और अंत होने का दावा किया और यशायाह 44:6 दर्शाता है कि यह शब्द परमेश्वर के लिए है। इब्रानियों 1:2-3

हमें बताता है कि वह पूर्ण रूप से पिता का स्वरूप है। इब्रानियों 1:8 में, उसे परमेश्वर के तौर पर संबोधित किया जाता है।

यीशु में परमेश्वर की विशेषताएं हैं

मत्ती 18:20 में यीशु ने कहा कि जहाँ दो या तीन जन इकट्ठे होते हैं वहाँ वह मौजूद होता है। मत्ती 28:20 में उसने विश्वासियों के साथ हमेशा रहने का वादा किया।

इब्रानियों 1:3 बताता है कि वह सब कुछ अपने सामर्थ्य से बनाये रखता है। फिलिप्पियों 3:21 कहता है कि वह सब कुछ स्वयं के अधीन करता है।

इब्रानियों 13:8 हमें बताता है कि वह सदा एक सा है। इब्रानियों 1:12 यह भी कहता है कि वह हमेशा के लिए एक समान है और परमेश्वर के बारे में भजन संहिता 102:25-27 का उद्धरण है।

यूहन्ना 2:24-25 हमें बताता है कि वह सभी लोगों को जानता था और उसे पता था कि उनके मनों में क्या है। यूहन्ना 10:15 में उसने यह दावा किया कि जैसे वह पिता को जानता है वैसे ही पिता उसे जानता है।

यीशु के पास परमेश्वर की भूमिकाएँ हैं

यीशु सृजनकर्ता है (कुलुस्सियों 1:16, इब्रानियों 1:10)।

यीशु ने पाप क्षमा किये (लूका 5:20-24, मरकुस 2:10, 7:48)।

यीशु अंतिम न्याय के समय में न्यायी होगा (मत्ती 25:31-46, 2 कुरिन्थियों 5:10)।

यीशु को पिता के समान आराधना दी जाती है (यूहन्ना 5:22-23, इब्रानियों 1:6, प्रकाशितवाक्य 5:12-13)।

अनुशंसित पठन

Strobel, Lee. *The Case for Christ.* (मसीह के लिए मुकद्दमा) Grand Rapids: Zondervan, 1998.

Zacharias, Ravi. *Jesus Among Other Gods* (यीशु अलग देवताओं के बीच में) Nashville: Word Publishing, 2000.

मसीहा

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. मसीहा की प्राथमिकता क्या थी?
2. प्रारंभिक कलीसिया का क्या अर्थ था जब उन्होंने कहा कि "यीशु प्रभु है"?
3. यीशु कैसे विशिष्ट रूप से परमेश्वर का पुत्र है?
4. इसका क्या अर्थ है कि यीशु एक अवतार है?
5. यह क्यों महत्वपूर्ण है कि यीशु मनुष्य है? (तीन कारण)
6. हमारे लिए यह समझना क्यों महत्वपूर्ण है कि यीशु परमेश्वर है?
7. एक बलिदान की आवश्यक्ता क्यों थी?
8. यीशु किसी अन्य तरीके के बजाय क्रूस पर क्यों मरा?
9. यीशु के पुनरुत्थान का क्या महत्व है?

पाठ 8
उद्धार

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) क्रूस कुछ लोगों के लिए अपमान की बात क्यों है।
(2) पापी की स्थिति।
(3) क्षमा के लिए प्रायश्चित की आवश्यकता।
(4) पश्चाताप का अर्थ।
(5) उद्धार के विश्वास के तत्व।
(6) प्रायश्चित्त सभी लोगों और सभी पापों के लिए पर्याप्त क्यों है।
(7) उद्धार के निजी आश्वासन का आधार।
(8) सामान्य रूप में सृष्टि की मुक्ति।
(9) उद्धार के बारे में मसीह धारणाओं का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक यह है कि विद्यार्थियों को पश्चाताप के बिना धर्म की त्रुटि को समझना है।

"उद्धार"

मुद्रित व्याख्यान

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद, समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन पर जाइए।

भजन संहिता 85 को एक साथ पढ़िए। यह लेखांश हमें उद्धार के विषय में क्या बताता है?

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक । देखते हैं तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र संदर्भ

ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

क्रूस

सबसे महत्वपूर्ण मसीह चिह्न क्रूस है। क्रूस सबसे महत्वपूर्ण मसीह धारणाओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह उस घटना को दर्शाता है जो पूरे इतिहास का केंद्र है। यह मसीह विश्वास और दूसरे धर्मों के बीच के अंतर को दर्शाता है।

क्रूस कई लोगों के लिए एक रहस्य है। वे समझ नहीं पाते कि यीशु क्यों मरा? अगर वे यह सुनते भी हैं कि वह इसलिए मरा क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है और हमारा उद्धार करना चाहता है, वे समझ नहीं पाते कि ऐसा होने की आवश्यकता क्यों थी। वे सोचते हैं कि, "अगर परमेश्वर हमें क्षमा करना चाहता है, तो उसने सिर्फ ऐसा कर क्यों नहीं दिया?"

> "परमेश्वर के सामने हर पापी व्यक्ति का न्याय कैसे होगा, यह सवाल हर व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि जब तक हम परमेश्वर के शत्रु बने रहते हैं तब तक कोई सच्ची शांती या निश्चित आनंद नहीं होगा, न ही इस समय में और न ही अनंतकाल में। फिर भी इस महत्वपूर्ण सवाल के महत्व को कितना कम समझा गया है! इसके विषय में बहुत लोगों के भ्रमित विचार रहे हैं! (John Wesley, उपदेश में "Justification by Faith" - " विश्वास द्वारा धर्मी ठहरना")।

क्रूस के बारे में भ्रम आरंभ से ही शुरू हो गया था जब पहले के मसीह लोगों ने सुसमाचार प्रचार करना शुरू किया। •[232] यहूदियों ने सोचा कि परमेश्वर खुद को सामर्थ्य में प्रकट करेगा। उन्होंने सोचा कि जिस उद्धार की उन्हें आवश्यकता है वह उत्पीड़न से छुटकारा है लेकिन क्रूस से कमजोरी और असफलता दिखाई पड़ी। यूनानियों ने सोचा कि परमेश्वर खुद को बुद्धि में प्रकट करेगा। उन्होंने सोचा कि जिस उद्धार की उन्हें आवश्यकता है वह इस बात का स्पष्टीकरण है कि कैसे जीवन का सर्वश्रेष्ठ लाभ उठाया जाए लेकिन क्रूस से मूर्खता और असफलता दिखाई पड़ी।

? कुछ लोग क्रूस से क्यों अपमानित होते हैं?

क्रूस कई लोगों के लिए अपमान की बात है। बहुत से लोग धार्मिक होने की इच्छा

[232] 1 कुरिन्थियों 1:22-23।

रखते हैं। वे कुछ बातों पर विश्वास करने, धार्मिक रीति-रिवाजों का अभ्यास करने और सलाह लेने की इच्छा रखते हैं। लेकिन वे इस विचार से नाराज़ होते हैं कि वे ऐसे पापी हैं जिनकी क्षमा के लिए क्रूस का होना आवश्क था। वे उसी प्रकार निर्दोष ठहरना चाहते हैं जिस प्रकार वे हैं। •[233] क्रूस से वे अपमानित होते हैं क्योंकि इसका अर्थ यह है कि वे पापी हैं जिन्हें क्षमा की आवश्यकता है।

क्रूस पर यीशु के बलिदान की मृत्यु को समझने के लिए, हमें यह समझना होगा कि पापी मनुष्य की स्थिति से और परमेश्वर के पवित्र स्वभाव से बड़ी दुविधा पैदा हुई। हमें यह समझना होगा कि प्रायश्चित से परमेश्वर के लिए क्षमा करना कैसे संभव हुआ।

मनुष्य की स्थिति

आदम के पाप के कारण जब कोई पैदा होता है तो प्रत्येक व्यक्ति पहले से ही परमेश्वर से अलग होता है।[234] इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति आत्मकेन्द्रित है और अपनी इच्छा पर चलता है।

जैसे ही कोई व्यक्ति अपने चुनाव करना शुरू करता है वह पाप करना शुरू कर देता है। हर पापी (1) पाप के कई कृत्यों के लिए दोषी होता है। •[235]

पाप परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन है।[236] क्योंकि परमेश्वर पूर्ण रूप से धर्मी है वह पाप को ऐसे ही क्षमा नहीं कर देता और हर व्यक्ति का न्याय उसके कर्मों के अनुसार किया जाएगा।[237] किसी भी व्यक्ति का अपराध या जिस दण्ड के वह योग्य है, इसके बारे में कोई वाद-विवाद नहीं कर सकते। हर पापी पहले से ही दोषी ठहर चुका है। •[238]

पापी (2) परमेश्वर का दुश्मन है।[239] एक पापी परमेश्वर के साथ तब तक संबंध में नहीं आ सकता है, जब तक परमेश्वर के खिलाफ उसके अपराध मिट न जाएँ।

---

[233] लूका 18:10-14।

[234] रोमियों 5:12।

[235] रोमियों 3:23।

[236] 1 यूहन्ना 3:4, याकूब 2:10-11।

[237] 2 कुरिन्थियों 5:10, प्रकाशितवाक्य 20:12-13।

[238] यूहन्ना 3:18-19।

[239] रोमियों 5:10।

पापी एक ऐसी स्थिति में भी होता है जो उसे परमेश्वर के साथ संबंध में आने से अयोग्य बनाती है। पापी (3) अपनी इच्छाओं में भ्रष्ट होता है।[240] क्योंकि वह पाप का दास है, पापी (4) अपनी स्थिति को बदलने के लिए असमर्थ होता हैं। •[241]

तो वह कौनसा उद्धार है जिसकी एक पापी को आवश्यकता है? क्योंकि पापी अपराधी है तो उद्धार का अर्थ क्षमा है। क्योंकि वह परमेश्वर का दुश्मन है तो उद्धार का अर्थ मेल मिलाप है। क्योंकि वह भ्रष्ट है तो उद्धार का अर्थ शुद्धता है। क्योंकि वह असमर्थ है तो उद्धार का अर्थ छुटकारा है। ये उद्धार के पहलुओं में से कुछ पहलू हैं जिनकी पापी को ज़रूरत है।

दुविधा

मनुष्य अपने पाप का दाम नहीं चुका सकता था। एक कारण यह है कि जो कुछ भी हमारे पास है वह पहले से ही परमेश्वर का है। और अधिक महत्वपूर्ण कारण यह है कि पाप एक अनंत परमेश्वर के खिलाफ है और मनुष्य के लिए ऐसी कोई अनंत मूल्य की वस्तु नहीं है जिससे वह दाम चुका सकता है।

ऐसा कुछ नहीं है जो मनुष्य अपनी उस आवश्यकता के विषय में कर सकता है; इसलिए मनुष्य के लिए कोई आवश्यकता निर्धारित नहीं थी जिससे मनुष्य को उद्धार मिल पाता। •[242] अगर मनुष्य खुद उद्धार प्राप्त कर सकता, तो यीशु का क्रूस पर मरना आवश्यक नहीं होता। •[243]

? यदि परमेश्वर क्षमा करना चाहता था तो उसने सरलता से क्रूस के बिना क्षमा क्यों नहीं कर दिया?

क्योंकि परमेश्वर पवित्र है इसलिए उसके लिए सत्य और न्याय के अनुसार न्याय करना अवश्य है।[244]

---

[240] इफिसियों 2:3।

[241] रोमियों 5:20, 7:23।

[242] गलातियों 3:21।

[243] गलातियों 2:21।

[244] रोमियों 2:5-6।

कल्पना कीजिए कि मसीह का बलिदान नहीं हुआ होता। क्या होता यदि परमेश्वर बिना प्रायश्चित के पाप क्षमा कर देता?

अगर परमेश्वर प्रायश्चित्त के बिना पाप को क्षमा करता तो ऐसा प्रतीत होता कि पाप महत्वहीन है। इससे प्रतीत होता कि परमेश्वर अधर्मी है और यहां तक कि अपवित्र भी है। ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर की नज़र में जो व्यक्ति अच्छा करता है और जो व्यक्ति बुरा करता है, उसमें थोड़ा ही फर्क है।

अगर क्षमा प्रायश्चित्त के बिना होती तो परमेश्वर की आराधना धर्मी और पवित्र परमेश्वर के रूप में नहीं होती जैसा वह है। बिना प्रायश्चित के क्षमा, अंततः परमेश्वर को सम्मान देने के बजाय उसका अपमान करती, इसलिए ऐसा नहीं हो सकता था।

लेकिन परमेश्वर प्रेमी है और क्षमा करना चाहता है। वह पूरी मानवता को अनंतकाल के लिए नाश होने के लिए पाप की अवस्था में नहीं छोड़ना चाहता था, हालांकि वे इसी के योग्य थे।

क्रूस पर यीशु के बलिदान ने वो अनन्त मूल्य का बलिदान प्रदान किया जिसकी आवश्यकता थी। यीशु (1) योग्य था क्योंकि वह निर्दोष [245](सिद्ध और जिसको स्वयं के लिए उद्धार की आवश्यकता नहीं थी) और (2) परमेश्वर और मनुष्य दोनो था।

प्रायश्चित क्षमा के आधार कि आवश्यकता प्रदान करता है। अब परमेश्वर उस व्यक्ति को क्षमा कर सकता है जो पश्चाताप करता है और उसकी प्रतिज्ञा पर विश्वास करता है। कोई भी जो क्रूस के बलिदान को समझता है, वह यह नहीं सोच सकता कि पाप परमेश्वर के लिए गंभीर नहीं है।

प्रायश्चित्त एक तरीका प्रदान करता है कि परमेश्वर उस पापी व्यक्ति के लिए जो प्रतिज्ञा पर विश्वास करता है धर्मी हो लेकिन फिर भी न्यायोचित ठहरे। •[246] रोमियों 3:20-26 इस पर न्यायसिद्ध व्याख्या प्रदान करता है कि प्रायश्चित कैसे काम करता है।

बाइबल हमें बताती है कि जो उद्धार का साधन परमेश्वर ने प्रदान किया केवल वही

[245] 2 कुरिन्थियों 5:21।

[246] रोमियों 3:26।

एक तरीका है। यदि कोई व्यक्ति अनुग्रह द्वारा मसीह में विश्वास के उद्धार को अस्वीकार करता है, तो उसका उद्धार नहीं हो सकता। •[247]

इसलिए अनुग्रह के द्वारा उद्धार के सिद्धांत को जानना महत्वपूर्ण है जो विश्वास से मिलता है। उद्धार केवल अनुग्रह से मिलता है क्योंकि ऐसा कुछ नहीं जिससे हम इसे अर्जित कर सकते हैं या इसके योग्य हो सकते हैं। यह केवल विश्वास के द्वारा है क्योंकि ऐसा कुछ नहीं है जिसे करके हम इसे प्राप्त कर सकते हैं। हम केवल परमेश्वर के वादे पर विश्वास कर सकते हैं।

? मनुष्य के उद्धार की ओर पहला कदम कौन बढ़ाता है, परमेश्वर या खुद वह मनुष्य?

पहला अनुग्रह

परमेश्वर ने पापी का उद्धार करने के लिए पहला कदम बढ़ाया। उसने क्रूस पर यीशु का बलिदान प्रदान करके अपनी क्षमा करने की इच्छा को प्रकट किया। अब परमेश्वर का अनुग्रह पापी के हृदय में पहुंचता है, उसको पापों से दोषी सिद्ध करके और उसमे क्षमा मांगने की इच्छा उत्पन्न करता है। •[248] पापी व्यक्ति परमेश्वर की मदद के बिना अपने पापों से छुटकारा पाने के लिए असमर्थ होता है।[249] परमेश्वर पापी को सुसमाचार के अनुकूल होने की क्षमता देता है। यदि किसी व्यक्ति का उद्धार नहीं होता तो ऐसा इसलिए नहीं होता कि उसको अनुग्रह नहीं मिला बल्कि ऐसा इसलिए होता है कि वह उस अनुग्रह के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं देता।

यीशु पूरी दुनिया के पापों के लिए मरा,

एक बहुत ही सुन्दर लेख जो परमेश्वर के अनुग्रह का वर्णन करता है, इसको प्रायश्चित की घटना के कई साल पहले लिखा गया था। यह भजन संहिता 85 है। यह इस बात का वर्णन करता है कि परमेश्वर कैसे पाप क्षमा करता है। यह उसके क्रोध समाप्त होने के विषय में बताता है। फिर इसमें एक बहुत ही दिलचस्प कथन आता है। यह कथन बताता है कि "करूणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं; धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है।" प्रायश्चित्त के माध्यम से उद्धार का यह एक अद्भुत वर्णन है। प्रायश्चित्त के बिना परमेश्वर की दया उस सत्य तक सीमित रहती है कि हम दोषी हैं। परमेश्वर की धार्मिकता हमें शांति की अनुमति देने के बजाय अपने दुश्मन बना देती।

[247] मरकुस 16:15-16, प्रेरितों के काम 4:12, इब्रानियों 2:3।

[248] तीतुस 2:11, यूहन्ना 1:9, रोमियों 1:20।

[249] यूहन्ना 6:44।

और परमेश्वर चाहता है कि हर व्यक्ति का उद्धार हो। •[250] परमेश्वर का अनुग्रह हर व्यक्ति को प्रतिक्रिया देने की क्षमता देता है लेकिन वह किसी के साथ जबरदस्ती नहीं करता। इसलिए परमेश्वर पश्चाताप करने और विश्वास करने का चयन करने के लिए पापी को बुलाता है।[251]

पश्चाताप

?पश्चाताप क्या है?

पश्चाताप का मतलब है कि एक पापी खुद को दोषी और दंड के योग्य देखता है और वह अपने पापों को छोड़ने के लिए तैयार होता है।

"दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।" (यशायाह 55:7)।

पश्चाताप का मतलब यह नहीं है कि एक पापी परमेश्वर के क्षमा करने से पहले अपने जीवन को सही करे और खुद को धर्मी बनाये। यह असंभव है लेकिन पापी को परमेश्वर से मांगना चाहिए कि परमेश्वर उसे उसके पापों से छुटकारा दे।

?उद्धार अनुग्रह से प्राप्त होता है तो उद्धार के लिए पश्चाताप क्यों आवश्यक है?

विश्वास ही क्षमा के लिए एकमात्र आवश्यकता है लेकिन उद्धार के लिए विश्वास का पश्चाताप के बिना अस्तित्व नहीं हो सकता। यदि कोई व्यक्ति पश्चाताप करने के लिए तैयार नहीं है तो उसका पाप से उद्धार नहीं हो सकता।

यदि परमेश्वर उन लोगों को क्षमा कर देता जो पाप करते रहते हैं और पश्चाताप नहीं करते तो यह बात उसे पृथ्वी के धर्मी न्यायाधीश के तौर पर अपमानित करती।

पश्चाताप आवश्यक है क्योंकि अगर कोई व्यक्ति पश्चाताप नहीं करता तो वह पाप

[250] 2 पतरस 3:9, 1 यूहन्ना 2:2, 1 तीमुथियुस 4:10।

[251] मरकुस 1:15।

की बुराई को स्वीकार नहीं करता। अगर वह यह नहीं समझता कि उसे पाप करना क्यों छोड़ना चाहिए तो वह यह नहीं समझता कि उसे क्षमा की क्यों आवश्यकता है।

यदि किसी व्यक्ति ने अपने आप को सचमुच अपराधी नहीं माना है कि वह अपराधी है और सज़ा के योग्य है तो उसने पश्चाताप नहीं किया है। यदि वह मानता है कि वह पापी है, लेकिन एक ऐसा धर्म चाहता है जो उसे पाप करने की इजाज़त दे तो उसने पश्चाताप नहीं किया है क्योंकि वह वे सब चीज़े करता रहना चाहता है जिनसे वह पापी ठहरा।

उद्धार का विश्वास

? यदि किसी व्यक्ति का उद्धार का विश्वास है तो उसका क्या अर्थ है कि वह विश्वास करता है?

(1) वह समझता है कि वह अपने आप को निर्दोष ठहराने के लिए कुछ नहीं कर सकता।

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।"(इफिसियों 2:8-9).

उसे इस बात का एहसास है कि वह ऐसा कुछ नहीं कर सकता (काम) जिससे उसका उद्धार हो सकता है यहाँ तक आंशिक रूप से भी नहीं हो सकता।

(2) उसका विश्वास है कि मसीहा का बलिदान उसकी क्षमा के लिए पर्याप्त है।

"और वह हमारे पापों का प्रायश्चित है, न केवल हमारे लिए बल्कि पूरी दुनिया के पापों के लिए भी" (1 यूहन्ना 2:2)।

प्रायश्चित का अर्थ है कि वह बलिदान जिससे हमें क्षमा मिलना संभव होता है। हमारी क्षमा के लिए मसीह के बलिदान के अतिरिक्त कुछ भी आवश्यक नहीं है।

(3) उसका विश्वास है कि परमेश्वर उसको सिर्फ विश्वास की शर्त पर क्षमा करता है।

"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" (1 यूहन्ना 1:9)।

यदि वह सोचता है कि अन्य शर्तें हैं, तो वह अनुग्रह के बजाय सिर्फ कर्मों के द्वारा उद्धार पाने की अपेक्षा करता है।

आश्वासन

?एक व्यक्ति यह पक्का कैसे जान सकता है कि उसका उद्धार हुआ है?

कुछ लोग अपनी भावनाओं पर निर्भर होते हैं लेकिन भावनाएं बदलती हैं और भटक सकती हैं।

बाइबल हमें बताती है कि हम यह पक्का जान सकते हैं कि हमारा उद्धार हुआ है। हमें विश्वास है कि परमेश्वर ने हमें स्वीकार कर लिया है। हमें डर में रहने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि परमेश्वर का आत्मा हमें भरोसा दिलाता है कि हम परमेश्वर के अपनाये हुए बच्चे हैं।[252]

यह आश्वासन इतना पूर्ण है कि हमें न्याय के दिन से डरने की ज़रूरत नहीं है। •[253] कुछ लोग कहते हैं कि वे आशा करते हैं कि उन्हें स्वर्ग में स्वीकार कर लिया जाएगा लेकिन हम उस से भी बेहतर आश्वासन प्राप्त कर सकते हैं। यह विश्वास करना काफी नहीं है कि आम तौर पर पूरी मानवता को उद्धार दिया जाता है; एक व्यक्ति को पता होना चाहिए कि उसका खुद का उद्धार हुआ।

एक बदला हुआ जीवन इस बात का प्रमाण है कि एक व्यक्ति का उद्धार हुआ है लेकिन यह प्रमाण पहले ही क्षण में मौजूद नहीं होता। उद्धार के परिणाम दिखने का समय नहीं था। इसलिए पश्चाताप के समय एक परिवर्तित जीवन आश्वासन का आधार नहीं है।

विश्वासी अपने उद्धार के बारे में यह जानकर सुनिश्चित हो सकता है कि उसका उद्धार पवित्रशास्त्र के रास्ते के तरीके से हुआ। अगर किसी ने सचमुच पश्चाताप किया है और विश्वास किया जैसे बाइबल निर्देशित करती है तो उसे यह विश्वास करने का अधिकार है

[252] रोमियों 8:15-16 है।

[253] 1 यूहन्ना 4:17।

कि परमेश्वर उसे क्षमा करता है। जब कोई पश्चाताप और विश्वास करता है तो परमेश्वर उसको अपने आत्मा की गवाही देता है कि वह उसकी संतान बन गया है।

यदि कोई व्यक्ति यह महसूस करने की कोशिश करता है कि उसका उद्धार हुआ है और उसने वास्तव में पश्चाताप नहीं किया है तो वह भ्रमित होकर खुद को धोखा दे सकता है।

यदि कोई व्यक्ति (1) वास्तव में पश्चाताप करता है, (2) पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के वादे पर भरोसा करता है और (3) आत्मा की गवाही प्राप्त करता है तो वह धोखा नहीं खाएगा। यह आश्वासन परमेश्वर के वचन पर आधारित है जो बिल्कुल विश्वसनीय है। परमेश्वर हमेशा अपने वादों को निभाता है।

उद्धार के पहलुओं के 10 शब्द

मेल मिलाप: इस शब्द का मतलब है कि जो लोग शत्रु रहे हैं उन्होनें फिर से मेल किया है। उद्धार में हम परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करते हैं। •[254]

पापशोधन इस शब्द का मतलब है कि एक पाप का लेखा शुद्ध हो गया है। उद्धार में हमारे पापों का लेखा मिट जाता है। •[255]

प्रायश्चित्त यह शब्द ऐसी चीज़ का उल्लेख करता है जिसे किसी को उसके क्रोध को दूर करने के लिए दिया जाता है। उद्धार में यीशु का बलिदान परमेश्वर के क्रोध को दूर करता है जो हमारे विरूद्ध था। •[256]

छुटकारा: इस शब्द का अर्थ है कि किसी को दूसरे की सत्ता से बचाया जाता है। उद्धार में हमें शैतान और पाप की सत्ता से निकाला जाता है। •[257]

छुड़ौती इस शब्द का अर्थ है कि किसी की स्वत्रंता के लिए दाम चुकाया जाता है। उद्धार में यीशु की मृत्यु वह दाम है जो हमें बंधन और पाप के दंड से मुक्त करता है। •[258]

---

[254] 2 कुरिन्थियों 5:19, रोमियों 5:1 (ये आयतें दोषमुक्ति और मेल मिलाप के विषय में बताती हैं)।

[255] इब्रानियों 8:12।

[256] 1 यूहन्ना 2:2।

[257] लूका 1:74, रोमियों 6:6, 12-18।

[258] इफिसियों 1:7, तीतुस 2:14।

दोषमुक्ति इस शब्द का अर्थ है कि किसी को धर्मी या निर्दोष घोषित किया जाता है। उद्धार में एक दोषी पापी को धर्मी माना जाता है क्योंकि यीशु ने उसकी जगह दुख उठाया। •[259]

पवित्रीकरण: इस शब्द का अर्थ है कि किसी को पवित्र किया जाता है। उद्धार में,एक पापी परमेश्वर की पवित्र संतान बन जाता है।•[260]

गोद लेना: इस शब्द का अर्थ है कि कोई कानून के अनुसार किसी की संतान बनता है। उद्धार में हम परमेश्वर की संतान बन जाते हैं। •[261]

पुनर्जन्म / नया जन्म: इस शब्द का अर्थ है कि कोई अपना जीवन दोबारा शुरू करता है। उद्धार में एक विश्वासी नया जीवन शुरू करता है। •[262]

मुद्रण इस शब्द का अर्थ है कि कोई चीज़ चिह्नित है जो दर्शाती है कि इसका मालिक कौन है। उद्धार में हमारे अंदर पवित्र आत्मा हमारी एक व्यक्ति के रूप में पहचान करती है जो परमेश्वर का है। •[263]

नीचे दिए गए ब्लॉक में दी गई जानकारी की व्याख्या के लिए कक्षा का एक सदस्य चुना जा सकता है।

त्रुटियाँ जिनसे हमे बचना है: पश्चाताप के बिना धर्म

एक इस प्रकार का व्यक्ति होता है जो आसानी से यह सोचता है कि उसका उद्धार हो गया है जब वह सुनता है कि उद्धार विश्वास के माध्यम से अनुग्रह के द्वारा होता है। उसने वास्तव में पश्चाताप नहीं किया है क्योंकि उसने नहीं समझा कि उसे ऐसा करने की आवश्यकता है। उसने कभी अपने आप को एक पापी के रूप में नहीं देखा जो दंड के योग्य है। वह सोचता है कि अनुग्रह का अर्थ यह है कि वह अपने तरीके से चल सकता है। क्योंकि वह मसीह धर्म की सच्चाई को स्वीकार करता है वह सोचता है कि वह एक मसीही है, हालांकि उसका कोई

[259] 2 कुरिन्थियों 5:19, रोमियों 5:1 (ये आयतें दोषमुक्ति और मेल मिलाप के विषय में बताती हैं)।

[260] कई पत्रियाँ विश्वासियों का "पवित्र लोगों" के रूप में उल्लेख करती हैं (इफिसियों 1:1, कुलुस्सियों 1:1, फिलिप्पियों 1:1)।

[261] यूहन्ना 1:12, रोमियों 8:15।

[262] इफिसियों 2:1, यूहन्ना 7:38-39, गलातियों 4:29, यूहन्ना 3:5।

[263] इफिसियों 1:13।

परिवर्तन नहीं हुआ है। उसने कभी अपने स्वयं का आत्मसमर्पण नहीं किया; इसके बजाय उसने परमेश्वर को अपने जीवन के एक हिस्से के तौर पर स्वीकार किया और वह अभी भी अधिकतर अपनी इच्छा के अनुसार जीता है। पवित्रशास्त्रिय वर्णन के अनुसार यह परमेश्वर के साथ उद्धार के संबन्ध की शुरुवात नहीं है।

छात्रों को "विश्वास का कथन" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

विश्वास का कथन

यीशु मसीह का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान संसार के पापों के लिए प्रायश्चित प्रदान करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति पाप का दोषी है और खुद का उद्धार करने में असमर्थ है। पश्चाताप करने वाले हर पापी को विश्वास से अनुग्रह मिलता है। विश्वासी को क्षमा किया जाता है और पाप और दंड की सत्ता से छुड़ाया जाता है। पवित्र आत्मा विश्वासी को एक पापी से परमेश्वर के एक पवित्र भक्त में परिवर्तित करता है। उद्धार का कोई अन्य साधन नहीं है। सामान्य रूप से सृष्टि को छुड़ाया गया है और अंततः परमेश्वर द्वारा पुनःस्थापन की जाएगी।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले, उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

इफिसियों 2:1-10, यशायाह 1:11-18, भजन संहिता 51, रोमियों 8:19-25, रोमियों 3:20-26

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब यह असाइनमेंट के लिए पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

नीचे सूचना के दो वैकल्पिक ब्लॉक हैं। कक्षा इन्हें पड़ सकती है अगर सदस्यों को इन विषयों में रुचि है।

पुराने नियम में उद्धार

पुराने नियम में परमेश्वर ने बलिदानों के साथ उपासना की व्यवस्था प्रदान की। उन बलिदानों ने उसी तरीके से उद्धार प्रदान नहीं किया जिस तरह यीशु की मृत्यु ने किया। बाइबल हमें बताती है कि "यह संभव नहीं है कि बैल और बकरियों के खून से पाप दूर हों।"[264] तो बलिदान क्यों चढ़ाए जाते थे? वे आराधना करने के तरीके थे जो भविष्य में मसीहा के बलिदान का प्रतीक थे।[265]

इसका अर्थ यह नहीं है कि उद्धार नए नियम के समय तक उपलब्ध नहीं था। जब प्रेरित पौलुस ने विश्वास के माध्यम से अनुग्रह के द्वारा दोषमुक्ति के सिद्धांत को समझाया तो उसने अब्राहम और दाऊद के उदाहरण यह दर्शाने के लिए दिए कि यह एक नया विचार नहीं है।[266] यीशु ने कहा कि निकादिमुस को नए जन्म के बारे में पहले ही पता होना चाहिए क्योंकि वह पुराने नियम का शिक्षक था। [267] पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि पुराना नियम उसे उद्धार के विषय में बुद्धिमान बनाएगा।[268] इसलिए सुसमाचार पुराने नियम में उपलब्ध था।

पुराने नियम में कुछ लोग थे जो अनुग्रह को समझते थे। वे प्रायश्चित्त का विवरण नहीं जानते थे कि यह कैसे काम करता है लेकिन वे विश्वास करते थे कि परमेश्वर क्षमा का आधान प्रधान कर रहा था। बलिदान केवल उस विश्वास को व्यक्त करने की शैली थी, जैसे आज हमारी उपासना करने की शैलियाँ हैं (उदाहरण के लिए, प्रभुभोज)। यदि वे बलिदान विश्वास और आज्ञाकारिता से नहीं चढ़ाये जाते थे तो वे व्यर्थ होते थे जिस प्रकार हमारी आराधना करने की शैलियाँ यदि वे उस मन और जीवन से प्रदर्शन नहीं जो परमेश्वर को समर्पित हैं, तो वे व्यर्थ हैं।

दो लेखन जो दर्शाते हैं कि पुराने नियम के समय में पश्चाताप और विश्वास महत्वपूर्ण थे और कि एक आराधक को क्षमा और शुद्धता मांगनी चाहिए, वे भजन संहिता 51 और यशायाह 1:11-18 हैं।

पूरी सृष्टि का उद्धार

जब पहले लोगों ने पाप किया तो पूरी सृष्टि पर अभिशाप आया।[269] जब उद्धार का कार्य पूरा हो जाएगा तो सृष्टि को पुनः स्थापित किया जाएगा लेकिन हमने अभी तक यह नहीं देखा है।

---

[264] इब्रानियों 10:4।

[265] इब्रानियों 10:1।

[266] रोमियों 4:1-8।

[267] यूहन्ना 3:10।

[268] 2 तीमुथियुस 3:15।

[269] उत्पत्ति 3:17।

उद्धार लोगों के आत्मिक नवीकरण के साथ शुरू होता है जो बचाये गये हैं। विश्वासियों का पाप से उद्धार होता है और वे परमेश्वर के आशीषों में जीते हैं। हालांकि, उन्होंने पाप के अभिशाप के भौतिक पहलुओं से अभी तक छुटकारे का अनुभव नहीं किया। उनकी अभी भी देहें हैं जो बूढ़ी होकर मर जाती हैं।

प्रकृति अभी भी पाप के अभिशाप में है। हमने इसे वैसे नहीं देखा है जैसे परमेश्वर ने इसे मूल रूप से बनाया था। हम वह प्रकृति देखते हैं जो हानिकारक प्राणियों से भरी हुई है और वे प्राणी जो एक-दूसरे के साथ संघर्ष में हैं, जहां कई जीवों को दूसरों को जीवित रखने के लिए मारना पड़ता है।

वह समय आ रहा है जब पूरी सृष्टि का नवीकरण किया जाएगा।[270]

एक आयतें जो मसीह आशा का एक ऐसी दुनिया में वर्णन करता है जो अभी भी पाप के अभिशाप के अधीन है रोमियों 8:19 -25 है।

अनुशंसित पाठन

Purkiser, W. T., ed. ***हमारे मसीह विश्वाश की खोज।*** *(Exploring Our Christian Faith.)* Kansas City, MO: Beacon Hill Press, 1960.
विशेषकर अध्याय ग्यरह, "मनुष्य की दुर्दशा" और बारह, "प्रायश्चित का सिद्धांत" देखिए।

Wilcox, Leslie. *Profiles in Wesleyan Theology.* Salem, OH: Schmul Publishing, 1985.
विशेषकर 9-10 अध्याय देखिए: "प्रायश्चित्त" और "मेल मिलाप की शर्तें," 171-214।

Wiley, H. Orton and Culbertson, Paul T. *Introduction to Christian Theology.(**मसीह धर्मज्ञान का परिचय**)* Kansas City, MO: Beacon Hill Press, 1946.

[270] प्रकाशितवाक्य 21:1, इब्रानियों 1:10-12।

उद्धार

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. क्रूस बहुत लोगों के लिए अपमान की बात क्यों है?
2. एक पापी की स्थिति के चार पहलू कौनसे हैं?
3. प्रायश्चित के बिना क्षमा के कारण परमेश्वर का अनादर क्यों होता?
4. पश्चाताप क्या है?
5. अगर किसी का उद्धार का विश्वास है तो इसका क्या अर्थ है जिसका वह विश्वास करता है?
6. यीशु ही बलिदान के योग्य क्यों था?
7. एक व्यक्ति कैसे यह पक्का जान सकता है कि उसका उद्धार हो गया है?
8. उद्धार के शब्दों को सही वाक्यांशों के साथ मिलाइए:

छुड़ौती	चुकाया गया दाम
पवित्रीकरण	गिने गए धर्मी
पापशोधन	पहचान चिन्ह
छुटकारा	शांति
मुद्रण	क्रोध दूर किया गया
मेल मिलाप	साफ लेखा
प्रायश्चित्त	बचाये गये
गोद लेना	पवित्र किये गये
पुनर्जन्म / नया जन्म	पुत्र बनना
दोषमुक्ति	नया जीवन

पाठ 9
उद्धार के मुद्दे

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) पाप पर एक विश्वासी की विजय का विशेषाधिकार और महत्व।
(2) अनुग्रह जो परमेश्वर विजयी जीवन जीने के लिए प्रदान करता है।
(3) आत्मिक जीवन जो मसीह के साथ रिश्ते से मिलता है।
(4) अनुग्रह से अलग होने की पवित्रशास्त्र में चेतावनियाँ।
(5) विशेष उद्धार के मुद्दों के विषय में मसीह धारणाओं का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक उद्देश्य विद्यार्थियों की यह मदद करना है कि उनकी पाप पर विजयी जीवन जीने की उच्च अपेक्षा हो सके।

ï उद्धार के मुद्दे”
मुद्रित व्याख्यान

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन पर जाइए।

रोमियों 6 को एकसाथ पढ़िए। यह पाठ हमें उद्धार के प्रभावों के विषय में क्या बताता है?

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। इस पाठ में । चिह्न का उपयोग नहीं किया गया है क्योंकि अधिकांश आयतें जिनका उपयोग किया गया है वे इस पाठ में छपी हैं।

उद्धार का प्रमाण

उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन 1 यूहन्ना की पत्री के मुख्य विषयों में से एक है। यूहन्ना ने कहा कि उसका लिखने का कारण यह है: “मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो इसलिये लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।” (5:13)

? यदि एक व्यक्ति को संदेह है कि उसका उद्धार हुआ है या नहीं तो उसे क्या करना चाहिए?

प्रेरित जानता था कि ऐसा समय आयेगा जब एक विश्वासी को यह आश्वासन चाहिए होगा कि उसका उद्धार हुआ है। वह बताता है कि एक विश्वासी के लिए ऐसे प्रमाण को ढूँढना सही है जिसको वह अपने विश्वास का आधार बना सकता है। पूरी पत्री में उसने कुछ उस प्रमाण के उदाहरण दिए ऐसा कहते हुए कि "इस प्रकार हम जानते हैं।"[271] उसने कहा कि विश्वासी खुद को आश्वासन देने के लिए इस प्रमाण का इस्तेमाल कर सकते हैं।[272]

एक विश्वासी की विशेषता जिस पर 1 यूहन्ना की पूरी पत्री में सबसे ज़्यादा ज़ोर दिया गया है, वह पाप पर विजय है। एक विश्वासी की सामान्य स्थिति सुविचारित पाप से स्वतंत्रता का जीवन है। प्रेरित ने कहा, "हे मेरे बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूं ताकि तुम पाप न करो" (2:1)। इस कथन से प्रेरित दर्शाता है कि विश्वासी को सुविचारित पाप से बचे रहना चाहिए और वह कहता है कि वह उन्हें विजयी जीवन का महत्व समझाने के लिए लिखता है।

"और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह। वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है: और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी।" (2:1-2)।

यहां वह मानता है कि पाप हो सकता है हालांकि यह आवश्यक नहीं है। वह हमें आश्वासन देता है कि अगर कोई विश्वासी पाप करता है तो मसीह का बलिदान उस पाप के लिए प्रायश्चित कर सकता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि एक विश्वासी पाप में लौट जाए और पाप पश्चाताप के बिना अपने आप क्षमा हो जाए। यह आयत केवल यह कहती है कि बलिदान उपलब्ध है क्योंकि यह पूरी दुनिया के लिए है। हम जानते हैं कि पूरी दुनिया का अपने आप उद्धार नहीं हुआ है। किसी भी पाप के लिए पश्चाताप आवश्यक है चाहे वह पापी पहले

[271] 2:3, 2:5, 2:29, 3:10, 3:14, 3:19, 3:24, 5:2, 5:18।

[272] 1 यूहन्ना 1:9।

विश्वासी रहा हो या नहीं। अगर कोई विश्वासी पाप करता है तो उसे परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते की खातिर पश्चाताप करना चाहिए।

1 यूहन्ना से निम्नलिखित आयतें उसके इस बात पर ज़ोर को दर्शाती हैं कि एक विश्वासी की महान विशिष्टता सुविचारित पाप पर विजय है। कोष्ठक में दिए गये वाक्यांश जोड़ी हुई टिप्पिणियाँ हैं।

"और हम इस बात से अवश्य जानते हैं कि हम उसे जानते हैं यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं [एक व्यक्ति जो परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानता उसमें इस प्रमाण का अभाव है]। वह जो कहता है कि मैं उसे जानता हूं और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता वह झूठा है और सत्य उस में नहीं है (2:3-4)।

"जो कोई पाप करता है वह व्यवस्था का भी उल्लंघन करता है: क्योंकि पाप व्यवस्था का उल्लंघन है। और तुम जानते हो कि वह हमारे पापों को दूर करने के लिए प्रकट हुआ था और उसमें कोई पाप नहीं है। जो कोई उसमें बना रहता है वह पाप नहीं करता। जो भी पाप करता है उसने न ही उसे देखा है और न ही जाना है (3:4-6)।

"छोटे बालकों कोई भी तुम्हें धोखा न दे। वह जो धार्मिकता का काम करता है वह धर्मी है [वह व्यक्ति नहीं जो निरंतर पाप करता है और फिर भी किसी प्रकार धर्मी गिना जाता है], जिस प्रकार वह धर्मी है। जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है,क्योंकि शैतान आरम्भ से ही पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रकट हुआ ताकि शैतान के कामों को नाश करे। (3:7-8)।

यहाँ पाप से मेरा अर्थ बाहरी पाप का ज़िक्र करना है, इस शब्द के सामान्य उपयोग के अनुसार: लिखी हुई प्रकट व्यवस्था का स्वैच्छिक रूप से उल्लंघन या परमेश्वर की किसी भी आज्ञा के उल्लंघन को उसी समय जाना जाएगा जिस समय इसका उल्लंघन होगा। "जो भी परमेश्वर से जन्मा है," वह विश्वास, प्रेम, प्रार्थना करने की इच्छा में बना रहता है और धन्यवाद देता है और वह केवल पाप नहीं करता बल्कि इस तरह से पाप नहीं कर सकता। जब तक वह मसीह के माध्यम से परमेश्वर में विश्वास करता है, उससे प्रेम करता है और उसके सामने अपने हृदय को उंडेल देता है, तब तक वह स्वैच्छिक रूप से परमेश्वर की किसी भी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता" (John Wesley, उपदेश में ÏThe Great Privilege of Those That Are Born of GodÐ- "परमेश्वर से जन्में हुओं के महान विशेषाधिकार")।

"जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता क्योंकि उसका बीज उस में बना रहता है: और वह पाप कर ही नहीं सकता क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है (3:9)।

"और जो उस की आज्ञाओं को मानता है, वह उस में और वह उन में बना रहता है [यदि वह मसीह में बना नहीं रहता है तो वह पाप करेगा। यदि वह पाप करता है तो वह मसीह में बना नहीं रहता] और इसी से, अर्थात उस आत्मा से जो उसने हमें दिया है, हम जानते हैं कि वह हम में बना रहता है (3:24)।

"जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और उस की आज्ञाओं को मानते हैं तो इसी से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं। और परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उस की आज्ञाओं को मानें [असली प्रेम आज्ञाकारिता को प्रेरित करता है। अनाज्ञाकारिता प्रेम की कमी को दर्शाती है] (5:2-3)।

"क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है [इसकी परीक्षाओं और आत्मा पर] और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है। (5:4)।

"हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ उसे वह बचाए रखता है: और वह दुष्ट उसे छू नहीं पाता।" (5:18)।

? इन आयतों में एक विश्वासी की कौनसी विशिष्ट विशेषताएँ स्पष्ट हैं?

इन आयतों से यह स्पष्ट होता है कि विश्वासी की विशिष्ट विशेषता यह है कि वह आज्ञाकारिता में चलता है। पाप पर विजय एक विश्वासी का महान विशेषाधिकार है।[273]

[273] कभी-कभी जो लोग इस बात से इन्कार करते हैं कि विश्वासी व्यक्ति सुविचारित पाप पर विजय में जी सकता है वे 1 यूहन्ना 1:8: का उद्धारण देते हैं। "यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं तो अपने आप को धोखा देते हैं और हम में सत्य नहीं है।" लेकिन किसी में "पाप के होने" का क्या अर्थ है? क्या इसका यह अर्थ है कि विश्वासी भी जानबूझकर पाप करते रहते हैं? यह अध्याय तीन में दिए गए कथनों के अनुरूप नहीं होगा जिनका उद्धारण ऊपर दिया गया है। यूहन्ना तीसरे अध्याय में कैसे

विजयी जीवन के लिए परमेश्वर का अनुग्रह

विजय में जीना विरासत में मिली दुष्टता और मानव दुर्बलता के कारण हमेशा आसान नहीं होता। इन कारणों से बहुत से लोग मानते हैं कि सुविचारित पाप किए बिना जीना असंभव है। लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह का दोनों समस्याओं के लिए जवाब है।

? विरासत में मिली दुष्टता का क्या अर्थ है?

विरासत में मिली दुष्टता मनुष्य के नैतिक स्वभाव की भ्रष्टता है जो उसे जन्म से पाप की ओर ले जाती है। मसीह में आने के बाद एक विश्वासी पाप की ओर अपनी प्रवृत्ति के साथ संघर्ष करता है। लेकिन परमेश्वर न केवल दैनिक विजय के लिए अनुग्रह प्रदान करता है लेकिन विरासत में मिली दुष्टता से शुद्धता के लिए भी।[274] पापी स्वभाव कोई शर्त नहीं है

इन बातों का वर्णन कर सकता था अगर उसने पहले से ही यह कहा था कि "सब लोग, जिनमें हरएक विश्वासी भी शामिल है पाप करते रहते हैं?" इसका कोई अर्थ नहीं होगा।

इस संदर्भ से अर्थ का पता चलता है। सातवीं आयत में पाप से शुद्धता का वादा किया गया है। यह शुद्धता उनके लिए है जो "ज्योति में चलते हैं," जिसका अर्थ सत्य के अनुसार परमेश्वर की आज्ञाकारिता में चलना है। जो लोग अब परमेश्वर की आज्ञाकारिता में चल रहे हैं वे अपने पिछले पापों से मसीह के लहू के द्वारा शुद्ध हैं।

लेकिन ऐसे कुछ लोग होंगे जो यह कहेंगे कि उन्होंने कोई पाप नहीं किया है और उन्हें पवित्र होने की आवश्यकता नहीं है। ये वे लोग हैं जो कहते हैं कि उनमें "कोई पाप नहीं है" और खुद को "धोखा" देतें हैं। वे इस बात का दावा करते हैं कि उन्होंने कभी पाप नहीं किया या उन्होंने बिना मसीह के अपने पाप की समस्या का समाधान कर लिया है।

फिर नौ वीं आयत में क्षमा और शुद्ध करने का वादा है। आयत दस में वह फिर से कहता है कि जो लोग कहते हैं कि उन्होंने "पाप नहीं किया है" वे स्वयं परमेश्वर को झूठा ठहराते हैं।

यूहन्ना उन लोगों की गलतियों को ठीक करने के लिए लिख रहा था, जिन्होंने यह नहीं सोचा था कि उन्हें मसीह द्वारा प्रदान की जाने वाली शुद्धता और क्षमा की आवश्यकता है - वे लोग जिन्होंने सोचा था कि उन्हें उद्धार की आवश्यकता नहीं है। वह यह नहीं कह रहा था कि विश्वासी भी पाप करते रहते हैं क्योंकि इससे इस पत्र में उसका मुख्य ज़ोर और प्रत्यक्ष कथन झूठे ठहरते।

[274] 1 थिस्सलुनीकियों 5:23, 1 यूहन्ना 1:7, प्रेरितों के काम 15:9।

जिसके साथ हमें अपना संपूर्ण भौतिक जीवन जीना है। विजय में जीने के लिए एक विश्वासी को ऐसी स्थिति में आने की आवश्यकता है जहां वह पूरी तरह से परमेश्वर को बिना कोई संदेह के अपने हृदय का आत्मसमर्पण करता हो। उस समय परमेश्वर उसके हृदय को साफ करता है ताकि वह पूर्ण रूप से परमेश्वर से प्रेम कर सके।

?दुर्बलता क्या है?

दुर्बलताएं शारीरिक या मानसिक सीमाएं या कमियां हैं। आदम के पाप में पड़ने और निरंतर पाप से मानवता के पतन के कारण हम मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक रूप से उससे भी अधिक कमज़ोर हो गये हैं जितना परमेश्वर ने हमें बनाया था।

दुर्बलता का अर्थ है कि हम गलतियाँ करेंगे। हमें यह नहीं पता होगा कि किस स्थिति में क्या करना सही है। हमारे विचार लोगों या जातीय समूहों के कुछ वर्गों के बारे में गलत हो सकते हैं। जब किसी व्यक्ति का उद्धार होता है तो उसके गलत विचार अपने आप सही नहीं हो जाते।

गलत विचारों के कारण गलत कार्य होते हैं क्योंकि अगर कोई व्यक्ति यह नहीं समझता है कि उसे क्या करना चाहिए तो वह गलत काम करेगा।

दुर्बलता से कोई व्यक्ति कई कारणों से संघर्ष कर सकता है। हो सकता है कि उसने बाइबल के सिद्धांतों को लागू करने के बारे में न सीखा हो। हो सकता है कि उसने ऐसे अनुशासन विकसित न किये हों जो उसकी लालसाओं का सामना करने में मदद कर सकें। हो सकता है कि उसकी दैनिक आदतें ऐसी न हों जो उसे दृढ़ बनाए रखने में मदद करें। हो सकता है कि वह आत्मा में चलने के महत्व को न समझता हो।

हमें दूसरों पर तुरन्त दोष नहीं लगाना चाहिए क्योंकि हम हमेशा यह नहीं जानते कि अगर वे जानबूझकर पाप कर रहे हैं या नहीं। अक्सर लोग ज्ञान और आत्मिक परिपक्वता की कमी के कारण गलत काम करते हैं।

क्या आपके जीवन में कभी ऐसी परीक्षा आयी जिसमें आपने सोचा कि ऐसी परीक्षा कभी किसी अन्य व्यक्ति के जीवन में नहीं आई होगी? क्या आपने कभी सोचा कि पाप पर पूर्ण विजय के साथ जीना सच में संभव है? परमेश्वर ने अनुग्रह को सक्षम करने का वादा किया है जो परीक्षा के समय हमें बल देता है:

"तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े जो मनुष्य के सहन से बाहर है और परमेश्वर सच्चा है, वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा ताकि तुम सह सको।"(1 कुरिन्थियों 10:13)।

? कौनसी ऐसी बातें हैं जो हम इस आयत से जानते हैं?

यह आयत हमें कई महत्वपूर्ण बातों के विषय में बताती है।

पहली, (1) परीक्षा हमारे मनुष्य होने के कारण आती है। इसका अर्थ है कि आपके संघर्ष आपके लिए वास्तव में विशिष्ट नहीं हैं।

दूसरी, यह हमें बताती है कि (2) परमेश्वर हमारी सीमाओं को जानता है। वह समझता है कि हम कितना सहन कर सकते हैं। हम वास्तव में नहीं जानते कि हम कितना सहन कर सकते हैं लेकिन वह जानता है।

तीसरी, (3) परमेश्वर हमारे जीवन में आने वाली परीक्षाओं को सीमित करता है। वह चाहता है कि हम विजय में जीयें। इस आयत के अनुसार विजय हर समय संभव है।

चौथी, (4) परमेश्वर हमें वह प्रदान करता है जिसकी हमें विजय के लिए आवश्यकता होती है। वह "बचने का एक रास्ता" बनाता है। परमेश्वर हमसे यह इच्छा रखता है कि हम विजय में जीयें। वह विजयी जीवन के लिए अनुग्रह देता है।

आत्मा में जीवन

विद्यार्थी रोमियों 8 पढ़ें और इस खंड़ में इस्तेमाल की गयी आयतों पर ध्यान लगायें।

रोमियों अध्याय 8 एक विश्वासी के जीवन में आत्मा के कार्य का अद्भुत वर्णन देता है। बाइबल हमें बताती है कि हमें यह भी नहीं पता कि हम कैसे प्रार्थना करें लेकिन पवित्र आत्मा हम में से प्रार्थना करता है।

यह अध्याय हमें बताता है कि एक विजयी जीवन कैसे जीना है। यदि हम देह के बजाय आत्मा के अनुसार चलते हैं तो हम दोषी नहीं ठहरेंगे। (आयत 1)। हम उस धार्मिकता

को पूरा कर सकते हैं जो परमेश्वर हमसे चाहता है क्योंकि आत्मा की सामर्थ्य हमारे अंदर कार्य करती है (आयत 4)।

अगर कोई व्यक्ति पापी स्वभाव के वश में रहता है तो वह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता (आयत 8) उसको दोषी ठहराया जाता है (आयत 1) और परमेश्वर द्वारा दंड दिया जाता है (आयत 13 में "मृत्यु")।

पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और मार्गदर्शन से हम पापी कार्यों को खत्म कर सकते हैं (आयत 13-14)।

पाप पर विजय की अत्यावश्यकता

कभी-कभी इस प्रकार के सवाल पूछे जाते हैं, जैसे: (1) क्या एक मसीह व्यक्ति के लिए पाप पर विजय में जीना वास्तव में आवश्यक है? (2) परमेश्वर के साथ विश्वासी के रिश्ते का क्या होता है यदि वह परीक्षा में हार मान ले? (3) क्या यह संभव है कि कोई व्यक्ति उद्धार प्राप्त करने के बाद इसे खो दे?

प्रारंभिक कलीसिया की आम सहमति यह थी कि एक व्यक्ति उद्धार से अलग हो जाता है अगर वह परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह करता है। प्रारंभिक पासबानों ने अपने लोगों को विश्वास के द्वारा विजयी जीवन में डटे रहने की ज़रुरत के लिए चेताया क्योंकि बाइबल में ऐसी कई चेतावनियां हैं।

जब कोई पापी मसीह में आता है तो वह उन पापों से पश्चाताप करता है जिनके विषय में वह ऐसा महसूस करता है कि वह शुरू से करता आया है। जब वह परमेश्वर के साथ संबंध में रहने लगता है तो वह उन अन्य परिवर्तनों के विषय में सोचता है जिनकी उसे ज़रूरत है। ये वे कार्य, आदतें, मनोरंजन या शब्द हो सकते हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते। बाइबल कहती है, "तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।"[275]

[275] 2 कुरिन्थियों 7:1।

क्या होगा अगर कोई विश्वासी यह फैसला करे कि वह उस बात को बदलने के लिए तैयार नहीं है जिसे वह अब गलत समझता है? क्या होगा अगर वह उन पापों में दोबारा जाने का फैसला करे जिनसे उसने पश्चाताप करके उद्धार प्राप्त किया था?

कभी-कभी लोग इस प्रकार की बातें कहते हैं: "अगर अनन्त जीवन सचमुच अनन्त है तो हम कभी इसे खो नहीं सकते।" "यदि हमारा अनुग्रह के द्वारा उद्धार हुआ है और कुछ करने के द्वारा नहीं तो निश्चित रूप से हमारे कुछ करने के कारण उद्धार खो नहीं सकता।" "उड़ाऊ पुत्र फिर भी अपने पिता का पुत्र था, जब वह अपने पिता के विरूद्ध विद्रोह में दूर देश में था।" "चूंकि परमेश्वर ने उद्धार एक मुफ्त उपहार के रूप में दिया है इसलिए वह इसे वापस नहीं लेगा।"

इस प्रकार की सोच से मसीह में आये हजारों लोगों के लिए वापस पाप में जाना आसान हो गया है यह सोचकर कि वे पाप पर विजय के बिना अपने उद्धार में सुरक्षित हैं। यह समझना महत्वपूर्ण है कि बाइबल विश्वासी की सुरक्षा के बारे में क्या सिखाती है।

मसीह में जीवन

यूहन्ना 15:2-10 में दाखलता और शाखाओं का प्रसिद्ध रूपक है। यह कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर देता है।

हम मसीह में कैसे बने रहते हैं? "यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे" (आयत 10)। यदि कोई मसीह में बना नहीं रहता तो इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति उसकी आज्ञा नहीं मानता । फिर क्या होता है?

"यदि कोई मुझ में बना न रहे तो वह डाली के जैसे फेंक दिया जाता है और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं और वे जल जाती हैं।"(आयत 6) अगर कोई व्यक्ति आज्ञा मानना छोड़ देता है तो वह मसीह में बना नहीं रहता इसलिए उसे त्याग दिया जाता है। जलायी जाने वाली डालियों का उदाहरण पूर्ण रूप से त्याग दिये जाने को दर्शाता है।

ïतुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।" (आयत 4)। "जो डाली मुझ में है और नहीं फलती उसे वह काट डालता है"(आयत 2)। अगर हम

आज्ञाकारिता के साथ मसीह में न बने रहें तो हम फल नहीं ला सकते, जिसका अर्थ वह जीवन जीना है जो बदला हुआ है, आशिषित है, और जिसका मार्गदर्शन परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा होता है। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानता तो वह खुद को उस जीवन के प्रवाह से अलग करता है जो परमेश्वर देता है और परमेश्वर के अनुग्रह में नहीं रहता। जो फल नहीं लाता उसे त्याग दिया जाता है।

उद्धार अनुग्रह का मुफ्त उपहार है लेकिन यह वह उपहार नहीं है जिसको हम इसके देनेवाले के साथ बिना रिश्ते के रखते हैं।

> यदि शैली विली को एक पुस्तक देती है और यह वास्तव में विली की है तो विली इसके साथ जो चाहे वह कर सकता है। शैली चाहती है कि विली इसे पढ़े लेकिन अगर वह नहीं भी पढ़ता तो शैली इसे वापस नहीं ले सकती। वह इसे बारिश में छोड़ सकता है या इसे फाड़ सकता है या कीड़ों को मारने के लिए इसका इस्तेमाल कर सकता है। शैली इसे वापस नहीं ले सकती क्योंकि उसने यह पुस्तक उसे दे दी है। विली के पास जो पुस्तक का अधिकार है वह शैली के साथ उसके संबंध पर निर्भर नहीं करता। यहां तक कि अगर वह शैली का दुश्मन बन जाए तो फिर भी वह किताब उसके पास ही रहेगी।

दाखलता का रूपक यह दर्शाता है कि उद्धार एक उपहार से अलग है जिसे कोई व्यक्ति इसके देनेवाले के साथ बिना कोई रिश्ते के रख सकता है। यीशु मसीह दाखलता के समान है जो हमें जीवन देता है।[276] संबंध के माध्यम से हमारे पास उद्धार है। बाइबल में यह कहीं नहीं लिखा है कि हम जो कुछ भी करें उद्धार हमारे पास रहेगा। उससे अलग होने का अर्थ उद्धार से अलग होना है। हम उद्धार के इस संबंध को परमेश्वर की आज्ञा मानकर बनाए रखते हैं।[277]

हम लाइट बल्ब और बिजली का एक आधुनिक उदाहरण देख सकते हैं। बल्ब में तब तक प्रकाश रहता है जब तक इसमें बिजली प्रवाहित होती है। अगर बल्ब अपने बिजली स्रोत से अलग हो जाये तो बल्ब अपनी रोशनी बनाये नहीं रह सकता। इसी तरह हमारे पास मसीह के साथ हमारे रिश्ते से अनन्त जीवन है। उसका जीवन हम में प्रवाहित होता है। अगर हम उससे अलग होते हैं तो हम उस जीवन को नहीं रखते।

---

[276] यूहन्ना 15:6।

[277] यूहन्ना 15:10।

पवित्रशास्त्र की चेतावनियाँ

कुछ लोग कहते हैं कि कोई ऐसा तरीका नहीं है जिससे एक बार जीवन की पुस्तक में लिख दिए गए नाम को हटाया जा सके। लेकिन कम से कम एक तरीका है जिससे नाम को हटाया जा सकता है: "और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिस की चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।".[278]

बहुत कम ऐसे लोग हैं जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के एक हिस्से को हटाये जाने के दोषी हैं। हालांकि, कहने का अर्थ यह है कि जीवन की पुस्तक से नाम को हटाया जाना संभव है।

पवित्रशास्त्र हमें चेताता है कि पहले उद्धार पाया हुआ व्यक्ति अपने उद्धार को खो सकता है अगर वह अंत में पाप से हार जाता है। "जो जय पाए उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहनाया जाएगा और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा।"[279] प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में कलीसियाओं को कई प्रतिज्ञाएँ दी गयी हैं और उनमें से कई उद्धार का उल्लेख करती हैं (2:11 देखिए), फिर भी सारी प्रतिज्ञाएं विश्वासियों की विजय पर निर्भर करती हैं। ये वे लोग हैं जिनका उद्धार हुआ था फिर भी अगर वे पाप पर विजय नहीं पाते तो वे उद्धार को खो देते।

एक बार पौलुस चिंतित था कि थिस्सलुनीका में जिन लोगों को वह मसीह में लाया था उन्होंने अपने विश्वास को छोड़ दिया होगा। उसने कहा अगर ऐसा हुआ होता तो उनको मसीह में लाने का उसका परिश्रम व्यर्थ ठहरता।[280] इससे पता चलता है कि कोई विश्वासी अगर अपने विश्वास से भटक जाए तो उसका मूल मन-परिवर्तन व्यर्थ है।

2 पतरस 2:18-21 में हम पाते हैं कि ऐसे झूठे शिक्षक हैं जो कुछ विश्वासियों को जो "प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के ज्ञान के माध्यम से दुनिया की भ्रष्टता से मुक्त हो गये हैं" उनको धोखा देते हैं। इन पूर्व विश्वासियों को "धर्म का मार्ग ज्ञात था" लेकिन उन्होंने इसे छोड़ दिया। यह लेख बताता है कि उनको मार्ग के बारे में न पता होता तो उनके लिए यह भला

[278] प्रकाशितवाक्य 22:19।

[279] प्रकाशितवाक्य 3:5।

[280] 1 थिस्सलुनीकियों 3:5।

होता कि वे उस मार्ग को जानते और फिर भी उस पाप की जीवनशैली में वापस लौटते। इससे यह पता चलता है कि एक व्यक्ति के लिए दोबारा पाप की स्थिति में जाना संभव है। अगर किसी व्यक्ति के लिए अपना उद्धार खोना संभव नहीं होता तो वह व्यक्ति जितनी बुरी स्थिति में वह उद्धार से पहले था वह उससे अधिक बुरी स्थिति में उद्धार के बाद नहीं होता।

पुत्रत्व बदल सकता है। हम पहले शैतान की संतान और [281]क्रोध की संतान[282] थे लेकिन जब परमेश्वर ने हमे अपनाया तो हमारा पुत्रत्व बदल गया। उड़ाऊ पुत्र ने अपने सभी लाभ खो दिए जब वह अपने पिता से दूर चला गया। जब वह लौट आया तो उसके पिता ने उसका ज़िक्र मृत के रूप में किया।[283]

परमेश्वर यह चाहता है कि विश्वासी सुरक्षित महसूस करें लेकिन वह यह नहीं चाहता कि वे एक झूठे आश्वासन को अपनी भावनाओं का आधार बनाकर खुद को वास्तविक खतरे में डाल लें। हमें विश्वासियों से उस बात का वादा नहीं करना चाहिए जिसका वादा परमेश्वर ने नहीं किया। वह इस बात का वादा नहीं करता कि चाहे हम जो भी करें हम अपने उद्धार को खोने से सुरक्षित रहेंगे। वह हमारा मार्गदर्शन करने का वादा करता है और हमें पाप पर विजय में जीने के लिए सक्षम बनाता है। डर से मुक्त होने के लिए यह पर्याप्त आश्वासन है।

"वह व्यक्ति जो मानता है कि वह विश्वास से भटक सकता है और जिसे इस बात का भी डर होता है कि वह पाप में पड़ सकता है, उसे उस सांत्वना की कमी नहीं होती जिसकी उसे आवश्यकता है, न ही उसे अपने मन की चिंता से कष्ट पहुँचता है। क्योंकि सांत्वना देना और चिंता को छोड़ना तब पर्याप्त होता है जब उस व्यक्ति को मालूम होता है कि वह शैतान, पाप, संसार या अपने शरीर की कमज़ोरी के बल के कारण विश्वास से तब तक नहीं भटकेगा जब तक वह स्वेच्छा से परीक्षा में नही पड़ता और जानबूझकर अपने उस उद्धार को नहीं नकारता जिसके अनुसार उसे जीवन बिताना चाहिए।" (James Arminius, *Certain Articles*, ÏOn the Assurance of SalvationÐ- कुछ लेखों से संक्षिप्त, "उद्धार के आश्वासन पर")।

कभी-कभी विश्वासियों को अपने उद्धार को लेकर संदेह होता है। उनको यह बात पक्का मालुम हो सकती है कि पहले उनका उद्धार हुआ था फिर भी वे संदेह करते है कि अभी भी उनका परमेश्वर के साथ उद्धार का संबंध है या नहीं। बाइबल हमें इस महत्वपूर्ण सवाल

[281] यूहन्ना 8:44।

[282] इफिसियों 2:2।

[283] लूका 15:32।

पर संदेह में नहीं छोड़ती। यह परमेश्वर की इच्छा है कि विश्वासी को अपने उद्धार के विषय में पक्का यकीन हो कि वह "न्याय के दिन में साहस" रखे,[284] और यह न सोचे कि वह परमेश्वर की परीक्षा में उतीर्ण होगा या नहीं।

जब एक विश्वासी को संदेह होता है तो उसे अनदेखा नहीं करना चाहिए क्योंकि उसको पक्का यकीन है कि उसका पहले उद्धार हुआ था। यह उचित है कि " हम खुद को जाँच लें कि हम विश्वास में हैं या नहीं।"[285] यदि कोई व्यक्ति जानता है कि उसका उद्धार बाइबल के उद्धार के निर्देशनों का अनुसरन करके हुआ है और यह कि वह मसीह के साथ आज्ञाकारी संबंध के द्वारा उसमें बना हुआ है तो वह यह सुनिश्चित कर सकता है कि उसके पास आत्मिक जीवन है।

नीचे दिए गए ब्लॉक में दी गई जानकारी की व्याख्या के लिए कक्षा के विभिन्न सदस्यों का चयन किया जा सकता है।

त्रुटियाँ जिनसे हमें बचना है: निम्न अपेक्षाएं

लोगों को इन दो कारणों से पाप पर विजय पाना असंभव लगता है: दुर्बलता और विरासत में मिली दुष्टता। हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर हमें मानवीय सीमाओं के कारण दोषी नहीं ठहरता। परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा सामर्थ्य देता है ताकि हम उसकी इच्छा पूरी कर सकें। दुर्बलता का होना पाप नहीं है और किसी भी व्यक्ति को दुर्बलता के कारण पाप नहीं करना है।

विरासत में मिली दुष्टता का प्रभाव मसीह में आने के बाद भी जारी रहता है लेकिन परमेश्वर शुद्धता के लिए अनुग्रह प्रदान करता है। हम विरासत में मिली दुष्टता में पैदा होने के लिए दोषी नहीं ठहरते लेकिन अगर हम इसे बनाये रखते हैं तो यह हमारा दोष है। इसलिए न ही हम दुर्बलता से अपनी विजय में जीने की आशा खो सकते हैं और न ही विरासत में मिली दुष्टता से।

मसीह में विश्वास के द्वारा हम उसके साथ एकजुट हैं। हम उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में उसके साथ पहचाने जाते हैं और हमारे लिए इसका मतलब है कि पाप से मृत्यु तक और पुनरुत्थान से नये

[284] 1 यूहन्ना 4:17।

[285] 2 कुरिन्थियों 13:5।

जीवन तक। वह हम में है और हम उस में हैं । मसीह जीवन केवल सबसे अच्छा करके उसके उदाहरण का अनुसरण करना ही नहीं है। मसीह जीवन मसीहा हमारे अंदर जिया जाता है। उसने धरती पर रहकर पाप पर विजय पायी और वह अभी भी विजयी रूप से हमारे अंदर रहता है।

इससे क्यों फर्क पड़ता है

एक बड़े शहर में सड़क के किनारे पर फटे पुराने कपड़े पहने हुए एक महिला बैठी है। उसके बाल उलझे हुए हैं और गंदगी से ढके हैं। उसकी त्वचा धूलयुक्त और मैली है। वह निराशाजनक मायूसी में बैठी है। अचानक वहाँ एक बड़ा शोर-गुल होता है और पास से ही उस राज्य का महान राजकुमार अपने सरदारों के साथ गुजरता है। राजकुमार सुंदर, ताकतवर और दयालु है! जब उसकी गाड़ी उस स्थान से गुजरती है जहां वह मलिन महिला बैठी है, राजकुमार अपने चालक से कहता है, "रुको!"

जैसे ही गाड़ी रुकती है राजकुमार अपने सेवकों से कहता है "जो महिला सड़क के किनारे बैठी है वह वही महिला है जिससे मैं शादी करना चाहता हूँ!"

अब दृश्य बदलता है। हम विवाह के दिन राजमहल देखते हैं। हम क्या देखते हैं? एक मलिन महिला जिसने अभी भी फटे पुराने कपड़े पहने हैं और जिसके मैले उलझे हुए बाल हैं। उसके आस-पास शादी का गाउन, साबुन और इत्र पकड़े हुए रानी की दासियाँ हैं लेकिन दुल्हन अपने विवाह के दिन खुद को तैयार करने में दिलचस्प नहीं है। एक दासी उससे पूछती है "हे स्त्री, क्या तुम शादी के लिए तैयार नहीं होना चाहती?" दुल्हन उत्तर देती है "मैं इसी प्रकार दिखती थी जब उन्होंने मुझे देखा और मुझसे विवाह करना चाहा तो मुझे लगता है कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता जिस प्रकार मैं अब दिखती हूँ।"

हम उस मनोभाव को देखकर हैरान होंगे। क्योंकि राजकुमार उससे प्रेम करता है वह नहीं चाहता कि वह उसी हालत में रहे। क्योंकि राजकुमार ने उससे प्रेम किया जब वह आकर्षक नहीं थी तो उसकी यह इच्छा होनी चाहिए कि वह राजकुमार के लिए सबसे उत्तम दिखे।

जब हम पापी होते हैं फिर भी परमेश्वर हमसे प्रेम करता है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि पाप से कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है वह हमारी स्थिति को बदलना चाहता है। क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है हमारी उस छवि और चरित्र को ग्रहण करने की इच्छा होनी चाहिए जो उसे प्रसन्न करती है।

विजय में जीने के व्यावहारिक मार्गदर्शन

दुनिया भर में मसीह सत्य को अंधविश्वास के साथ मिलाया जा रहा है। कुछ लोग पाप पर विजय दुहराव की प्रार्थना करने, भावनात्मक अनुभवों, दुष्टात्माओं को डांटने (जिनको कुछ निश्चित पापों का कारण माना जाता है), खुद को दर्द पहुँचाने, कोई ताबीज़ पहनने, घर के चारों ओर आत्मिक प्रतीकों की स्थापना करने, या किसी खास तेल से शरीर का अभिषेक करने के माध्यम से सिखाते हैं। यह "आध्यात्मिक जादू" के माध्यम से विजय है!

कुछ लोग पाप पर विजय को बड़ी सरलता से भी सिखाते हैं। वे कहते हैं कि उद्धार और आत्मा की पूर्णता के अनुभवों से पाप की ताकत हमेशा के लिए नष्ट हो जाती है। वे आत्मिक विकास, अनुशासन और निरंतर सतर्कता की आवश्यकता पर ज़ोर देने में विफल रहते हैं।

जो लोग संसार और पाप पर निरंतर विजय पाने में नाकाम हैं, उन्हें ईमानदारी से खुद से निम्नलिखित प्रश्न पूछने चाहिए:

(1) **क्या मैं वाकई फिर से पैदा हुआ हूं?** क्या मैं अपने पुराने जीवन के लिये मरा हुआ हूँ; क्या मैंने पश्चाताप करके इसे छोड़ दिया है? क्या मेरे पास मसीह में एक नया जीवन है - नए दृष्टिकोण, नई इच्छाएं, परमेश्वर की वस्तुओं के लिए एक नई भूख (2 कुरिन्थियों 5:17)? क्या पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह मेरे हृदय में वास करता है? क्या मैं पापों पर काबू पाने के लिए केवल मानव इच्छा शक्ति का सहारा ले रहा हूं या क्या मैं अपने भीतर परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हूं (गलतियों 2:20)?

(2) **क्या मैंने परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है?** भजन लिखनेवाले ने गवाही दी "मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है ताकि तेरे विरुद्ध पाप न करूं।" (भजन संहिता 119:11)। जैसे नये जन्मे हुए भूखे बच्चे अपनी माता के दूध की लालसा करते हैं वैसे ही हमें परमेश्वर के वचन की लालसा करनी चाहिये (1 पतरस 2:2).

(3) **क्या मैं सचमुच अपने आप को पाप के लिए मरा हुआ समझता हूं और परमेश्वर के लिए जीवित?** "ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो" (रोमियों 6:11)। क्या मैं विश्वास के साथ परीक्षा को त्याग देता हूं कि मुझ पर इसका कोई अधिकार नहीं है?

(4) **क्या मैं परमेश्वर की विजय पर निर्भर हूं?** प्रेरित यूहन्ना ने घोषणा की कि वह व्यक्ति जो परमेश्वर के परिवार में पैदा होता है *"वह संसार पर जय पाता है। "और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है — हमारा विश्वास है।"* (1 यूहन्ना 5:4)। प्रेरित पोलुस ने कहा कि वह यीशु के क्रूस के बजाय किसी और वस्तु में विश्वास नहीं रखेगा क्योंकि क्रूस ही के कारण संसारिक वस्तुएँ मुझे लुभाने और काबू करने में असमर्थ हैं (गलातियों 6:14)। अगर हम धार्मिकता के स्रोत यीशु को भूल जाते हैं तो हमारे लिए विजय का जीवन जीना असंभव होगा।

5) **क्या मैं हर दिन विश्वास के द्वारा प्रभु यीशु को पहन रहा हूं और पाप के लिए कोई जगह नहीं छोड़ रहा हूं?** इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम अपनी मसीह यात्रा में कहाँ हैं, विजय कभी भी स्वचालित नहीं है। मुझे पाप के प्रति यीशु का रुख अपनाना चाहिए और उसके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए। (रोमियों 13:14, इफिसियों 4:24)

(6) **क्या मैं परमेश्वर के आत्मिक हथियार बांध रहा हूँ?** जीवन के युद्धक्षेत्र में कई विश्वासी शैतान के उग्र तीरों से घायल हो जाते हैं क्योंकि वे अपनी आत्मिक सुरक्षा के विषय में लापरवाह रहते हैं (इफिसियों 6:11)।

(7) **क्या मैं आत्म-अनुशासन में रहता हूं?** चाहे हम अपने विश्वास में कितने भी परिपक्व हों हमें हमेशा आत्म-अनुशासन की आवश्यकता होगी। क्या मैं अपनी देह को तैयार कर रहा हूँ और इसे अनुशासन में ला रहा हूँ? परमेश्वर द्वारा दी गयी स्वाभाविक इच्छाओं (जैसे भोजन, नींद, या यौन-क्रिया की इच्छाएँ) को नियंत्रित किया जाना चाहिए ताकि वे मेरी नये रूप से जन्मी आत्मा के उद्देश्यों को पूरा करे। क्योंकि मेरी देह पाप के कारण मरी है इसलिए इसकी इच्छाएं संतुलन में नहीं हैं। देह राज न करने पाये; यह आत्मा के उद्देश्यों को पूरा करे। पौलुस ने कहा कि उसने अपनी देह को अनुशासित किया और इसे वश में लाया ताकि वह किसी भी रीति से निकम्मा न ठहरे (1 कुरिंथियों 9:25-27)। यह अनुशासन प्रत्येक मसीह व्यक्ति के लिए आवश्यक है।

(8) **क्या मैं आज्ञाकारिता में जी रहा हूं?** "ज्योति में चलें" यह प्रेरित यूहन्ना की सलाह है (1 यूहन्ना 1:7)। क्योंकि स्वर्ग जाने के मार्ग में कई फंदे, ठोकर के पत्थर और खतरनाक जगहें हैं इसलिए हमें परमेश्वर के वचन की ज्योति (भजन सहिंता 119:105) और पवित्र आत्मा की उपस्थिति में चलना अवश्य है (यूहन्ना 14:26)। आज्ञाकारिता में यह वादा है कि यीशु का लहू हमें शुद्ध रखेगा। अंधकार में चलना उन लोगों को जो वापस लौटने से इन्कार करते हैं उनको ठोकरों, गिरने और अंतिम मृत्यु की ओर ले जाने का कारण बनता है।

छात्रों को "विश्वास का कथन" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

विश्वास का कथन

पाप पर विजय में जीना हर विश्वासी का विशेषाधिकार और कर्तव्य है। मसीह के साथ संबंध के द्वारा विश्वासी के पास जीवन होता है। जो परमेश्वर की इच्छा को अस्वीकार करता है और पाप में वापस जाता है, वह परमेश्वर के साथ अपने उस उद्धार के संबंध को तोड़ता है। परमेश्वर सामर्थ्य देनेवाला अनुग्रह प्रदान करता है ताकि विश्वासी जन हर परीक्षा में विजय पा सके।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले, उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

2 पतरस 1:1-11, इब्रानियों 10:23-39, प्रकाशितवाक्य 3:14-22, याकूब 1:21-27, मत्ती 13:18-23

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब इस असाइनमेंट को पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

अनुशंसित पठन

Shank, Robert. *Life in the Son* (पुत्र में जीवन) Bethany House Publishers, Minneapolis.

Wiley, H. Orton and Culbertson, Paul T. *Introduction to Christian Theology.(मसीह धर्मज्ञान का परिचय)* Kansas City, MO: Beacon Hill Press, 1946.

उद्धार के मुद्दे
अध्ययन के लिए प्रश्न

1. 1 यूहन्ना की पुस्तक का मुख्य विषय क्या है?
2. 1 यूहन्ना की पुस्तक विश्वासी जन की कौन सी विशेषता पर सबसे ज़्यादा ज़ोर देती है?
3. 1 कुरिन्थियों 10:13 से हम कौन सी चार बतों को जानते हैं?
4. एक विश्वासी जन मसीह में कैसे बना रहता है?
5. निरंतर उद्धार के लिए क्या आवश्यक है?

पाठ 10
पवित्र आत्मा

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) विशेषताएँ जो दर्शाती हैं कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है।
(2) पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व और ईश्वरत्व के बाइबल में प्रमाण।
(3) पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व और ईश्वरत्व आवश्यक सिद्धांत क्यों हैं।
(4) पवित्र आत्मा का ऐतिहासिक और वर्तमान गतिविधि।
(5) पवित्र आत्मा के साथ विश्वासी जन के संबंध के व्यावहारिक पहलू।
(6) पवित्र आत्मा के विषय में मसीह धारणाओं का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी आत्मा के वरदानों के विषय में कुछ सिद्धांतों को लागू कर सकें।

"पवित्र आत्मा"
मुद्रित व्याख्यान

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन को देखिए।

भजन संहिता 139 को एक साथ पढ़िए। इस पर चर्चा कीजिए कि यह लेख हमें परमेश्वर के आत्मा के विषय में क्या बताता है।

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक । देखते हैं तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र संदर्भ ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

कुछ लोग पवित्र आत्मा को अवैयक्तिक बल या एक केवल एक उपस्थिति मानते हैं। मिसाल के तौर पर यहोवा विटनेस वाले कुछ इस प्रकार कहेंगे: "पवित्र आत्मा कोई व्यक्ति नहीं है और न ही त्रिएकता का हिस्सा है। पवित्र आत्मा परमेश्वक की सक्रिय शक्ति है जो वह अपनी इच्छा पूरी करने के लिए उपयोग करता है .... कुछ हद तक, इसकी तुलना बिजली के समान दी जा सकती है।"[286]

? पवित्र आत्मा के विषय में यहोवा विटनेस वालों की अवधारणा में क्या गलत है?

यहोवा विटनेस वाले पवित्र आत्मा को एक अवैयक्तिक बल के रूप में मानते हैं। क्योंकि उनके पास परमेश्वर की बाइबल से संबंन्धित समझ नहीं है वे उसके साथ एक सही संबंध स्थापित नहीं कर सकते।

हमें पवित्र आत्मा के विषय में सब कुछ समझने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। यीशु ने कहा कि आत्मा का काम हवा की तरह है; तुम इसे सुनते हो लेकिन नहीं जानते कि यह कहां से आती है और कहाँ जाती है।[287] लेकिन कुछ बाते हैं जो हम आत्मा के विषय में जान सकते हैं, और वे परमेश्वर के साथ हमारे संबंध के लिए महत्वपूर्ण हैं।

पवित्र आत्मा और कलीसिया के बीच हमें सबसे अधिक पारस्परिक क्रिया का विवरण देने वाला पवित्रशास्त्र का खंड प्रेरितों के काम की पुस्तक है। वहाँ हम इस बात का प्रतिमान देखते हैं कि कलीसिया ने अपनी शुरुआत में पवित्र आत्मा को कैसे प्रतिक्रिया दिखाई। (1) उन्होंने पवित्र आत्मा का उसके ईश्वरत्व के लिए आदर किया। •[288] (2) वे पवित्र आत्मा की उपस्थिति, मार्गदर्शन और गतिविधि के प्रति सचेत थे। •[289] (3) उन्होंने पवित्र आत्मा को प्रतिक्रिया दिखाने की अपनी पराधीनता और जिम्मेदारी को समझा। •[290]

> "और मैं पवित्र आत्मा जो प्रभु है और जीवनदाता है में विश्वास करता हूं जो पिता और पुत्र से निकलता है; जिसकी पिता और पुत्र के साथ आराधना और महिमा की जाती है; जिसके विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने बताया था"(Nicene Creed, 325 ईसवी)

---

[286] *क्या आपको त्रिएकता में विश्वास करना चाहिए?* New York: The Watchtower Bible and Tract Soc., 1989.

[287] यूहन्ना 3:8।

[288] प्रेरितों के काम 5:3-4।

[289] प्रेरितों के काम 15:28।

[290] प्रेरितों के काम 4:24, 31।

हमें पवित्र आत्मा के साथ उस तरह का संबंध स्थापित करने के लिए यह समझना अवश्य है कि वह एक व्यक्ति और परमेश्वर भी है। तब हम उन सिद्धांतों को खोज सकते हैं जो उसके साथ हमारे संबंध का नेतृत्व करते हैं।

पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है।

पवित्र आत्मा का भौतिक शरीर नहीं है जैसे यीशु का है लेकिन वह एक व्यक्ति *है*। एक वास्तविक व्यक्ति में व्यक्तित्व के गुण होते हैं, जिनमें मन इच्छा और भावनाएं शामिल हैं। क्या पवित्र आत्मा के पास इच्छा है? वह मसीह लोगों को "अपनी इच्छा के अनुसार" आत्मिक वरदान बांटता है।[291] क्या पवित्र आत्मा का मन है? वह "परमेश्वर की गहरी बातें खोजता है" और उन्हें जानता है।[292] क्या पवित्र आत्मा की भावनाएं हैं? हमें बताया जाता है कि "पवित्र आत्मा को शोकित मत करो।"[293] यदि पवित्र आत्मा शोकित हो सकता है तो उसके पास भावनाएं हैं। क्योंकि पवित्र आत्मा का मन, इच्छा और भावनाएं हैं, हम जानते हैं कि वह एक व्यक्ति है।

? हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण क्यों है कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है?

अगर हम यह सोचते कि पवित्र आत्मा एक अवैयक्तिक बल है तो हम उसके साथ कोई संबंध स्थापित नहीं कर पाते। कुछ लोगों को ऐसा लगता है कि पवित्र आत्मा कुछ ऐसी चीज़ है जो उनकी भावनाओं को उत्तेजित करती है या वह केवल एक सामर्थ्य है जिसको वे इस्तेमाल करने का प्रयास करते हैं।

एक व्यक्ति में दूसरों के साथ संबंध स्थापित करने की क्षमता होती है। फिलिप्पियों 2:1 के अनुसार, आत्मा हमारे साथ संगति कर सकता है। 2 कुरिन्थियों 13:14 के अनुसार, पवित्र आत्मा हमारे साथ सहभागिता कर सकता है। जो सहभागिता करने और संगति करने में सक्षम है तो यह अवश्य है कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है।

---

[291] 1 कुरिन्थियों 12:11।

[292] 1 कुरिन्थियों 2:10।

[293] इफिसियों 4:30।

पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के विषय में बाइबल में अधिक प्रमाण जानने के लिए इस अध्याय के अंत में "पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के लिए बाइबल के प्रमाण" शीर्षक वाला खंड देखिए।

पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

पवित्र आत्मा सब कुछ जानने वाला, सब कुछ देखनेवाला, हर जगह उपस्थित रहनेवाला परमेश्वर है। क्या आपको हनन्याह और सप्फीरा की कहानी की याद हैं? हनन्याह के मारे जाने से पहले पतरस ने उससे कहा, "शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले? ... तूने मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला।[294] इस घटना से हम यह समझ सकते हैं कि पवित्र आत्मा से झूठ बोलना परमेश्वर से झूठ बोलने के समान है; इसलिए पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

> "हम उस पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं जिसने व्यवस्था के माध्यम से बात की, जिसके विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने शिक्षा दी, जो यर्दन में उतरा, जिसके विषय में प्रेरितों ने बतया और जो पवित्र लोगों में रहता है; इस प्रकार हम उस पर विश्वास करते हैं: कि वह वो पवित्र आत्मा है, परमेश्वर का आत्मा, सिद्ध आत्मा, सांत्वना देनेवाला आत्मा, जिसे रचा नहीं गया, जो पिता से निकलता है और जिसे पुत्र द्वारा प्रदान किया जाता है, उसमें हम विश्वास करते हैं "(Epiphanius का पंथ, 374 ईसवी)।

पवित्र आत्मा सभी बातें जानता है। हम 1 कुरिन्थियों 2:10-11 में देखते हैं कि वह परमेश्वर की और से सभी बातों को जानता है। इसका अर्थ है कि उसके पास असीम बुद्धि है। उसने पुराना नियम पवित्रशास्त्र और भविष्यद्वाणियों को प्रेरित किया जिसमें संपूर्ण ज्ञान की आवश्यकता होगी।[295] हमें बताया जाता है कि पवित्रशास्त्र को परमेश्वर ने प्रेरित किया[296] जो पवित्र आत्मा को परमेश्वर के तुल्य बताता है।

पवित्र आत्मा हर जगह मौजूद है। भजन संहिता 139:7 हमें बताता है कि कोई भी व्यक्ति पवित्र आत्मा की उपस्थिति से भागकर कहीं नहीं जा सकता। वह हर विश्वासी के साथ मौजूद है क्योंकि बाइबल कहती है कि अगर किसी व्यक्ति में मसीह का आत्मा नहीं है तो वह मसीह का नहीं है। इस संदर्भ से पता चलता है कि मसीह का आत्मा पवित्र आत्मा है।

---

[294] प्रेरितों के काम 5:3-4।

[295] 2 पतरस 1:21।

[296] 2 तीमुथियुस 3:16।

हमें लूका 12:10 में बताया जाता है कि पवित्र आत्मा की निन्दा की जा सकती है। केवल परमेश्वर की निन्दा की जा सकती है।

पवित्र आत्मा अनन्त है।[297]

हमारा शरीर परमेश्वर का मंदिर कहलाता है क्योंकि पवित्र आत्मा इसमें वास करता है।[298]

पवित्र आत्मा के पास संपूर्ण सामर्थ है। उसे वह कार्य करते हुए वर्णित किया जाता है जो सिर्फ परमेश्वर कर सकता है। वह संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के बारे में दोष सिद्ध करता है।[299] ऐसा करने के लिए उसे हर व्यक्ति की अंतरात्मा को जानना है और उनके मनों को कुछ निश्चित सत्यों के विषय में विश्वास दिलाना है। वह हर विश्वासी व्यक्ति को आंतरिक शक्ति देने में सक्षम है। •[300] उस सामर्थ्य और ज्ञान की कल्पना करना कठिन है जिससे वह ऐसा करने में सक्षम है विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखते हुए कि हर व्यक्ति अलग है। आत्मा के फल प्रेम, आनंद, शांति और इससे अधिक हैं। •[301] केवल ईश्वरीय सामर्थ्य ही किसी व्यक्ति के जीवन में यह उत्पन्न कर सकती है और विशेष रूप से संसार में हर जगह हर विश्वासी में।

बाइबल के प्रमाण से हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा स्वयं परमेश्वर है, ईश्वरीय त्रिएकता का तीसरा व्यक्ति है।

? पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व में विश्वास करना हमारे लिए महत्वपूर्ण क्यों है?

पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व में विश्वास करना महत्वपूर्ण है ताकि आप उसे वह आदर और सम्मान दे सकें जिसके वह योग्य है। ऐसा न मानकर की वह परमेश्वर है पवित्र आत्मा की आराधना न करना एक गंभीर बात होगी। वास्तव में, यह संदेहजनक है कि किसी व्यक्ति का फिर भी उद्धार हो सकता है जबकि वह व्यक्ति उस ईश्वर से इनकार करता है जो उसे उद्धार की तरफ खींचता है।

---

[297] इब्रानियों 9:14।

[298] 1 कुरिन्थियों 3:16।

[299] यूहन्ना 16:8।

[300] इफिसियों 3:16।

[301] गलातियों 5:22।

पवित्र आत्मा पिता और पुत्र से भिन्न है।

यह कहना कि पवित्र आत्मा पिता और पुत्र से भिन्न है इसका अर्थ यह नहीं है कि वे उस रूप में भिन्न हैं जैसे हम मनुष्य हैं। त्रिएकता के सदस्य एक दूसरे के साथ अन्तर्निवास करते हैं और वे तीनों एक ही ईश्वर हैं परन्तु एक दूसरे के साथ बात करने, एक-दूसरे से प्रेम करने और एक-दूसरे के साथ और हमारे साथ सच्चा व्यक्तिगत संबंध रखने में पर्याप्त रूप से अलग हैं।

पवित्रशास्त्र त्रिएकता के व्यक्तियों के बीच के अंतर को सिखाता है। उदाहरण के लिए यूहन्ना 14-16 के अध्यायों में यीशु ने बार-बार एक सहायक का उल्लेख किया जिसको वह पिता के पास वापस जाने के बाद भेजेगा। •[302] यह सहायक चेलों का मार्गदर्शन करेगा और उन्हें सिखाएगा। यदि यीशु और पवित्र आत्मा एक ही व्यक्ति होते तो यीशु द्वारा पवित्र आत्मा का *अन्य* सहायक के रूप में उल्लेख का कोई अर्थ नहीं होता। यीशु अपने से अलग किसी *अन्य* व्यक्ति का उल्लेख कर रहा होगा।

यीशु ने यूहन्ना 16:13-15 में यह भी कहा था कि पवित्र आत्मा अपने आप से नहीं बोलेगा परन्तु मसीह की बातों में से बताएगा जो मसीह को पिता से प्राप्त हुई। यदि यीशु और पिता परमेश्वर, पवित्र आत्मा के समान एक ही व्यक्ति होते तो इस कथन का कोई अर्थ नहीं होता।

यीशु के बपतिस्मे की कहानी को देखिए।[303] जब पुत्र का बपतिस्मा हुआ तो स्वर्ग से यह आकाशवाणी हुई "यह मेरा प्रिय पुत्र है" और पवित्र आत्मा कबूतर की नाई यीशु पर ठहरा। यह सब एक ही समय पर हुआ। त्रिएकता के तीनों सदस्य एक ही समय में इसमें शामिल हैं और स्पष्ट रूप से एक दूसरे से अलग हैं।

एक अलग व्यक्ति के रूप में, पवित्र आत्मा पिता और पुत्र के साथ प्रेम संबंध में सदा तक रहता है। परमेश्वर ने हमें उस संबंध में भाग लेने के लिए बनाया। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके साथ[304] सहभागिता का आनंद लें क्योंकि त्रिएकता के प्रत्येक सदस्य ने समय की

[302] यूहन्ना 14:16-17, 26, 15:26, 16:7, 13-15।

[303] मरकुस 1:10-11।

[304] 1 यूहन्ना 1:4।

शुरुआत से पहले दूसरों के साथ सहभागिता का आनंद लिया। •[305]

पवित्र आत्मा सक्रिय है।

सृष्टि के रचे जाने के समय से पवित्र आत्मा दुनिया में सक्रिय था। वह उपस्थित था और पृथ्वी के सृजन में शामिल था।[306] उसने उन लोगों को विशेष योग्यताएँ दी जिन्हें विशेष कार्य करने के लिए बुलाया गया था।[307] उसने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो कोशिश करते थे की लोग परमेश्वर के साथ सही संबंध में रहें, संदेश दिए।[308] उसने पवित्रशास्त्र को प्रेरित किया।[309] पुराने नियम के समय में, उसने लोगों के हृदय में काम किया और उन्हें परमेश्वर की ओर मोड़ने का प्रयास किया। [310] उसने अनुग्रह का ऐसा काम किया ताकि लोग अपने पूरे हृदय से परमेश्वर से प्रेम करने में सक्षम हो सकें। •[311]

उसे जीवन का आत्मा कहा जाता है; वह वही आत्मा है जिसने हमें रचा और हमें जीवन दिया; और अगर वह दुनिया से अलग हो जाता तो पूरा जीवन थम जाता और मनुष्य वापस धूल में मिल जाता। •[312]

नये नियम में पवित्र आत्मा के काम के नये समय की शुरुआत हुई। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने कहा कि यीशु लोगों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।[313] यीशु ने अपने चेलों को "पिता की प्रतिज्ञा" कही जाने वाली वस्तु की अपेक्षा करने के लिए प्रेरित किया जो पिंतेकुस में हुआ पवित्र आत्मा का बपतिस्मा था।[314] हालांकि उस समय कई घटनाएं देखी गईं, बाद में पतरस ने कहा कि मुख्य बात जो हुई, वह यह कि उनके हृदय शुद्ध हो गये। •[315]

---

[305] यूहन्ना 17:22-23।

[306] उत्पत्ति 1:2।

[307] न्यायियों 3:9-10, न्यायियों 15:14-15, निर्गमन 35:30-31।

[308] यशायाह 61:1।

[309] 2 पतरस 1:21।

[310] प्रेरितों के काम 7:51।

[311] व्यवस्थाविवरण 30:6।

[312] रोमियों 8:2, अय्यूब 33:4, अय्यूब 34:14

[313] मत्ती 3:11।

[314] प्रेरितों के काम 1:4-5, 8।

[315] प्रेरितों के काम 15:8-9।

यीशु ने चेलों से वादा किया कि पवित्र आत्मा उन लोगों के साथ रहेगा और उन्हें यीशु की शिक्षाओं को स्मरण कराएगा और सत्य के मार्ग में उनकी अगुवाई करेगा।[316]

यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा एक दूसरा *सान्त्वना देनेवाला* होगा।[317] यह शब्द उसको संदर्भित करता है जो हमारे साथ है और हमें प्रोत्साहित करके हमारी मदद करता है। यह एक प्रतिनिधि का भी उल्लेख कर सकता है। पवित्र आत्मा यीशु को दर्शाता है और हमें उसके वचनों की याद दिलाता है।[318]

? ऐसे कुछ कार्य कौन से हैं जो पवित्र आत्मा करता है?

दुनिया में पवित्र आत्मा के कार्य को पूरी तरह से समझाया नहीं जा सकता लेकिन यहां उसकी कुछ गतिविधियों की एक सूची है।

(1) वह पाप से निरूत्तर करता है [319] (अन्यथा किसी व्यक्ति के लिए पश्चाताप करने और क्षमा होने की अपनी ज़रूरत को समझना असंभव होता)।
(2) वह पुनर्जीवित करता है उस व्यक्ति को जीवन प्रदान करता है जो पाप में मरा हुआ था।[320]
(3) वह विश्वासी जन को व्यक्तिगत आश्वासन देता है कि उसका उद्धार हो चुका है।[321]
(4) वह हर विश्वासी में रहता है (हर व्यक्ति जिसका उद्धार हुआ है उसके अन्दर पवित्र आत्मा है)।[322]
(5) वह परमेश्वर के सत्य की समझ प्रदान करता है।[323]
(6) वह लोगों को विशेष सेवाकाई के लिए बुलाता है और सेवाकाई में लिये जाने वाले निर्णयों का मार्गदर्शन करता है।[324]
(7) वह विश्वासी जन को पवित्र करता है, उसके हृदय को शुद्ध करके उसे पवित्र करता है।[325]

---

[316] यूहन्ना 14:26, 16:13।

[317] यूहन्ना 14:16, 26, 15:26, 16:7।

[318] यही वचन 1 यूहन्ना 2:1 में है जहां यीशु को हमारा पिता के प्रति प्रतिनिधि कहा जाता है।

[319] यूहन्ना 16:8, 1 कुरिन्थियों 2:4, 1 थिस्सलुनीकियों 1:5।

[320] तीतुस 3:5, इफिसियों 2:1, यूहन्ना 7:38-39, गलातियों 4:29, यूहन्ना 3:5।

[321] रोमियों 8:16।

[322] प्रेरितों के काम 2:4, 1 कुरिन्थियों 6:19, रोमियों 8:9।

[323] 1 कुरिन्थियों 2:9-10, 13-14, इफिसियों 6:17, 2 कुरिन्थियों 3:14-17।

[324] प्रेरितों के काम 13:2-4, 15:28, 16:6-10।

(8) वह पाप पर विजयी जीवन जीने की सामर्थ्य देता है।[326]

(9) वह विश्वासी जन के जीवन में आत्मा के फल प्रदान करता है।[327]

(10) वह सेवाकाई के लिए आत्मा के वरदान देता है।[328]

(11) वह सेवकाई के लिए विशेष अभिषेक की सामर्थ देता है।[329]

(12) वह विश्वासी जन की परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करने में मदद करता है।[330]

(13) वह कलीसिया में एकता और संगति उत्पन्न करता है।[331]

नीचे दिए गए ब्लॉक में दी गई जानकारी की व्याख्या के लिए कक्षा के किसी सदस्य को चुना जा सकता है।

आत्मा के वरदानों के कुछ सिद्धांत

(1) आत्मा विभिन्न उपहारों, संचालनों और प्रशासनों के माध्यम से काम करता है (1 कुरिन्थियों 12:4-6)।

(2) आत्मिक वरदानों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार वितरित किया जाता है, आत्मिकता के अनुसार नहीं (1 कुरिन्थियों 12:11, 4: 7)।

(3) हर व्यक्ति को आत्मा द्वारा कुछ क्षमता दी गयी है। (1 कुरिन्थियों 12:7)।

(4) प्रत्येक विश्वासी जन से कोई निश्चित वरदान की उम्मीद नहीं की जा सकती (1 कुरिन्थियों 12:8-11, 14-30)।

(5) वरदानों को हमेशा दूसरों की सेवा के लिए परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 12:21-22, 25, 1 पतरस 4:10-11)।

पवित्र आत्मा का विश्वासी जन के साथ संबंध है।

यदि आपका परमेश्वर के साथ संबंध हैं तो आपका पवित्र आत्मा के साथ संबंध है। त्रिएकता के केवल एक ही व्यक्ति को जानना और दूसरों को न जानना संभव नहीं है।•[332]

---

[325] 1 पतरस 1:2, प्रेरितों के काम 15:8-9, 1 थिस्सलुनीकियों 5:23।

[326] रोमियों 8:1, 5, 13, गलातियों 5:16

[327] गलातियों 5:22-23।

[328] 1 कुरिन्थियों 12:4-10, 28-30, रोमियों 12:6-8।

[329] प्रेरितों के काम 1:8, 13:9, गलातियों 3:5, 1 पतरस 2:12।

[330] रोमियों 8:26-27, इफिसियों 6:18।

[331] इफिसियों 2:2, 4:3, 1 कुरिन्थियों 12:13।

[332] इफिसियों 2:18, यूहन्ना 6:44।

किसी व्यक्ति को उद्धार पाने से पहले पवित्र आत्मा के सिद्धांत को समझने की आवश्यकता नहीं है। चेलों को आत्मा के बारे में बहुत कुछ नहीं मालूम था लेकिन यीशु ने उन्हें बताया कि वे आत्मा को जानते हैं और वह पहले से ही उनके साथ है। •[333]

पवित्र आत्मा के विषय में सही सिद्धांत के मालूम होने से हमें उससे सही तरीके से संबंध रखने और उसे हमारे जीवन में और अधिक कार्य करने में मदद मिलती है।

इस बात का मालूम होना कि वह एक व्यक्ति है, इससे हमें यह जानने में मदद मिलती है कि हम उसके साथ संबंध स्थापित कर सकते हैं। हम उससे बात कर सकते हैं और वह हमारे साथ बात करेगा। वह आम तौर पर हमसे श्रव्य आवाज़ से बातचीत नहीं करता लेकिन उसके पास हमें परमेश्वर की इच्छा और उसका प्रेम समझने के तरीके हैं। अगर हम वास्तव में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना चाहते हैं तो वह हमारा मार्गदर्शन करेगा हालांकि हम हमेशा इसे महसूस नहीं करते।

इस बात का मालूम होना कि वह एक व्यक्ति है, इसका अर्थ है कि हम उसे कोई बल या भावना नहीं समझते। जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं तो हम इस बारे में सोचते हैं कि वह कौन है और कैसा है, न कि सिर्फ एक बुद्धिहीन भावना का आनंद लेते हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं तो हम समझदारी से बोलते हैं और समझने की कोशिश करते हैं कि वह हमें क्या दर्शाएगा, हम अपने शब्दों और चीज़ों का इस्तेमाल अवैयक्तिक, जादुई तरीके से नहीं करते जैसे अन्य धर्मों के लोग करते हैं।

पवित्र आत्मा को परमेश्वर मानने से हमें भक्तियुक्त आराधना करने का मनोभाव मिलता है। जब हम प्रार्थना करते हैं और उसके मार्गदर्शन को समझते हैं, हमें याद रखना चाहिए कि वह वही परमेश्वर है जो हमसे प्रेम करता है, हमें पूरी तरह से जानता है और हमारे भविष्य को जानता है। उसके पास पूर्ण अधिकार है, हमें उसकी आज्ञा अवश्य माननी चाहिए।

वह हर समय हमारे साथ है। पवित्रशास्त्र बताता है कि हम आत्मा में रहते हैं और हमें आत्मा में चलना चाहिए।[334] हमें इस तरह रहना चाहिए कि हम उसकी उपस्थिति में हैं और यह नहीं सोचना चाहिए कि हम केवल कलीसिया में ही उसकी उपस्थिति में आते हैं। वह न

---

[333] यूहन्ना 14:17।

[334] गलातियों 5:25।

केवल हमारे साथ है बल्कि हमारे भीतर रहता है और यह एक कारण है कि हमें शुद्ध और पवित्र जीवन जीना चाहिए। •[335]

हमें उसकी प्राथमिकता को अवश्य याद रखना चाहिए। इससे हमें उस पाप पर जो हमारे हृदय में है विजय प्राप्त होती है।[336] हमें अन्य बातों के लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए यदि हम उसकी पहली प्राथमिकता को पूरा नहीं होने देते। विश्वास से प्रार्थना कीजिए ताकि वह आपके मन को शुद्ध करे और आपको पूरी तरह से पवित्र बनाए। •[337]

जीवन के संघर्षों में वह हमें आंतरिक सामर्थ्य प्रदान करता है।[338] वह हमें समझता है, हमारी परिस्थितियों को समझता है और हमें वास्तव में वही दे सकता है जिसकी हमें आवश्यकता है।

सेवकाई में हमें उस पर निर्भर रहना चाहिए ताकि वह हमारा मार्गदर्शन करे, अपने वचन में सामर्थ्य दे और दूसरों के हृदयों में आत्मिक कार्य करे। कोई भी मानव क्षमता आत्मा के कार्य का स्थान नहीं ले सकती।

यदि आप पहले से ही आत्मा से परिपूर्ण हैं, तो आप उसके साथ रिश्ता बनाए रखना न भूलें जो आपको परिपूर्ण रखता है। आत्मा से भरने की आज्ञा का एक यूनानी क्रियापद में है जिसका अर्थ निरंतर प्रक्रिया है। •[339] हमें लगातार परिपूर्ण होने की आवश्यकता है और यह उसके साथ हमारे संबंध के माध्यम से होता है।

छात्रों को "विश्वास का कथन" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

विश्वास का कथन

पवित्र आत्मा त्रिएकता का तीसरा व्यक्ति है जो पिता और पुत्र के साथ पूरी तरह से ईश्वरीय है। वह हमें हमारे पापों से निरूत्तर करता है, पुनर्जीवित करता है और हर विश्वासी जन में वास

[335] 1 कुरिन्थियों 6:19।

[336] रोमियों 8:13, गलातियों 5:16, प्रेरितों के काम 15:8-9।

[337] 1 थिस्सलुनीकियों 5:23।

[338] इफिसियों 3:16।

[339] इफिसियों 5:18।

करता है, पापों पर विजय देता है और मन को साफ करता है। वह कलीसिया को एकजुट करता है और आत्मा के फल और सेवकाई के लिए आत्मिक वरदानों से आशीष देता है।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

प्रेरितों के काम 1:4-8, 1 कुरिन्थियों 2:9-16, रोमियों 8:1-14, 1 कुरिन्थियों 12:1-13, गलातियों 5:22-26

विद्यार्थियों को यह याद दिलाया जाये कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब इस असाइनमेंट को पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

नीचे दिए गए ब्लॉक वैकल्पिक हैं और यदि कक्षा इस मुद्दे के बारे में अधिक बाइबल के प्रमाण की आवश्यकता महसूस करती है तो विद्यार्थी इनको पढ़ सकते हैं।

पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के लिए बाइबल का प्रमाण

मत्ती 28:19 में, हमें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा देने के लिए कहा जाता है जिसका अर्थ है कि तीनों के पास अधिकार है 2 कुरिन्थियों 13:14 में पवित्र आत्मा की सहभागिता का उल्लेख है जिसका यह अर्थ है कि यह एक सुबोध बोलचाल है। मरकुस 13:11 में विश्वासियों से वादा किया गया था कि सताव के समय में पवित्र आत्मा उनके माध्यम से बात करेगा। यूहन्ना 14:17, 26 में पवित्र आत्मा को सत्य का आत्मा कहा जाता है जो सिखाएगा और याद दिलाएगा। यूहन्ना 16: 7-11 में यीशु ने वादा किया कि पवित्र आत्मा पाप, धार्मिकता और न्याय के संसार को निरूतर करेगा जिसके लिए सुबोध बोलचाल की आवश्यकता होगी। यूहन्ना 16: 13-15 बताता है कि पवित्र आत्मा स्वयं से नहीं बोलेगा परन्तु मसीह की बातों में से बताएगा। 1 कुरिन्थियों 12:11 के अनुसार पवित्र आत्मा यह निर्णय लेता है कि आत्मिक वरदान कैसे बांटे जाएँ। वह हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर के पुत्र हैं (रोमियों 8:16)। वह हमारे लिए पिता से मध्यस्थता करता है और उसका मन परमेश्वर की इच्छा को समझ सकता है (रोमियों 8:26-27)। इफिसियों

4:30 के अनुसार वह शोकित हो सकता है जिसका अर्थ है कि वह हमारी प्रतिक्रियाओं को समझता है और उसके पास भावनाएँ हैं। उससे झूठ बोला जा सकता है जिसका अर्थ है कि वह बोलचाल को समझता है (प्ररितों के काम 5:3)। वह बोलता है, निर्देश देता है,और उसकी इच्छा है कि लोग इनका पालन करें (प्ररितों के काम 13:2-4)। उसने प्रेरितों को उनका सुसमाचार सुनाने की यात्राओं में मार्गदर्शन किया और कभी-कभी उन्हें किसी स्थान में जाने से मना किया (प्ररितों के काम 16:6)।

कुछ लोग आत्मा के व्यक्तित्व से इनकार करते हैं और कहते हैं कि वह एक अवैयक्तिक बल है जैसे बिजली या गुरुत्वाकर्षण है। हालांकि यह असंभव है कि एक अवैयक्तिक बल का इस प्रकार वर्णन किया जाए जैसे बाइबल पवित्र आत्मा का वर्णन करती है। बिजली बोल नहीं सकती और न ही तर्क कर सकती है; गुरुत्वाकर्षण से झूठ नहीं बोला जा सकता। एक बिना दिमाग का बल परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझ सकता।

कुछ लोग कहते हैं कि ये पवित्रशास्त्र के वचन केवल मनुष्यगुणारोप ही हैं जो, कुछ अवैयक्तिक वस्तु के बारे में बताता है जैसे कि वह एक व्यक्ति है लेकिन पवित्रशास्त्र के इन वचनों का तात्पर्य कुछ और है। हालांकि पवित्रशास्त्र में आत्मा के बारे में वैयक्तिक शब्द है और लोगों ने उसे एक व्यक्ति के रूप में प्रतिक्रिया दिखाई। कुछ स्थानों में आत्मा के विषय में आलंकारिक रूप से बताया गया है जैसे यह कोई पदार्थ हो, जैसे जब बाइबल बताती है कि आत्मा को "उंडेल दिया जाएगा" (प्रेरितों के काम 2:17)। उनको आलंकारिक माना जाना चाहिए क्योंकि बाइबल आम तौर पर एक व्यक्ति के रूप में आत्मा की बात करती है।

अनुशंसित पठन

Murray, Andrew. *Andrew Murray on the Holy Spirit.* New Kesington, PA: Whitaker House, 1998.

Carter, Charles. *The Person and Ministry of the Holy Spirit: (पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व और सेवकाई) A Wesleyan Perspective*. (वेस्लेयान का एक दृष्टिकोण Grand Rapids: Baker Book House, 1974.

पवित्र आत्मा

अध्ययन के लिए प्रश्न

1. प्रारंभिक कलीसिया की पवित्र आत्मा के प्रति प्रतिक्रिया की तीन विशेषताओं की सूची बनाइये।
2. व्यक्तित्व की कौन सी विशेषताएं दर्शाती हैं कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है?
3. *सान्त्वना देनेवाले* शब्द का अर्थ क्या है?
4. आत्मा की कुछ गतिविधियां कौन सी हैं? दी गयी 13 में से 9 को सूचीबद्ध कीजिये।
5. पवित्र आत्मा से हमें पहले किस प्राथमिकता की उम्मीद करनी चाहिए?

पाठ 11
मसीही पवित्रता

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) मसीही पवित्रता के आधार के लिए परमेश्वर की पवित्रता।
(2) पवित्रता की आराधना और परमेश्वर के साथ संबंध का महत्व।
(3) विश्वासी के जीवन में विरासत में मिली दुष्टता का प्रभाव।
(4) वह प्रक्रिया जो एक विश्वासी को पवित्रता की ओर लाती है।
(5) पवित्रता के अनुभवों के लिए बाइबल के उदाहरण।
(6) संपूर्ण पवित्रता की परिभाषा।
(7) आत्मा के बपतिस्मे की बाइबल से सम्बंधित अवधारणा।
(8) मसीही पवित्रता के विषय में मसीह विश्वास का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी यह विश्वास रख सकें कि परमेश्वर का अनुग्रह उन्हें वर्तमान दुनिया में पवित्र बनाता है।

"मसीही पवित्रता"

मुद्रित व्याख्यान

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन पर जाइए।

भजन संहिता 119:33-40 को एकसाथ पढ़िए। यह खंड हमें परमेश्वर विश्वासी को पूरी तरह से बदलने के तरीके के विषय में क्या बताता है?

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक । देखते हैं तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र में

संदर्भ ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

जब परमेश्वर ने खुद को प्रकट करना शुरू किया तो उसका खुद को प्रकट करने का पहला उद्देश्य यह दर्शाना था कि वह कैसा परमेश्वर है। परमेश्वर ने खुद को मुख्य रूप से पवित्र वर्णित किया। पवित्रता के लिए इब्रानी शब्द (*कादोश)* पुराने नियम में 600 से अधिक बार पाया जाता है। उदाहरण के लिए, यशायाह ने अक्सर परमेश्वर को "इस्राएल का पवित्र" कहा।

परमेश्वर की पवित्रता आराधना का विषय था:

"वे तेरे महान और भययोग्य नाम का धन्यवाद करें! वह तो पवित्र है।" "हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो; और उसके चरणों की चौकी के सामने दण्डवत करो! वह पवित्र है।"[340]

परमेश्वर की पवित्रता मनुष्य के लिए उसकी आवश्यकता का आधार है। क्योंकि वह पवित्र है, वह अपने उपासकों को पवित्र बनने के लिए कहता है। उसने कहा, "पवित्र बनों क्योंकि मैं पवित्र हूं।"[341]

इस्राएल का परमेश्वर अन्यजातियों के झूठे देवताओं से अलग था और उन्हें अलग तरह की उपासना की आवश्यकता थी।

"यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा हो सकता है? जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है, जिसने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया और न कपट से शपथ खाई है।"[342]

यहां यह प्रश्न है कि, "परमेश्वर किसकी आराधना को स्वीकार करता है?" ज़ाहिर है, हर किसी को परमेश्वर के एक उपासक के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है।

जिस पवित्रता की वह अपेक्षा करता है वह सिर्फ अनुष्ठानिक या पाखंडी नहीं है; वह वास्तविक पवित्रता है। परमेश्वर के उपासक के लिए पवित्रता के मानक को नये नियम में

[340] भजन संहिता 99:3, 5।

[341] लैव्यव्यवस्था 11:44-45, 19:2, 20:26, 21:8।

[342] भजन संहिता 24:3-4।

दोहराया गया है: पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।[343] "चाल चलन" एक ऐसा शब्द है जो व्यवहार, आचरण और कुल जीवनशैली को संदर्भित करता है। परमेश्वर यह नहीं चाहता कि उसके उपासक औपचारिक रूप से पवित्र बनें या उनको तब पवित्र कहा जाए जब वे पवित्र न हों। वह अपने उपासकों से यह चाहता है कि वे पवित्र जीवन जीयें।

अनुग्रह से हमारा उद्धार होता है और जब हम पापी होते हैं तब परमेश्वर मसीहा के अनुग्रह के कारण हमें ग्रहण करता है। वह हमें पापियों के रूप में स्वीकार करता है परन्तु फिर हम पापी नहीं रहते। पाप परमेश्वर के खिलाफ एक अपराध है और हम उसे प्रसन्न करना चाहते हैं।

? ऐसे कुछ कौन से कारण हैं जो यह दर्शाते हैं कि पवित्रता आराधना से जुड़ी है?

पवित्रता आराधना से जुड़ी है क्योंकि (1) हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसे प्रसन्न करना चाहते हैं।

परमेश्वर की आवश्यकता हमें आश्चर्य नहीं करती अगर हम यह समझते हैं कि वास्तव में आराधना क्या है। हम केवल डर के कारण उसकी आराधना नहीं करते। हम उसकी आराधना इसलिए नहीं करते क्योंकि वह हमें आशीष देता है।

परमेश्वर की आराधना करना यह कहना है कि वह सबसे अद्भुत है जो अस्तित्व में है। उसकी आराधना करना उसकी प्रशंसा करना है। आराधना करना उसके स्वभाव की विशेषताओं की सराहना करना है।

परमेश्वर का स्वभाव अनिवार्य रूप से पवित्र है इसलिए यदि हम वास्तव में परमेश्वर के स्वभाव की प्रशंसा करते हैं तो हम पाप और अशुद्धता से घृणा करेंगे, भले ही हम इसे अपने आप में देखें। पवित्रता आराधना से जुड़ी है क्योंकि (2) हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसके समान बनना चाहते हैं।

[343] 1 पतरस 1:15-16।

जब हम पहली बार परमेश्वर से मिलते हैं तो पाप उसके साथ हमारे संबंध के बीच एक बाधा होता है। यही कारण है कि जब तक हम पश्चाताप न करें और क्षमा न माँगे तब तक परमेश्वर के साथ हमारे संबंध की शुरुआत नहीं हो सकती।

उसी समय जब हमारा परमेश्वर के साथ मेल मिलाप हो जाता है तो हम पूरी तरह से बदल जाते हैं। आत्मिक रूप से हम नए प्राणी बन जाते हैं। हमें पाप के अधिकार से छुटकारा मिल जाता है और हम परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा रखते हैं। मसीही पवित्रता तब शुरू होती है जब किसी व्यक्ति का उद्धार होता है।

बाइबल हमें सिखाती है कि उद्धार शीघ्र पवित्र जीवन की ओर ले जाता है। "परमेश्वर का अनुग्रह जिससे उद्धार मिलता है" हमें सिखाता है कि " हमें इस युग में संयम, धर्म और भक्ति से जीवन बिताना चाहिए।"[344] उद्धार का उद्देश्य हमें पाप से स्वतंत्र करना और हमें पवित्र बनाना है ताकि हम परमेश्वर के साथ संबंध में रह सकें।[345]

जैसे-जैसे हम परमेश्वर के साथ संबंध में रहते हैं हम पवित्रता में बढ़ते हैं और हम उसके सत्य को और अधिक समझते हैं। "ज्योति में चलने" का अर्थ परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना है क्योंकि हम उसके सत्य के विषय में अधिक सीखते हैं।[346] जैसे-जैसे हम यह बेहतर समझते हैं कि उसे क्या बात प्रसन्न या अप्रसन्न करती है, वैसे-वैसे हम उसके सत्य के द्वारा और हमारे भीतर पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा बदल जाते हैं। यह आत्मिक उन्नति का एक पहलू है।

वह व्यक्ति जो परमेश्वर से प्रेम करता है, वह पूरी तरह से पवित्र होने की इच्छा रखता है। वह केवल अपने कार्यों से बदलना नहीं चाहता। वह चाहता है कि उसके प्रयोजन पूरी तरह से परमेश्वर के लिए हों। दाऊद ने प्रार्थना की कि वह पाप पर पूर्ण विजय में जी सके फिर उसने प्रार्थना की कि उसके शब्द और यहाँ तक कि उसके मन का ध्यान परमेश्वर को प्रसन्न करे।[347]

---

[344] तीतुस 2:11-12 है।

[345] उद्धार का उद्देश्य यह है कि हम हर दिन पवित्रता में परमेश्वर की सेवा कर सकें (लूका 1:74-75)। विश्वासियों के रूप में हम पाप के लिए मर चुके हैं और अब इसमें जीवन नहीं बीता सकते (रोमियों 6:2, 11-16)।

[346] 1 यूहन्ना 1:7।

[347] भजन संहिता 19:12-14। भजन संहिता 119:7, 34, 36, 69, 80, और 112 भी देखिए।

लेकिन कुछ और चीज भी है जिसकी विश्वासियों को पवित्रता में उन्नति की प्रक्रिया के अलावा आवश्यकता होती है जो मनपरिवर्तन के बाद आती है। विश्वासी अपने मनों में एक बची हुई अशुद्धता के प्रति जाग्रत हो जाते हैं। यह कुछ ऐसा है जो धीरे-धीरे होने वाली उन्नति से ठीक नहीं हो सकता। यद्यपि उनका उद्धार हो चुका है और परमेश्वर की आज्ञाकारिता में चल रहे हैं, कभी-कभी वे अपने भीतर पाप में लौटने के रूझान को महसूस करते हैं।

विरासत में मिली दुष्टता मनुष्य के नैतिक स्वभाव की भ्रष्टता है जो उसे जन्म से पाप की ओर ले जाती है। धर्मविज्ञानी कभी-कभी इसे "मूल पाप" कहते हैं क्योंकि यह हमारे स्वभाव की पापपूर्णता है जिसमें हम आदम के पाप के कारण पैदा होते हैं।

हर व्यक्ति एक ऐसी इच्छा के साथ पैदा होता है जो आत्म केन्द्रित होती है और उसका रुझान पाप की ओर होता है।[348] हमारी इच्छाएं तब तक सही निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं जब तक परमेश्वर हमें इच्छा और ताकत नहीं देता।[349] विरासत में मिली दुष्टता आंतरिक पापों को प्रेरित करती है जैसे गर्व, ईर्ष्या, नफरत और क्षमा न करने की इच्छा। यह पाप की क्रियाओं को भी प्रेरित करती है।

? जब किसी व्यक्ति का उद्धार होता है क्या उसमें फिर भी विरासत में मिली दुष्टता बनी रहती है?

जब किसी व्यक्ति का उद्धार होता है, फिर वह विरासत में मिली दुष्टता के नियंत्रण में नहीं रहता। अगर वह फिर भी इसके नियंत्रण में रहता, तो वह पाप में जीवन बिताता और उसका उद्वार नहीं होता। बाइबल हमें बताती है कि जो व्यक्ति "शारीरिक विचारों" के नियंत्रण में रहता है वह दोषी ठहर चुका है।[350] उद्धार हुआ व्यक्ति विरासत में मिली दुष्टता के नियंत्रण में नहीं रहता और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा पाप पर विजय में जीने में सक्षम होता है।[351]

लेकिन एक उद्धार हुए व्यक्ति में तब तक विरासत में मिली दुष्टता का प्रभाव होता है जब तक कि वह इससे शुद्ध न हो जाये। पौलुस ने कुरिन्थियों के विश्वासियों से कहा था कि

---

[348] फिलिप्पियों 3:19।

[349] रोमियों 6:16-17।

[350] रोमियों 8:6-8, 13।

[351] रोमियों 8:1, 9, 13।

वे अब तक "शारीरिक" हैं और दुनिया के लोगों की तरह व्यवहार करते हैं, हालांकि उनका उद्धार हो गया था। •[352] उसने यह भी निरूपित किया कि एक नये मसीह के लिए उस स्थिति में होना सामान्य है क्योंकि उसने कहा कि "शारीरिक" होने का अर्थ "मसीह में बालक" होने के समान है।

एक विश्वासी इस स्थिति में परमेश्वर से प्रेम करता है लेकिन वह परमेश्वर से अपने पूरे मन, आत्मा, बुद्धि और ताकत से प्रेम नहीं कर सकता। वह पौलुस की तरह यह नहीं कह सकता कि उसका एकमात्र उद्देश्य परमेश्वर की बुलाहट का पालन करना है।[353] वह जानता है कि उसके मन के कुछ विचार परमेश्वर के लिए स्वीकार्य नहीं हैं।

परमेश्वर हमको इस हालत में नहीं छोड़ता। यहाँ तक कि प्राचीनकाल में उसने इस्राएल के लोगों से वादा किया था। उसने कहा कि वह अनुग्रह का एक कार्य करेगा जिससे वे परमेश्वर से उनके पूरे मन से प्रेम कर पाएँगे। °[354]

> "और वह असीम वादा जो पूरे सुसमाचार के समय से है "मैं उनके मनों में अपनी व्यवसथा को डालूँगा और उन्हें उनके हृदयों पर लिखूंगा" यह वादा सभी आज्ञाओं को वादों में बदलता है जिसमें यह भी शामिल है "जैसा यीशु मसीह का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।" यह आज्ञा एक वादे के बराबर है और इससे हमें इस बात की अपेक्षा करने का कारण मिलता है कि वह हमारे अंदर काम करेगा जिस वस्तु की उसे हमसे आवश्यकता है" (John Wesley, "सिद्धता" के विषय उपदेश की संक्षिप्त व्याख्या")।

दाऊद ने अनुग्रह के एक विशेष कार्य के लिए प्रार्थना की जो क्षमा से परे था। उसने पाप किया था और उसे ऐहसास हुआ कि यह उसके मन में एक समस्या की वजह से हुआ था। उसने परमेश्वर से प्रार्थना की, "मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ ... लेकिन तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है।" वह जानता था कि पाप उसके स्वभाव में था लेकिन उसे विश्वास था कि परमेश्वर उससे यह चाहता था कि वह पूर्ण रूप से धर्मी बने। उसने पूर्ण शुद्धता के लिए प्रार्थना की। •[355]

---

[352] 1 कुरिन्थियों 3:1-3।

[353] फिलिप्पियों 3:13-15।

[354] व्यवस्थाविवरण 30:6।

[355] भजन संहिता 51:5।

रूपांतरण के बाद नए नियम में विश्वासियों को किसी अन्य विशेष समारोह में बुलाया गया था। थिस्सलोनीकियें के विश्वासी उन विश्वासियों के अद्भुत उदाहरण थे जिन्होंने सुसमाचार स्वीकार किया था, मूर्तियों को छोड़ दिया था, सताए गये, पवित्र आत्मा में आनन्द महसूस किया और यीशु की वापसी की प्रतीक्षा कर रहे थे।[356] फिर भी उनके विश्वास में कुछ कमी थी। यह ऐसा कुछ नहीं था जो एक लंबी प्रक्रिया या मृत्यु में प्रदान किया जाएगा, क्योंकि पौलुस ने कहा था कि यह उसकी उनके साथ मुलाकात में हो सकता है। •[357] उन्होंने प्रार्थना की कि वे पूरी तरह से (देह, मन और आत्मा में) पवित्र हो जाएं और मसीह की वापसी में पवित्र पाए जाएं। •[358]

यीशु के चेलों ने पिन्तेकुस में अनुग्रह का विशेष कार्य अनुभव किया। हम जानते हैं कि उनका उस समय से पहले ही उद्धार हो चुका था क्योंकि यीशु ने कहा था कि वे इस दुनिया के नहीं हैं और वे उसके और पिता के हैं और उनके नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं।[359] उनके पास पहले से ही पवित्र आत्मा था •[360] लेकिन पिन्तेकुस में पवित्र आत्मा ने उन्हें परिपूर्ण किया और उन्होंने अपने भीतर कुछ खास हासिल किया। पतरस ने बाद में कहा कि यह आवश्यक बात है कि आत्मा ने उनके मनों को शुद्ध किया।[361] उन्हें तत्काल हृदय की सफाई की आवश्यकता थी हालाँकि उनका उद्धार पहले से ही हो चुका था। •[362]

यह विशेष घटना जो किसी पहले से उद्धार हुए व्यक्ति के साथ होती है इसे "पूर्ण पवित्रीकरण" कहा जा सकता है। पूर्ण पवित्रीकरण विरासत में मिली दुष्टता से शुद्धता है जो मसीह जन में उसके मन-परिवर्तन के समय पवित्र आत्मा द्वारा मिलती है।

विश्वासी विश्वास के द्वारा परमेश्वर के इस कार्य को प्राप्त करता है। पतरस ने कहा कि उनका हृदय "विश्वास के द्वारा शुद्ध हुआ।" प्रेरित पौलुस ने थिस्सलोनियों के

---

[356] 1 थिस्सलुनीकियों 1:6-10।

[357] 1 थिस्सलुनीकियों 3:10।

[358] 1 थिस्सलुनीकियों 5:23।

[359] यूहन्ना 17:14, यूहन्ना 17:9-10, लूका 10:20।

[360] यूहन्ना 14:17।

[361] प्रेरितों के काम 15:8-9।

[362] मरकुस 9:33-34, मरकुस 10:35-41, लूका 9:54-55।

विश्वासियों के पूर्ण पवित्रीकरण के लिए प्रार्थना करने के बाद कहा "तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है और वह ऐसा ही करेगा।"[363]

संक्षेप में हम कहते हैं कि (1) विरासत में मिली दुष्टता मन-परिवर्तन के बाद भी विश्वासी जन में बनी रहती है, (2) परमेश्वर हमें पूरी तरह से पवित्र होने के लिए बुलाता है, (3) परमेश्वर विरासत में मिली दुष्टता के लिए शुद्धिकरण प्रदान करता है और (4) विश्वासी विश्वास के द्वारा पूर्ण रूप से पवित्र बनता है।

यदि उसे अभी भी हृदय के शुद्धिकरण की आवश्यकता है तो हर विश्वासी परमेश्वर को यह दर्शाने दे, फिर विश्वास में प्रार्थना करे ताकि परमेश्वर उसे पूर्ण रूप से शुद्ध करे। हर पासबान को अपनी कलीसिया के लोगों को उसके अनुग्रह में आगे बढ़ाने के लिए प्रचार करना चाहिए और परामर्श देना चाहिए।

कक्षा के किसी सदस्य को नीचे दिए गए ब्लॉक में जानकारी पेश करने के लिए चुना जा सकता है।

आत्मा का बपतिस्मा

युहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने भविष्यद्वाणी की कि यीशु का बपतिस्मा पवित्र आत्मा से होगा (मत्ती 3:11, मरकुस 1:8, लूका 3:16, यूहन्ना 1:33)। यीशु ने इस भविष्यवाणी को दोहराया और इसे पिन्तेकुस की घटना से जोड़ा (प्रेरितों के काम 1:5) हालांकि प्रेरितों के काम 2 अध्याय में इस्तेमाल किया गया वाक्यांश यह है कि वे "पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गये।"

पवित्र आत्मा का वर्णन कभी-कभी इस प्रकार किया जाता है "उंडेला गया" (यशायाह 32:15, योएल 2:28-29), "उंडेला गया" (प्रेरितों के काम 2:33), और "उतरा" (प्रेरितों के काम 11:15)। पिन्तेकुस में इस घटना का वर्णन करने के लिए इस तरह के कई शब्दों का उपयोग किया गया है लेकिन ये शब्द हमेशा पूरे पवित्रीकरण का उल्लेख नहीं करते; वे कलीसिया के जीवन और सेवकाई में पवित्र आत्मा

[363] 1 थिस्सलुनीकियों 5:24।

के अन्य कार्यों का उल्लेख कर सकते हैं।[364] हालांकि *पवित्र आत्मा का बपतिस्मा* शब्द पूरे पवित्रीकरण के अनुभव के विशिष्ट पहलू को दर्शाता है।

बपतिस्मा एक नए प्रकार के आत्मिक जीवन में प्रवेश और अनुभव को चिह्नित करता है। गैर-यहूदियों को बपतिस्मा देकर यहूदी धर्म में शामिल किया जाता था। मसीह लोग मन-परिवर्तन किये हुए व्यक्तियों को बपतिस्मा देकर कलीसिया में शामिल करते हैं।

कुछ लोग सोचते हैं कि कोई भी घटना जिसे बपतिस्मा कहा जाता है उसे मन-परिवर्तन के समय होना अवश्य है क्योंकि यह एक नयी शुरुआत को चिह्नित करती है। कुछ ऐसा है जो मन-परिवर्तन के समय होता है जिसे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कहा जाता है (1 कुरिन्थियों 12:13)। मगर यीशु ने चेलों को आत्मा के बपतिस्मे की आशा करने के लिए कहा हालांकि उनका पहले से ही मन-परिवर्तन हो चुका था।

क्या एक से अधिक प्रकार के बपतिस्मे होते हैं? इफिसियों 4:5 बताता है कि एक ही बपतिस्मा है मगर यह संदर्भ दर्शाता है कि इसका अर्थ केवल एक ही कलीसिया है। हर सच्चे विश्वासी को बपतिस्मा देकर एक ही कलीसिया में शामिल किया जाता है और वह व्यक्ति अन्य विश्वासियों से आत्मिक एकता में जुड़ जाता है। इसलिए इफिसियों 4:5 में लिखा है कि एक ही मसीहियत है और इसमें यह नहीं लिखा है कि एक से अधिक प्रकार के बपतिस्में नहीं हो सकते।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने दो बपतिस्मों का उल्लेख किया (मत्ती 3:11)। हम यह नहीं कह सकते कि पहला केवल बादवाले का प्रतीक है क्योंकि लोगों ने पहले वाले बपतिस्में से पहले पश्चाताप किया। ऐसा स्पष्ट होता है कि वास्तविक मन परिवर्तन और पानी के बपतिस्मे के बाद भी पवित्र आत्मा का एक और विशिष्ट अनुभव होता है।

आत्मा का बपतिस्मा विश्वासी के जीवन में दूसरे आत्मिक चरम बिन्दु का एक पहलू है, जब वह पूरी तरह से पवित्र और विरासत में मिली दुष्टता से शुद्ध होता है। यह विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा के काम की शुरुआत नहीं है लेकिन एक पूर्ण भूमिका की शुरुआत है। सेवकाई के लिए सामर्थ्य का अभिषेक इसके फलस्वरूप मिलता है लेकिन विशेष रूप से आत्मिक वरदान आत्मा के बपतिस्मे का प्रमाण नहीं हैं।

[364] उदाहरण के लिए प्रेरितों के काम 4:31 में लोग पवित्र आत्मा से एक और बार परिपूर्ण हुए हालांकि वे वही लोग थे जो पहले से ही आत्मा से परिपूर्ण थे। 4:8 और 13:19 अध्यायों में लोगों का पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का अर्थ निकटतम चुनौतियों के लिए क्षणिक सामर्थ्य प्राप्त करना था। पवित्र आत्मा से निरंतर मिलने वाली परिपूर्णता भी है जिससे भरपूर आत्मिक जीवन मिलता है। इफिसियों 5:18 में, "परिपूर्ण होते जाओ" वाक्यांश यूनानी भाषा के उस व्याकरण काल में है जो चलती रहने वाली क्रिया को दर्शाता है।

अन्य भाषा का वरदान

अन्य भाषा का वरदान पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का प्रमाण नहीं है।

(1) बाइबल कभी भी यह नहीं कहती कि अन्य भाषा का वरदान किसी चीज़ का प्रमाण है। ऐसा कई बार हुआ जब लोग आत्मा से परिपूर्ण हो गये। यह इस बात को साबित करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि हमेशा यही एक चिह्न होना चाहिए।

(2) पवित्रशास्त्र के अनुसार यह कोई ऐसा उपहार नहीं है जिसकी हर व्यक्ति को अपेक्षा करनी चाहिए परन्तु सभी को पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना चाहिए। परमेश्वर वरदानों को बांटने का निर्णय करता है और अलग-अलग वरदान अलग-अलग लोगों को प्रदान करता है (1 कुरिन्थियों 12:4-11)। अलंकारिक प्रश्नों की एक श्रृंखला है जिसमें सब सवालों का उत्तर "नहीं" है, इससे यह पता चलता है कि प्रत्येक विश्वासी से कोई निश्चित आत्मिक वरदान की अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए (12:29-30)।

(3) पवित्रशास्त्र के अनुसार आत्मा का बपतिस्मा मिलने से पहले ही व्यक्ति के पास आत्मिक वरदान होते हैं। हर विश्वासी के पास परमेश्वर की आत्मा है और इसलिए उनके पास आत्मिक वरदान हो सकते हैं। (रोमियों 8:9) कुरिन्थियों को अभी भी हृदय की शुद्धता की आवश्यकता थी लेकिन वे आत्मिक वरदानों में श्रेष्ठ थे (1 कुरिन्थियों 1:7, 3:3)।

(4) पवित्रशास्त्र के अनुसार अन्य भाषा का वरदान विश्वासियों के लिए नहीं परन्तु अविश्वासियों के लिए सुसमाचार के संचार के माध्यम आत्मिक सिद्धि का चिन्ह है (1 कुरिन्थियों 14:22)। इसको उस प्रमाण के लिए उपयोग करना जिस चीज़ के प्रमाण के लिए वह नहीं है, इससे धोखा और भ्रम उत्पन्न होता है।

(5) अन्य भाषा का वरदान उस आवश्यकता से संबंधित नहीं है जो आत्मा की परिपूर्णता से पूरी होती है।। पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का उद्देश्य अंदरूनी पाप के हृदय को शुद्ध करना और सेवकाई के लिए सशक्त बनाना है। उन परिस्थितियों में उस उद्देश्य का अन्य भाषा के वरदान के साथ क्या संबंध हो सकता है जहां वरदान की आवश्यकता नहीं है? इसका प्रमाण इसके प्राकृतिक परिणाम होने चाहिए जैसे बल्ब तब चमकता है जब बिजली उसमें प्रवेश करती है।

हम इस अनुभव की तुलना उस घटना से करते हैं जो तब होती है जब किसी व्यक्ति का मन-परिवर्तन होता है। हमें उद्धार के प्रमाण के लिए अन्य भाषा जैसी घटना तलाशने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इसका पवित्रशास्त्र में वादा किया गया है, यह विश्वास के द्वारा होता है, पवित्र आत्मा इसकी

पुष्टि करता है और विश्वासी जन जानता है कि उसकी आवश्यकता पूरी होती है। यही आत्मा के बपतिस्मा के विषय में भी सच है।

छात्रों को "विश्वास का कथन" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।ढ़ें।

विश्वास का कथन

मसीही पवित्रता तब शुरू होती है जब कोई पापी पश्चाताप करता है और परमेश्वर के अनुग्रह से पूरी तरह से बदल जाता है। विश्वासी जन आत्मिक रूप से बढ़ता है जैसे जैसे वह अपनी समझ में परमेश्वर की इच्छा में बढ़ता है और उसकी आज्ञा मानता है। संपूर्ण पवित्रीकरण परमेश्वर का काम है जिसमें वह मन-परिवर्तन के कुछ समय बाद विश्वासी जन को विरासत में मिली दुष्टता से शुद्ध करता है।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

प्रेरितों के काम 2:1-18, 1 थिस्सलुनीकियों 5:14-24, यशायाह 6:1-8, तीतुस 2:11-14, 1 कुरिन्थियों 10:1-13।

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब इस असाइनमेंट को पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

पूर्ण पवित्रीकरण
अध्ययन के लिए प्रश्न

1. आराधना का प्राथमिक विषय क्या है?
2. पवित्रता आराधना से क्यों जुड़ी है?
3. मसीही पवित्रता कब शुरू होती है?
4. ज्योति में चलने का क्या अर्थ है?
5. पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों के लिए क्या प्रार्थना की?
6. कौन सी सबसे महत्वपूर्ण बात है जो पिन्तेकुस में हुई ?
7. विरासत में मिली दुष्टता क्या है?
8. पूर्ण पवित्रीकरण क्या है?

पाठ 12
कलीसिया

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) कलीसिया की उत्पत्ति।
(2) एक जीवित संस्था के रूप में कलीसिया।
(3) एक जीवित स्थानीय देह के रूप में कलीसिया।
(4) विश्वव्यापी कलीसिया की एकता का आधार।
(5) कलीसिया की स्थानीय एकता का आधार।
(6) कलीसिया के संस्कार
(7) कलीसिया के उद्देश्य।
(8) कलीसिया के विषय में मसीह धारणाओं का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक यह उद्देश्य है कि विद्यार्थी स्थानीय कलीसिया के प्रति प्रतिबद्ध होने की अपनी जिम्मेदारी को समझें।

"कलीसिया"

मुद्रित व्याख्यान

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन को देखिए।

इफिसियों 3:3-10 को एक साथ पढ़िए। यह लेख हमें कलीसिया के विषय में क्या बताता है?

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक । देखते हैं तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र संदर्भ ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

(1) **कलीसिया की उत्पत्ति।**

सदियों के दौरान नये नियम से पहले कलीसिया एक रहस्य था जो पूरी तरह से प्रकट नहीं हुआ था। •[365] ऐसे लोग थे जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव किया और उसके साथ संबंध में रहते थे[366] परन्तु जिस कलीसिया की योजना परमेश्वर ने बनाई थी वह अभी तक स्थापित नहीं हुई थी।

?कलीसिया की शुरुआत कब हुई?

यीशु के जीवन और सेवकाई से कलीसिया की शुरुआत हुई और उस उद्धार पर बनी जो उसने प्रदान किया था।[367]

कलीसिया का युग पिन्तेकुस्त के दिन से शुरू हुआ। उस दिन से कलीसिया पृथ्वी पर मसीह के भौतिक और दृश्यमान नेतृत्व के बिना, पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में कार्य करने लगी।[368]

यीशु ने अपने चेलों को पूरी दुनिया[369] में अपने सिद्धांतों को फैलाने और स्थापित करने का अधिकार दिया और वादा किया कि पवित्र आत्मा उनका पूर्ण सत्य में मार्गदर्शन करेगी।[370] कलीसिया को "प्रेरितिक" कहा जा सकता है क्योंकि प्रेरितों की शिक्षाएं कलीसिया के मूलभूत सिद्धांत हैं। उन मूलभूत सिद्धांतों का खंडन करने वाली किसी भी धारणा या विश्वास को मसीह धारणा या विश्वास नही कहा जाना चाहिए।

तो कलीसिया की उत्पत्ति को (1) यीशु की सेवा, (2) मसीह द्वारा प्रदान किये गये उद्धार, (3) पिन्तेकुस्त के दिन की घटना और (4) प्रेरितिक सिद्धांत के विकास के द्वारा समझाया जाता है।

---

[365] इफिसियों 3:3-10।

[366] रोमियों 4:1-8।

[367] मत्ती 16:16-18।

[368] यूहन्ना 16:7।

[369] मत्ती 28:18-20।

[370] यूहन्ना 14:26।

एक जीवित संस्था के रूप में कलीसिया

कलीसिया की तुलना परिवार से की जाती है जिसमें परमेश्वर पिता है और सदस्य भाई-बहन हैं।[371] कलीसिया को एक राष्ट्र कहा जाता है जिसमें कोई जाति या प्राकृतिक मूल नहीं है।[372] कलीसिया की भौतिक देह से तुलना की जाती है जिसमें मसीह सिर है और सदस्य एक साथ मिलकर काम करते हैं और एक-दूसरे की देखभाल करते हैं।[373]

मसीह जन कलीसिया का सदस्य होता है। बाइबल हमें बताती है कि जैसे कलीसिया को मसीहा की देह कहा जाता है वैसे ही मसीह लोगों को उसकी देह के सदस्य कहा जाता है।[374] कलीसिया से अलग होना उस कार्य से अलग होना है जो मसीह पृथ्वी पर कर रहा है। कलीसिया का सम्मान और इससे प्रेम न करना, मसीह का सम्मान और उससे प्रेम न करने के समान है।

देह के सदस्य के रूप में एक मसीह जन को कलीसिया से स्वतंत्र रहने की मनोदृष्टि नहीं होनी चाहिए। उसे दूसरे सदस्यों की ज़रूरत है और उन्हें उसकी ज़रूरत है।[375] कलीसिया के बिना आत्मिक रूप से आत्मनिर्भर होकर जीना एक मसीह जन के लिए गलत है।

एक जीवित स्थानीय निकाय के रूप में कलीसिया

एक ही सार्वभौमिक कलीसिया है फिर भी कलीसिया को स्थानीय स्तर पर भी अवश्य मौजूद होना चाहिए। देह के सदस्य तब तक काम नहीं कर सकते जब तक कि वे एक ही स्थान पर न हों। पौलुस ने कुरिन्थियों के विश्वासियों को लिखा कि वे मसीह[376] की देह हैं जिसका अर्थ है कि स्थानीय कलीसिया उस स्थान के लिए मसीह की देह है।

परमेश्वर ने स्थानीय कलीसिया को बनाया ताकि यह विश्वास का परिवार बने, आत्मिक वरदानों के साथ देह के रूप में कार्य करे, मानव संसाधन तैयार करे और संगति में लोगों की हर प्रकार की जरूरतों को पूरा करने के लिए ईश्वरीय संसाधनों का पता लगाये,

---

[371] इफिसियों 3:15, गलातियों 6:10।

[372] 1 पतरस 2:9-10।

[373] 1 कुरिन्थियों 12:14, 26।

[374] इफिसियों 5:30।

[375] 1 कुरिन्थियों 12:21।

[376] 1 कुरिन्थियों 12:27।

जीवन के हर पहलू में परमेश्वर की बुद्धि का संसार में प्रदर्शन करे और गैर-मसीहियों को मसीह में लाकर परिवार में शामिल करें।

वास्तविक संगति में आर्थिक व्यवस्था शामिल है क्योंकि जो लोग संगति में हैं वे जीवन एक साथ साझा करते हैं और एक-दूसरे की ज़रूरतों की परवाह करते हैं।[377] अगर किसी को मसीह में किसी भी भाई या बहन की आवश्यकता हो तो यह कलीसिया की जिम्मेदारी है यदि वह सदस्य कलीसिया के जीवन में भाग ले रहा है और जितनी ज़िम्मेदारी लेने में वह सक्षम है, उतनी ज़िम्मेदारी वह ले रहा है।

परमेश्वर सेवकाई के लिए स्थानीय कलीसिया को मजबूत बनाने और इसको बढ़ाने के लिए आत्मिक वरदान देता है और विशेष कार्यों के लिए लोगों को बुलाता है।[378]

स्थानीय कलीसिया अपने समूह की देखभाल और सहायता करती है। पहली प्राथमिकता आत्मिक है, सुसमाचार का प्रचार करना है और सभी मुद्दों पर सत्य का बचाव करना है। कलीसिया अपने समूह की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करती है लेकिन कलीसिया की आत्मिक संगति में सहभागी लोगों को प्राथमिकता देती है।

कलीसिया की सिद्धता

यीशु ने खुद को कलीसिया के लिए दे दिया ताकि कलीसिया पवित्र बने और बिना कोई दोष के हो।[379]

कलीसिया को कभी भी पाप की अनदेखी नहीं करनी चाहिए, हालांकि इसे क्षमा करने के लिए तैयार रहना चाहिए। अगुए पवित्र चाल-चलन के उदाहरण हों।[380] यदि कलीसिया का कोई सदस्य पाप करे तो उसको एहसास दिलाया जाना चाहिए और यदि वह पश्चाताप न करे तो संगति से बाहर किया जाना चाहिए।[381]

? कलीसिया सिद्ध क्यों नहीं है?

---

[377] याकूब 2:15-16, 1:27।

[378] इफिसियों 4:11-12।

[379] इफिसियों 5:27।

[380] 1 तीमुथियुस 3:2-3।

[381] 1 कुरिन्थियों 5:11-13।

कलीसिया के लोग हर तरह से सिद्ध नहीं होंगे। क्योंकि कलीसिया सुसमाचार का प्रचार करती है, मंडली में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अभी तक अपने पापों का पश्चाताप नहीं किया है। यहां तक कि उन लोगों के बीच भी जिनका उद्धार हो गया है, उनके जीवन में असंगताएँ रहेंगी क्योंकि वे अभी तक यह नहीं समझते कि वे अपने जीवन के हर क्षेत्र में सत्य को कैसे लागू करें। यहां तक कि परिपक्व मसीह लोगों में, विसंगतियां और गलत व्यवहार हो सकते हैं क्योंकि एक परिपक्व मसीह जन अभी भी आत्मिक विकास की प्रक्रिया में है।

परमेश्वर के वचन को लगातार सिखाना, इसे लागू करना और लोगों को आत्मिक परिपक्वता में बढ़ाना कलीसिया के कार्य का हि स्सा है।[382]

कलीसिया को परिभाषित करना

इस खंड में हम सार्वभौमिक कलीसिया और स्थानीय कलीसिया की परिभाषाओं को देखेंगे।

सार्वभौमिक कलीसिया की एक छोटी परिभाषा यह है कि यह वह संस्था है जिसमें सभी समय और स्थानों के सभी मसीह लोग शामिल हैं। इसे कभी-कभी "अदृश्य" कलीसिया कहा जाता है क्योंकि ऐसा कोई सांसारिक संगठन नहीं है जो संपूर्ण सार्वभौमिक कलीसिया पर प्रशासन करता है या जिसके पास इसके सदस्यों की सूची है।

स्थानीय कलीसिया की छोटी परिभाषा यह है कि यह एक ऐसी जगह पर मसीह लोगों का समूह है जो कलीसिया के सभी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक दूसरे से जुड़ते हैं। समूह एक कलीसिया नहीं है यदि वे सीमित उद्देश्य के लिए संगठित होते हैं।

यहां स्थानीय कलीसिया की एक अधिक व्यापक परिभाषा है जो इसे अन्य प्रकार के समूहों से अलग करने में मदद करती है: "बपतिस्मा लिए हुए विश्वासी लोगों का एक समूह जो आराधना, संवर्धन, सेवा, संगति और अन्य जगहों में जाकर सेवा करने के लिए संगठित हैं; जो देह के विभिन्न वरदानों के माध्यम से समाज के सभी क्षेत्रों में सेवा करते हैं और नियमित रूप से विधियों और नियमों का पालन करते हैं।[383]

[382] 1 तीमुथियुस 3:16।

[383] David Dockery।

विश्वव्यापी कलीसिया की एकता

केवल एक ही कलीसिया है जो सभी स्थानों और समयों के लिए है। यीशु ने कहा, "मैं अपनी कलीसिया का निर्माण करूँगा," "कलीसियाओं का" नहीं। प्रेरित पौलुस ने लिखा है कि एक ही देह, एक ही आत्मा और एक ही आशा है, जैसे केवल एक ही प्रभु, एक ही विश्वास और एक ही बपतिस्मा है।[384]

प्रारंभिक कलीसिया के पंथों में "कैथोलिक कलीसिया" का उल्लेख है।। शब्द "कैथोलिक" रोमन कैथोलिक कलीसिया का उल्लेख नहीं करता बल्कि विश्वव्यापी कलीसिया का जिसमें सभी सच्चे मसीह लोग शामिल हैं।

सार्वभौमिक कलीसिया की एकता केंद्रीय प्रशासन के तहत कोई संगठन नहीं हैं। ऐसा मसीहा की वापसी से पहले कभी नहीं होगा। कुछ लोग चाहते हैं कि काश ऐसा होता लेकिन ज़ाहिर है कि यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी क्योंकि यीशु ने चेलों के इस विचार को सुधारा जब उन्होने सोचा कि किसी व्यक्ति को अपने संगठन से अलग होकर सेवकाई नहीं करनी चाहिए।[385] यदि यीशु पूरी सार्वभौमिक कलीसिया का एक केंद्रीय प्रशासन चाहता तो वह पृथ्वी पर शारीरिक रूप से इसका नेतृत्व करने के लिए रह सकता था। हालांकि यीशु ने समझा कि यदि कोई सार्वभौमिक मुख्यालय होता तो पूरी दुनिया में पवित्र आत्मा के विभिन्न कार्य वैसे नहीं हो पाते जैसे होने चाहिए।

> "मेरा यह विश्वास है कि मसीह ने अपने प्रेरितों के द्वारा एक कलीसिया की स्थापना की जिसमें उसने लगातार उन लोगों को सम्मिलित किया है जिनका उद्धार होगा; कि यह कैथोलिक या सार्वभौमिक कलीसिया जो सभी राष्ट्रों और सभी समयों में विस्तारित है, अपने सभी सदस्यों में पवित्र है, जिनकी पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ संगति है "(John Wesley, ÏA Letter to a Roman CatholicÐ "रोमन कैथोलिक के लिए एक पत्र" से संक्षिप्त)।

? सार्वभौमिक कलीसिया की एकता किस पर आधारित है?

सार्वभौमिक कलीसिया की एकता (1) प्रेरितिक सिद्धांतों और (2) मसीह के साथ एक परिवर्तनकारी संबंध पर आधारित है।

---

[384] इफिसियों 4:4-6।

[385] लूका 9:49-50।

सैद्धांतिक एकता का अर्थ यह नहीं है कि मसीह लोग हर बात पर सहमत हों, यहां तक कि सभी महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर भी। इसका अर्थ यह है कि वे परमेश्वर और मसीह के स्वभाव के विषय में आवश्यक सिद्धांत और सुसमाचार की अत्यावश्यक बातों को साझा करते हैं। उन के बिना वे एक ही परमेश्वर की आराधना या उसके अनुग्रह का अनुभव नहीं कर पाते।

केवल सिद्धांत ही मसीह एकता के लिए आवश्यक चीज़ नहीं है। मसीह जन मसीह के साथ अपने परिवर्तनकारी संबंध के कारण एक दूसरे के साथ संबंध का बंधन साझा करते हैं। क्योंकि उन्होंने पापों का पश्चाताप किया, मसीह पर विश्वास रखा और पवित्र आत्मा को प्राप्त किया, उनका एक विशेष संबंध है। एक दूसरे से अलग होने के बावजूद भी मसीह लोग दुनिया भर में एक दूसरे को पहचानते हैं।

स्थानीय कलीसिया की एकता

हम मसीह होने के नाते किसी भी व्यक्ति को स्वीकार कर सकते हैं जो आवश्यक मसीही सिद्धांतों को मानता है और मसीह के साथ एक परिवर्तनकारी संबंध में है। लेकिन स्थानीय कलीसिया की सैद्धांतिक सहमति अधिक विस्तृत होनी चाहिए।

स्थानीय कलीसिया उन लोगों का एक समूह है जो एक साथ आराधना करने, प्रचार करने, चेले बनाने और युवा लोगों के लिए प्रतिबद्ध हैं और मसीह जीवन के व्यावहारिक विवरणों की शिक्षा देते हैं। लोगों को उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए सिद्धांत के कई विवरणों पर सहमत होना अवश्य है।

"यदि आपका मन सही है जैसे मेरा मन तुम्हारे लिए है तो मुझसे संवेदनशील स्नेह से इनके समान प्रेम करो, एक दोस्त के समान जिसका संबंध भाई के संबंध से भी गहरा होता है, मसीह में एक भाई, नये यरूशलेम के एक नागरिक और एक साथी सैनिक के समान जो हमें बचाने के एक ही सेनापति के तहत युद्ध में संलग्न रहता है। मुझसे राज्य में एक साथी के समान और यीशु की धैर्ययुक्त सहनशीलता के समान, और उसकी महिमा के संयुक्त उत्तराधिकारी के समान प्रेम करो"(John Wesley, उपदेश ÏCatholic SpiritÐ- "कैथोलिक आत्मा " से संक्षिप्त)।

उदाहरण के लिए हो सकता है कि एक स्थानीय कलीसिया हर युवा व्यक्ति और नये विश्वासी को यह बताये कि उन्हें अन्य भाषा के वरदान के लिए प्रार्थना करनी है। लेकिन उस कलीसिया के अन्य अगुए यह विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर अन्य भाषा का वरदान हर विश्वासी को देता है। वे इस बात से चिंतित होते

हैं कि यदि वे कुछ ऐसा अनुभव करने की कोशिश करते हैं जो परमेश्वर की इच्छा नहीं है तो लोग आत्मिक भ्रम में पड़ेंगे। स्पष्ट रूप से ये लोग स्थानीय कलीसिया में एक साथ काम करने में सक्षम नहीं होंगे। यहां तक कि यदि वे अगुए उस व्यक्ति को एक मसीह जन मानते हैं, उन्हें उसे हानिकारक सिद्धांतों को सिखाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

एक स्थानीय कलीसिया को उन सिद्धांतों पर सहमत होने की आवश्यकता होती है जो उनके जीवन को एक साथ साझा और सेवकाई करने के तरीके को प्रभावित करते हैं। इसलिए कलीसिया के पास सिद्धांतों का एक लिखित विवरण होना गलत नहीं है जिसको वे साझा करते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे यह सोचें कि कोई भी जो असहमत होता है, वह मसीह जन नहीं है। एक लिखित सैद्धांतिक विवरण का उद्देश्य उन सिद्धांतों को प्रकट करना है जो विश्वीसियों के समूह के लिए एक साथ कार्य करने के लिए आवश्य हैं।

कलीसिया के संस्कार

यीशु ने कलीसिया को दो संस्कार दिये। उन्हें रिवाज़ या रस्में भी कहा जा सकता है।

बपतिस्मा मसीहा की मृत्यु और पुनरुत्थान का प्रतीक है।[386] बपतिस्मा इस बात की गवाही है कि विश्वासी जन की मसीह के साथ पहचान होती है और उसने मसीह में पाप के लिए मृत्यु को और नये जीवन को अनुभव किया है। बपतिस्मा ऐसा समय नहीं होता जब कोई व्यक्ति मसीह बनता है। बपतिस्मा इस बात की सार्वजनिक गवाही है कि उस व्यक्ति ने मसीह को ग्रहण किया है।[387]

प्रभु भोज का आरम्भ यीशु द्वारा उसके अंतिम भोज के समय और क्रूस पर चढ़ाये जाने से पहले चेलों के साथ किया गया था।[388] रोटी और दाखरस यीशु की देह और लहू को दर्शाते हैं जो हमारे उद्धार के लिए बलिदान के तौर पर दिये गये हैं। जैसे हम भौतिक जीवन के लिए भोजन खाते हैं, हम अपने आत्मिक जीवन के लिए उसके बलिदान पर निर्भर करते हैं।[389]

---

[386] रोमियों 6:3-4।

[387] यूहन्ना 3:7-8।

[388] 1 कुरिन्थियों 11:23-25।

[389] यूहन्ना 6:53-58।

दोनों संस्कारों को "अनुग्रह के साधन" कहा जा सकता है। वे खुद ब खुद अनुग्रह प्रदान नहीं करते यदि वे विश्वास और आज्ञाकारिता के बिना किए जाते हैं। ये वे प्रथाएँ हैं जो परमेश्वर ने हमें दी हैं और अगर इनको विश्वास में किया जाता है तो वे परमेश्वर से अनुग्रह प्राप्त करने के साधन हैं।

? कलीसिया के कुछ उद्देश्य कौन से हैं?

नए नियम में पाए जाने वाले स्थानीय कलीसिया के कुछ उद्देश्य

(1) सुसमाचार प्रचार करना (मत्ती 28:18-20)।

(2) एक मण्डली के रूप में आराधना करना (1 कुरिन्थियों 3:16)।

(3) सिद्धांत को बनाए रखना (1 तीमुथियुस 3:15, यहूदा 3)।

(4) पासबानों की आर्थिक रूप से सहायता करना (1 तीमुथियुस 5:17-18)।

(5) सुसमाचार सुनानेवालों को भेजना और उनको सहायता देना (प्रेरितों के काम 13:2-4, रोमियों 15:24)।

(6) ज़रूरतमंद सदस्यों की सहायता करना (1 तीमुथियुस 5:3)।

(7) पाप में पड़नेवाले सदस्यों को अनुशासन में लाना (1 कुरिन्थियों 5:9-13)।

(8) बपतिस्मा और प्रभु भोज को व्यवहार में लाना (मत्ती 28:19, 1 कुरिन्थियों 11:23-26)।

(9) विश्वासियों को परिपक्व बनाना (इफिसियों 4:12-13)।

इनमें से ज़्यादातर चीज़ों को स्वतंत्र रूप से एक व्यक्ति के द्वारा नहीं किया जा सकता। ये उद्देश्य विश्वासियों के समूह के सहयोग और नेतृत्व की संरचना पर निर्भर हैं।

परमेश्वर प्रत्येक विश्वासी को एक स्थानीय कलीसिया के प्रति प्रतिबद्ध होने और दुनिया में इसके उद्देश्य को पूरा करने में मदद करने के लिए बुलाता है। जब तक कोई

सदस्य कलीसिया में सेवा न करे तब तक वह मसीह की देह के सदस्य के रूप में अपने उद्देश्य को पूरा नहीं करता।

नीचे दिए गए ब्लॉक में दी गई जानकारी की व्याख्या के लिए कक्षा का एक सदस्य चुना जा सकता है।

त्रुटियाँ जिनसे हमें बचना है: आत्मिक व्यक्तिवाद

कुछ लोग वास्तव में एक स्थानीय कलीसिया के लिए प्रतिबद्ध नहीं होते। वे किसी भी रविवार को किसी भी कलीसिया जाने में स्वतंत्र होना चाहते हैं। वे इस पाठ में सूचीबद्ध कलीसिया के किसी भी उद्देश्य के साथ मदद नहीं कर सकते क्योंकि कलीसिया उन पर निर्भर नहीं हो सकती। उनके ऐसे संबंध नहीं हैं जिससे कि वे किसी के लिए आत्मिक जवाबदेय हो सकते हैं और कोई उनके लिए भी आत्मिक जवाबदेय नहीं हो सकते। यदि सभी मसीह लोग ऐसा ही करते तो कोई कलीसियाएं नहीं होती।

छात्रों को "विश्वास का कथन" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

विश्वास का कथन

मसीहा ने एक पवित्र, विश्वव्यापी कलीसिया बनायी है जिसको स्थानीय मंडलियों में मसीह की देह के रूप में व्यक्त किया जाता है। कलीसिया के पास प्रेरितों के सिद्धांत हैं और वह पूरे सत्य का बचाव करती है। कलीसिया परमेश्वर का परिवार है, उस संगति के साथ जो सभी जरूरतों को पूरा करती है। कलीसिया परमेश्वर की आराधना करती है, दुनिया में सुसमाचार प्रचार करती है और विश्वास करनेवालों को चेला बनाती है।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

1 कुरिन्थियों 12:14-31, याकूब 2:1-9, इफिसियों 4:11-16, 1 कुरिन्थियों 6:1-8, 1 कुरिन्थियों 5:1-13

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब असाइनमेंट को पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

अनुशंसित पठन

Noll, Mark. *Turning Points.* Grand Rapids, MI: Baker Academic, 1997.

Oden, Thomas. *Life in the Spirit. (आत्मा में जीवन)* Peabody, MA: Prince Press, 2001.

कलीसिया
अध्ययन के लिए प्रश्न

1. कलीसिया का युग कब शुरू हुआ?
2. कलीसिया को "प्रेरितिक" क्यों कहा जा सकता है?
3. कलीसिया की उत्पत्ति के चार पहलू कौन से हैं?
4. सार्वभौमिक कलीसिया की छोटी परिभाषा क्या है?
5. स्थानीय कलीसिया की छोटी परिभाषा क्या है?
6. "कैथोलिक कलीसिया" शब्द का मूल अर्थ क्या था?
7. कलीसिया की विश्वव्यापी एकता के दो आधार कौन से हैं?
8. एक लिखित सैद्धांतिक विवरण का उद्देश्य क्या है?
9. स्थानीय कलीसिया के छह उद्देश्यों को सूचीबद्ध कीजिए।

पाठ 13
अनन्त नियति

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) स्वर्ग की प्राथमिक गतिविधि।
(2) पवित्रशास्त्र में प्रकट स्वर्ग की विशेषताएँ।
(3) पवित्रशास्त्र में प्रकट अनन्त दण्ड की विशेषताएँ।
(4) उन धर्मों के कुछ उदाहरण जो अनन्तदंड के तथ्य से इन्कार करते हैं।
(5) अनन्त दंड का न्याय।
(6) अनन्त नियति के बारे में मसीह धारणाओं का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक यह उद्देश्य है कि विद्यार्थी यह याद रखें कि कुछ कार्यों के अनन्त परिणाम होंगे जो कभी भी बदले नहीं जा सकते।

ï अनन्त नियति”
मुद्रित व्याख्यान

भाग 1: विश्वासियों की अनन्त नियति

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन पर जाइए।

प्रकाशितवाक्य 21 को एक साथ पढ़िए। यह खंड हमें विश्वासियों के भविष्य के विषय में क्या बताता है?

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए

और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक। देखते हैं तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र संदर्भ ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

पूरी सृष्टि परमेश्वर की महिमा के लिए अस्तित्व में है लेकिन स्वर्ग सृष्टि का मुख्य दृश्य है, जहां परमेश्वर द्वारा उसके स्वरूप में बनाये गये प्राणी उसकी श्रेष्ट स्तर पर आराधना करते हैं। •[390]

परमेश्वर की महिमा ऐसी पूर्णता से स्वर्ग में प्रकट होगी कि यह शहर का उजाला होगी।[391] यह वह जगह है जहां हम परमेश्वर के इतने निकट होंगे कि हम "उसका चेहरा देखेंगे।"[392]

आराधना स्वर्ग का कार्य है। आनंद आराधना का दूसरा पहलू है। एक भजन लेखक ने कहा, "तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।"[393] यह उपयुक्त है कि आनन्द और आराधना बहुत संबंधित है। परमेश्वर ने हमें अपनी छवि में बनाया ताकि हम उसके स्वभाव को अच्छी तरह से समझ सकें और जो वह है उस बात के लिए उसकी आराधना कर सकें । हमे भावनाएँ, प्रेम करने की क्षमता और बुद्धि दी गयी है ताकि हम परमेश्वर को उच्चतम आराधना दे सकें।

यीशु ने अपने चेलों को ये बातें बताईं:

तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता। मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा ताकि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।[394]

---

[390] प्रकाशितवाक्य 5:11-14।

[391] प्रकाशितवाक्य 21:23।

[392] प्रकाशितवाक्य 22:4।

[393] भजन संहिता 16:11।

[394] यूहन्ना 14:1-3।

यीशु के शब्द हमें स्वर्ग के बारे में कुछ बातें बताते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि स्वर्ग परमेश्वर का घर है क्योंकि यीशु ने उसे अपने पिता का घर कहा था। एक और तथ्य जो हमारे लिए महत्वपूर्ण है वह है कि हम एक दिन परमेश्वर के साथ वहां रह सकते हैं।

स्वर्ग की प्रतिज्ञा से हमारे संसार में रहने के तरीके का मार्गदर्शन हो। जो व्यक्ति अनन्त मान्यताओं के अनुसार जीवन जीता है वह पृथ्वी पर सबसे अच्छा काम करेगा। जो व्यक्ति स्वर्गीय प्रतिफल की अपेक्षा करता है वह सभी प्रकार की कठिनाइयों को सहन करने और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का प्रयास करता है। यीशु ने उससे जो उत्पीड़न में है कहा, "आनन्द करो, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारे लिए बड़ा प्रतिफल है।"[395]

स्वर्ग की विशेषताएँ

? स्वर्ग के विषय में वे क्या विवरण हैं जो हम जानते हैं?

कभी-कभी पृथ्वी पर लोग जैसे घर की इच्छा करते हैं, वैसा घर वे नहीं खरीद पाते और शायद वे अपने घर को उस प्रकार से न बना पायें, जिस प्रकार वे चाहते हैं। लेकिन परमेश्वर के पास असीम सामर्थ्य और संसाधन हैं इसलिए हम जानते हैं कि उसका घर ठीक वैसा है जैसा वह चाहता है। इसलिए, स्वर्ग परमेश्वर के स्वभाव के साथ पूर्ण रूप से सुसंगत है।

> "अगर मैं अपने आप में कोई ऐसी इच्छा को खोजता हूँ जिसे इस दुनिया का कोई भी अनुभव संतुष्ट नहीं कर सकता तो इसका सबसे सम्भावित स्पष्टीकरण यह होगा कि मुझे किसी और दुनिया के लिए बनाया गया था.... शायद सांसारिक सुखों का तात्पर्य कभी भी इसे संतुष्ट करना नहीं था बल्कि वास्तविक वस्तु को दर्शाने के लिए इसे उत्तेजित करना था.... मुझे इसे जीवन का मुख्य उद्देश्य बनाना चाहिए ताकि मैं उस देश में पहुँच सकूं और दूसरों को भी ऐसा ही करने में मदद कर सकूँ" (C.S. Lewis, *Mere Christianity* - केवल मसीहियत)।

स्वर्ग के विषय में कई बातें हैं जिन्हें हम नहीं समझ सकते। क्योंकि हम मांस और लहू हैं हम परमेश्वर के स्वभाव के अस्तित्व को नहीं समझ सकते क्योंकि वह आत्मा है। इसके अलावा, जब हम परमेश्वर के स्वभाव का अध्ययन करते हैं तो हम पाते हैं कि वह अनन्त है और हमारी समझ से परे है, इसलिए यह हमारी समझ से भी परे है कि उसका घर कैसा है। लेकिन इसे हमारे लिए भी तैयार किया गया है।

---

[395] मत्ती 5:12।

बाइबल हमें यह नहीं बताती कि स्वर्ग कहाँ है। लेकिन बाइबल यह अवश्य कहती है कि परमेश्वर स्वर्ग से पृथ्वी पर देखता है इसलिए हम जानते हैं कि स्वर्ग पृथ्वी पर नहीं है।

स्वर्ग में कोई पाप नहीं होगा। स्वर्ग में सभी प्राणी जैसे स्वर्गदूत, मनुष्य और अन्य प्राणी, पूरी तरह से पवित्र होंगे। •[396]

स्वर्ग पाप के सभी परिणामों जैसे पीड़ा, दुख, संघर्ष और खतरा से मुक्त होगा।[397] सृष्टि पर फिर कोई शाप नहीं होगा जैसे बीमारी, बुढ़ापा और मृत्यु। •[398]

स्वर्ग की सुंदरता वर्णन से परे है। हमें दिए गए विवरण में यशब की दीवारें, मोतियों के फाटक, दुर्लभ रत्नों की नींवें, और सोने की सड़कें शामिल हैं। •[399]

स्वर्ग लाखों छुड़ाए हुए लोगों और स्वर्गदूतों से आबाद है।[400]

कौन और कब?

स्वर्ग को उन लोगों के लिए तैयार किया है जो पाप का पश्चाताप करते हैं और यीशु मसीह को उद्धारकर्ता और प्रभु मानकर उस पर विश्वास करते हैं।[401] जिनके नाम स्वर्ग[402] में लिखे गए हैं वे स्वर्ग में रहेंगे।

बाइबल हमें बताती है कि यदि हम अनन्त मान्यताओं के अनुसार जीते हैं, तो हम स्वर्ग में अनन्त और सुरक्षित धन में निवेश कर सकते हैं। •[403]

कोई जन स्वर्ग कब जाता है? यीशु ने क्रूस पर मरते हुए उस डाकू से कहा कि वे आज ही एक साथ स्वर्ग में होंगे।[404] पौलुस ने कहा कि देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और

---

396 प्रकाशितवाक्य 21:8, 27।

397 प्रकाशितवाक्य 21:4।

398 प्रकाशितवाक्य 22:3।

399 प्रकाशितवाक्य 21:18-21।

400 प्रकाशितवाक्य 5:8-11।

401 यूहन्ना 3:16।

402 लूका 10:20, प्रकाशितवाक्य 3:5, प्रकाशितवाक्य 20:15।

403 मत्ती 6:20।

भी उत्तम है।[405] इसलिए हम जानते हैं कि विश्वासी जन मृत्यु के समय स्वर्ग में जाता है। हालांकि जो विश्वासी यीशु की वापसी के समय जीवित होंगे वे मृत्यु से गुज़रे बिना स्वर्ग जाएंगे। •[406]

भाग 2: अविश्वासियों की अनन्त नियति

धरती पर दंड कुछ समय बाद समाप्त हो जाते हैं। अंत आता है भले ही यह किसी सज़ा भुगत रहे व्यक्ति की मृत्यु के समय आये।

परन्तु यीशु ने ऐसे दंड का वर्णन किया जो सदा के लिए है जब उसने कहा, "हे शापित लोगों, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। ... और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।"[407]

यीशु और प्रेरितों ने यह दृढ़तापूर्वक कहा कि नरक, आग की झील और अनंतकाल के दंड का सचमुच में अस्तित्व है। वास्तव में यीशु ने स्वर्ग से अधिक नरक का उल्लेख किया। उसने हमें चेताया कि हम इस भयानक जगह से बचें। यीशु और प्रेरितों के कुछ कथनों पर गौर कीजिए।

> "यदि तेरी दाहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उस को काटकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।"[408]

> "जगत के अन्त में ऐसा ही होगा। स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धार्मियों से अलग करेंगे और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे। वहां रोना और दांत पीसना होगा।"[409]

---

[404] लूका 23:43।
[405] 2 कुरिन्थियों 5:8।
[406] 1 कुरिन्थियों 15:51-52।
[407] मत्ती 25:41, 46।
[408] मत्ती 5:29-30।
[409] मत्ती 13:49-50।

फरीसियों से बात करते हुए यीशु ने कहा "हे सांपो, हे करैतों के बच्चों! तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोगे?"[410]

"और अधोलोक में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा। और उस ने पुकार कर कहा, 'हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे ताकि वह अपनी उंगुली का सिरा पानी में भिगो कर मेरी जीभ को ठंडी करे क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं।' "[411]

प्रेरित पौलुस लिखता है कि यीशु "स्वर्ग से अपने पराक्रमी स्वर्गदूतों के साथ प्रकट होगा, उस धधकती हुई आग के साथ उन लोगों से बदला लेगा जो परमेश्वर को नहीं जानते और उनसे जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का पालन नहीं करते। इनको प्रभु की उपस्थिति और उसकी सामर्थ्य की महिमा से सदा के विनाश के लिए दंडित किया जाएगा।[412]

"क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेज कर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें।"[413]

"और उन का भरमाने वाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिस में वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा। वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे ⋯ जिनका नाम जीवन की पुस्तक में नहीं पाया जाएगा, उन्हें आग की झील में डाल दिया जाएगा।"[414]

इस जगह का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किए गयें शब्दों को देखिए: आग, पीड़ा, बदला, विनाश, अंधकार, जंजीरें, दंड, रोना, चिल्लाना, और दांतों का पीसना।

यीशु ने कहा कि यह अपनी दायीं आंख को निकालना और दायें हाथ को काटना नरक में डाले जाने से बेहतर होगा। यीशु शरीर के अंगभंग को बढ़ावा नहीं दे रहा था लेकिन उसका

---

[410] मत्ती 23:33।

[411] लूका 16:23-24।

[412] 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9।

[413] 2 पतरस 2:4।

[414] प्रकाशितवाक्य 20:10, 15।

अर्थ यह था कि हम ऐसा कोई कार्य न करें जो पाप और नरक की ओर ले जाता हो, चाहे यह संसार में हमें कितना भी प्रिय क्यों न लगे।

? ऐसे कौन से धर्म हैं जिनके सिद्धांत नरक के विषय में गलत हैं?

बाइबल हमें बताती है कि मृत्यु से मनुष्य की परिवीक्षा समाप्त हो जाती है, और नरक (1) अनन्त, (2) अपरिवर्तनीय और (3) पीड़ादायक है। बाइबल के इस सत्य को नास्तिकों द्वारा अस्वीकारा जाता है जो कहते हैं कि मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं होता और यहोवा विटनेसवाले, मॉर्मन और यूनिवर्सलिस्ट जो कहते हैं कि नरक नहीं होता। मृत्यु से मनुष्य की परिवीक्षा के समाप्त होने के तथ्य को रोमन कैथोलिक वाले गलत ठहराते हैं। वे मानते हैं कि मृत्यु के बाद मनुष्य की हालत को ठीक करके सुधारा जा सकता है।

ऐसे लोग हैं जो नरक के अस्तित्व से इन्कार करते हैं क्योंकि वे इसे अन्यायपूर्ण मानते हैं। वे कहते हैं कि अगर पाप समय की सीमा में उत्पन्न हुआ तो इसके कारण अनंतकाल के लिए दंड एक अन्यायपूर्ण बात है। सेंट अगस्टाइन आपराधिक कानून के उदाहरण के साथ इस आपत्ति का उत्तर देते थे। यदि कुछ मिनटों में एक डकैती होती है, तो क्या कुछ ही मिनटों के लिए सज़ा होनी चाहिए? एक हत्यारा एक ही क्षण में हत्या कर देता है, यह एक अपूरणीय क्षति है। पवित्रशास्त्र में हम देखते हैं कि अनन्त और असीम परमेश्वर के खिलाफ पाप का परिणाम अनंतकाल के लिए सज़ा है भले ही यह एक सीमित जीवनकाल में किया गया हो।

? नरक क्यों अनन्त है?

नरक इसलिए अनन्त है (1) क्योंकि पाप एक अनन्त परमेश्वर के खिलाफ अपराध है। यह इसलिए अनन्त है (2) क्योंकि पापी परमेश्वर के लिए अनन्त सेवा को इन्कार करता है। यह इसलिए अनन्त है क्योंकि (3) हम अनन्त प्राणी हैं, यदि हम परमेश्वर से अलग होने का निर्णय लेते हैं तो हमारे पास जाने के लिए और कोई स्थान नहीं है।

संसार में जीवन जीने के दौरान हम अपने फैसले बदलने में सक्षम होना चाहते हैं। यह बहुत गंभीर लगता है कि एक विकल्प से अनन्त परिणाम हो सकते हैं। हमें ऐसा सोचना अच्छा लगता है कि भविष्य में हमें दूसरा मौका मिलेगा, भले ही अभी हम इच्छित निर्णय ले रहे हों। लेकिन यह अनुचित नहीं है कि परमेश्वर हमारे परखे जाने को पूरे जीवनकाल तक सीमित करेगा।

कुछ लोग नरक में विश्वास करने से इन्कार करते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि प्रेमी परमेश्वर किसी को कैसे ऐसी भयानक जगह में भेज सकता है, जिसका ये आयतें वर्णन करती हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि परमेश्वर यह नहीं चाहता कि कोई नाश हो परन्तु सभी को पश्चाताप करके उद्धार पाना चाहिए। बाइबल कई जगहों में यह बताती है। •[415] नरक में जाने वाले लोग खुद ऐसे निर्णय लेते हैं जिनसे वे इस भयावह जगह में पड़ते हैं। कोई भी अनजाने में ठोकर खाकर नरक में नहीं चला जाता। जो लोग जाते हैं उन लोगों ने परमेश्वर, धार्मिकता और उद्धार को अस्वीकार करके इस जगह को चुना है।

> "आखिरकार नरक के सिद्धांत पर आपत्तियां इस प्रश्न पर आनी चाहिए: 'आप परमेश्वर से और क्या करने के लिए कह रहे हैं?' अपने पिछले पापों को खत्म करना और एक नई शुरुआत देना, चमत्कारी मदद से इसकी कठिनाई की सहायता करना? लेकिन उसने पहले से ही ऐसा करने का प्रस्ताव रखा है। उन्हें क्षमा करने का? लेकिन वे क्षमा होने से इन्कार करते हैं। उन्हें अकेला छोड़ने का? हां, मुझे डर है कि वह यही करता है" (C.S. Lewis, *The Problem of Pain* "पीड़ा की समस्या" से संक्षिप्त व्याख्या)।

चूंकि जोभी अच्छा है वह परमेश्वर से आता है इसलिए परमेश्वर का अस्वीकरण आखिरकार सभी अच्छी वस्तुओं से अस्वीकरण है। यहां तक कि शांति, भय और दर्द से सुरक्षा और एक आरामदायक जगह सभी अच्छी चीजें केवल परमेश्वर ही प्रदान कर सकता है। निश्चित रूप से हम परमेश्वर से यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि वह उस व्यक्ति को सदा के लिए वे भली वस्तुएँ प्रदान करे, जिसने परमेश्वर को त्याग दिया। परमेश्वर से अलग होने का अर्थ उन सब वस्तुओं की घटी है जो अच्छी हैं और वह नरक है।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यीशु मसीह के प्रायश्चित्त के कार्य के माध्यम से, उसके प्रेम से हम "आने वाले प्रकोप से बच सकते हैं"। नरक की पीड़ा के बजाय, हम उद्धार और स्वर्ग के चमत्कारों की खुशी में हिस्सा ले सकते हैं। जब हम "परमेश्वर के प्रति पश्चाताप और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास" करते हैं तो हम अपनी नियति के लिए स्वर्ग का चुनाव करते हैं।[416]

---

[415] 1 तीमुथियुस 2:4, 2 पतरस 2:9, प्रेरितों के काम 17:30।

[416] प्रेरितों के काम 20:21।

त्रुटियाँ जिनसे हमें बचना है: अनन्त परिणामों को भूलना

सांसारिक जीवन में कई निर्णय अंतिम प्रतीत नहीं होते। पर्याप्त समय के साथ कई गलतियों को ठीक किया जा सकता है। हमें याद रखना चाहिए कि कई फैसलों के अनन्त परिणाम होंगे। मृत्यु के बाद हम उन कार्यों को बदलने में सक्षम नहीं होंगे जिन्होंने हमारी अपनी अनन्त नियति को प्रभावित किया या वे कार्य जिन्होंने दूसरों को उनके निर्णयों में प्रभावित किया।

छात्रों को "विश्वास का कथन" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

विश्वास का कथन

हर व्यक्ति का सदा काल के लिए स्वर्ग या नरक में अस्तित्व होगा। स्वर्ग परमेश्वर का घर है जहां विश्वासी जन परमेश्वर के साथ रहेंगे और आनंद के साथ उसकी आराधना करेंगे। स्वर्ग में कोई पाप नहीं है और न ही किसी तरह की पीड़ा होगी जो पाप का परिणाम है। नरक उन सभी के लिए अनंत, अटल और पीड़ादायक दंड है, जिनका मसीह के द्वारा उनके पापों से उद्धार नहीं हुआ है। नरक एक अनंत परमेश्वर के खिलाफ किये गये सुविचारित पाप का दंड है।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

प्रकाशितवाक्य 22:1-5, प्रकाशितवाक्य 22:10-17, लूका 16:19-31, यशायाह 5:11-16, मत्ती 5:27-30

विद्यार्थियों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब असाइनमेंट को पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

अनुशंसित पठन

Lewis, C. S. "The Weight of Glory," in *The Weight of Glory and Other Addresses*. ïमहिमा का प्रभाव," *महिमा का प्रभाव और अन्य व्याख्यान* में। New York: Macmillan Publishing, 1980.

Purkiser, W.T. editor. *Exploring Our Christian Faith. (अपने मसीह विश्वास को खोजना)* Kansas City, MO: Beacon Hill Press, 1967. **विशेष रूप से अध्याय** xxviii, "The Future LifeÐ(**भविष्य जीवन**)।

Wesley, John. ÏThe Great Assize,Ð(**महान न्यायालय**) *Wesley's 52 Standard Sermons* **में।** Salem, OH: Schmul Publishing, 1988.

अनन्त नियति
अध्ययन के लिए प्रश्न

1. स्वर्ग की प्राथमिक गतिविधि क्या है?
2. ऐसी कौन सी चीज़े हैं जो स्वर्ग में नहीं होंगी?
3. स्वर्ग कौन जाएगा?
4. विश्वासी लोग स्वर्ग कब जाते हैं?
5. बाइबल हमें नरक के विषय में कौन सी तीन बातें बताती है?
6. यीशु का इससे क्या अर्थ था कि एक व्यक्ति को अपना हाथ काट देना चाहिए?
7. नरक अनन्त क्यों है?

पाठ 14
अंतिम घटनाएँ

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) अंतिम घटनाओं के विषयों में महत्व के स्तर।
(2) मसीहा की वापसी और मसीह जीवन के लिए इसका अर्थ।
(3) सभी लोगों का पुनरुत्थान और देह का मूल्य।
(4) सभी नैतिक प्राणियों का अंतिम न्याय।
(5) परमेश्वर का अनन्त राज्य।
(6) अंतिम घटानाओं के बारे में मसीह धारणाओं का एक कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी सांसारिक जीवन को अनन्त काल के परिप्रेक्ष्य से देखने के महत्व को जान सकें।

"अंतिम घटनाएँ"

मुद्रित व्याख्यान

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन को देखिए।

दानिय्येल 7:9-14 को एक साथ पढ़िए। यह पाठ हमें भविष्य के बारे में क्या बताता है?

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक । देखते हैं तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र में संदर्भ ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

पशु का निशान, तुरहियाँ, बड़ा क्लेश, मसीह विरोधी, 1,000 साल, 7 साल, महान सफेद सिंहासन, नीचे उतरता हुआ शहर, आग की झील - ये बाइबल की भविष्यवाणी के विषय हैं।

? बाइबल की भविष्यवाणी में आप किन मुद्दों के विषय में सोचते हैं?

महत्व के स्तर

भविष्यवाणी की चर्चा अक्सर प्रमुख सत्यों के बजाय मामूली सवालों पर केंद्रित होती है। भविष्यवाणी के सभी विषय समान रूप से महत्वपूर्ण नहीं हैं। हम इस पाठ्यक्रम में भविष्यवाणी के सब विषयों की चर्चा नहीं करेंगे।

कभी-कभी लोग सोचते हैं कि उस पशु का निशान कैसा दिखेगा, किस देश से विरोधी मसीही आएगा, और दो साक्षी कौन होंगे। ये ऐसे सवाल हैं जिनका बाइबल स्पष्ट रूप से उत्तर नहीं देती और उनके बारे में बहस करना उचित नहीं है।

ऐसे अन्य विषय हैं जिनके विषय में बाइबल और अधिक बताती है। कुछ उदाहरण होंगे कि यीशु कब वापस आयेगा? क्लेश के आरम्भ में, मध्य में या अंत में; और हज़ार वर्ष का सचमुच हजार साल है या नहीं। हालांकि ये सिद्धांत सुसमाचार के लिए आवश्यक नहीं है। आपको किसी के साथ अपनी संगती को कभी खत्म नहीं करना चाहिए क्योंकि आप इनमें से किसी एक प्रश्न पर उसकी राय से असहमत हैं।

बाइबल की भविष्यवाणी में कुछ आवश्यक सत्य हैं। ये ऐसे सत्य हैं जो इतने स्पष्ट हैं कि जिनको सब लोग जो बाइबल पर विश्वास करते हैं, ग्रहण करते हैं। ये सिद्धांत मसीह जीवन और मसीह सिद्धांत की पूरी व्यवस्था को प्रभावित करते हैं।

आइए अंतिम घटनाओं के विषय में उन चार सत्यों पर गौर करें जो बाइबल की भविष्यवाणी में प्रकट हैं।

यीशु का शारीरिक रूप में आगमन

यीशु दृश्य रूप में इस धरती पर वापस लौटेगा। यद्यपि वह अभी धरती पर विश्वासियों के साथ आत्मिक रूप से मौजूद है वह अपने महिमान्वित और जी उठे रूप में पूरे संसार की दृष्टि में वापस लौटेगा। •[417]

? ऐसी कौन सी बातें हैं जो यीशु की वापसी पर घटित होंगी?

मसीह की वापसी सांसारिक इतिहास का चरम होगी। दुनिया के राज्य मसीह के राज्य होंगे। जो लोग उसके प्रति विश्वासयोग्य रहे हैं उन्हें पुरस्कृत और सम्मानित किया जाएगा। जो लोग उसके विरूद्ध विद्रोह में रहे हैं, उन्हें नीचा किया जाएगा और उसके पास वह सामर्थ्य है जो सभी विरोधियों पर विजय पायेगी। •[418] हर घुटने झुकेंगे और हर जीभ कबूल करेगी कि यीशु प्रभु है।[419]

मरे हुए मसीह लोगों को मसीह के साथ राज्य करने के लिए जीवित किया जाएगा।[420] वे और जीवित विश्वासी प्रभु से मिलने के लिए उठेंगे जब वह प्रकट होगा।[421]

उसकी वापसी सभी विश्वासियों की आशीषित आशा है। •[422] उसकी वापसी की उन सभी बातों के विषय में सोचें जो हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं: सताव, पीड़ा और दुःख का अंत; पवित्र लोगों और मसीह प्रियजनों के साथ पुनर्मिलन; इस बात का प्रमाण है कि हमारा विश्वास व्यर्थ नहीं था; साक्षात यीशु को देखना, स्वर्ग में प्रवेश और परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन की परिपूर्णता। इन बातों में से कोई भी उसकी वापसी के समय पर निर्भर नहीं करतीं बल्कि इस तथ्य पर निर्भर करता है कि वह अपने वादे के अनुसार वापस लौटेगा।

यीशु ने कहा कि वह सामर्थ्य और महिमा के साथ वापस आएगा।[423] उसने वापस आने और अपने लोगों को अपने साथ ले जाने का वादा किया ताकि वे उसके साथ रहें।[424]

---

[417] प्रकाशितवाक्य 1:7।

[418] मत्ती 26:64।

[419] फिलिप्पियों 2:10।

[420] 2 तीमुथियुस 2:12

[421] 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17।

[422] तीतुस 2:13।

[423] मत्ती 24:30।

[424] यूहन्ना 14:3।

स्वर्गदूतों ने कहा कि वह उसी प्रकार वापस आएगा जिस प्रकार वह स्वर्ग गया।[425] प्रेरितों ने यीशु के लौटने और इस संसार में परमेश्वर की परम योजना की स्थापना होने की प्रतीक्षा करते हुए पश्चाताप का प्रचार किया। •[426] सचाई है कि यीशु फिर से इस धरती पर सामर्थ्य और महिमा में लौटेगा, यह नये नियम में सबसे अधिक बार सिखाये गये सत्यों में से एक है।[427]

यद्यपि ऐसे संकेत हैं जो दूसरी वापसी से पहले होंगे फिर भी हम यह नहीं जान सकते कि वह कब वापस आएगा। विश्वासियों के लिए यह अच्छा है कि वे हमेशा यीशु की वापसी की आशा रखें और इसके अनुसार जीयें।•[428]

? यीशु क्यों फिर से वापस आयेगा?

वह क्यों आयेगा?

हम ऐसी दुनिया में रहते हैं जहां ज्यादातर लोग परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह में हैं। पाप के अभिशाप के कारण पूरी सृष्टि कष्ट में है। दुनिया कभी भी राजनीतिक कार्रवाई, सामाजिक सुधार, बेहतर शिक्षा या समृद्ध अर्थव्यवस्थाओं के द्वारा बेहतर नहीं होगी। न ही दुनिया का सुधार धीरे-धीरे होगा। यीशु कभी भी अपनी सृष्टि में इसे ठीक करने के लिए लौटनेवाले राजा के समान प्रवेश करेगा।

सब लोग पापी हैं लेकिन अगर वे अभी स्वेच्छा से परमेश्वर के राज्य में शामिल होते हैं तो वे आने वाले दंड से बच सकते हैं। परमेश्वर का राज्य पहले से ही उन लोगों में काम कर रहा है जो पश्चाताप विश्वास करते हैं।[429] यह राज्य यीशु की वापसी के समय पूरी तरह से और खुले रूप में आयेगा।

? हमें कैसे जीवन जीना चाहिए क्योंकि हम जानते हैं कि यीशु वापस आ रहा है?

---

[425] प्रेरितों के काम 1:11।

[426] प्रेरितों के काम 3:19-21।

[427] 1 थिस्सलुनीकियों 4:15-16; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7, 10; तीतुस 2:13; इब्रानियों 9:28; याकूब 5:7-8; 1 पतरस 1:7, 13, 2 पतरस 1:16; 3:4, 12; 1 यूहन्ना 2:28।

[428] मरकुस 13:33-37।

[429] मरकुस 1:14-15, 9:1।

तो हमें कैसे जीवन जीना चाहिए?

हमें यह अवश्य याद रखना चाहिए कि शुरुआती मसीहियों की प्राथमिकताएं क्या थीं। हमें विश्वास रखने और "अंत तक धीरज रखने" के लिए बोला जाता है। हमें इस बात के लिए चेताया जाता है कि हम अभिलाषाओं और दुनिया की चीज़ों के कारण उसके आगमन को न भूल जाएँ।[430] हम अनन्त मान्यताओं के अनुसार जीते हैं क्योंकि इस दुनिया की चीज़ों का अंत हो जाएगा। हमें बताया जाता है कि हम "सचेत रहें" और आकाश में उसके प्रकट होने को न ताकते रहें बल्कि आत्मिक रूप से सावधान रहें ताकि उसके आने पर बेतैयार न पाये जाएं।[431] हम पवित्रता के लिए प्रार्थना करते हैं और पवित्र जीवन जीते हैं क्योंकि हम उसके समान बनना चाहते हैं।[432]

जो लोग आज यह सोचकर जीते हैं कि वह नहीं आयेगा वे लोग उसकी वापसी के लिए तैयार नहीं होंगे।[433] यीशु का आगमन आकाशीय बिजली के समान होगा [434] इतना शीघ्र कि किसी के पास उसके प्रकट होने के बाद कुछ भी बदलने का समय नहीं होगा।

हम उसके आगमन की प्रतीक्षा करते हैं (1) अनन्त प्राथमिकताओं को मानकर, (2) पवित्रता में जीकर और (3) स्वयं को आत्मिक रूप से प्रार्थना के द्वारा सावधान रखकर।

सब लोगों का शारीरिक रूप से पुनरुत्थान

हम जानते हैं कि देह का अनंत मूल्य है क्योंकि बाइबल सब लोगों के पुनरुत्थान के विषय में बताती है।

पुनरुत्थान का सिद्धांत आवश्यक है।[435] प्रेरित पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15 में यह स्पष्ट किया कि पुनरुत्थान से इन्कार करना सुसमाचार से इन्कार करना है। यदि पुनरुत्थान

---

[430] लूका 21:34-36।

[431] मरकुस 13:33-37। "देखो" के लिए इस्तेमाल किये गये यूनानी शब्द का तात्पर्य किसी वस्तु को देखना नहीं है बल्कि सचेत रहना है।

[432] 1 यूहन्ना 3:3।

[433] 1 थिस्सलुनीकियों 5:1-6 बताता है कि जो लोग अंधकार में हैं और संसार के लिए जीते हैं वे वही लोग होंगे जो प्रभु के आगमन पर अचम्भित होंगे। हमारे लिए "वह चोर के समान" नहीं आयेगा।

[434] मत्ती 24:27, 1 कुरिन्थियों 15:52।

[435] यह इस बात से सिद्ध होता है जब पौलुस ने पुनरुत्थान के सिद्धांत पर ज़ोर देते हुए 58 आयतों का एक खंड (1 कुरिन्थियों 15) लिखा।

नहीं होता तो यीशु मरे हुओं में से जी नहीं उठता।[436] अगर यीशु मरे हुओं में से नहीं जी उठा तो सुसमाचार सत्य नहीं है, और वास्तव में किसी का उद्धार नहीं हुआ है।[437]

हर व्यक्ति को पुनर्जीवित किया जाएगा लेकिन एक ही समय में सभी लोगों को नहीं। यीशु के आगमन पर वह सभी मसीहियों को स्वीकार करेगा और मरे हुओं को पुनर्जीवित करेगा।[438]

जो लोग अपने पापों में मरे उन्हें पहले पुनरुत्थान के लिए स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्हें बाद में दंड के समय जीवित किया जाएगा।[439]

मसीह लोगों को यीशु की तरह महिमान्वित शरीरों में जीवित किया जाएगा।[440] अनन्त दंड के लिए पापियों को किसी अन्य रूप में जीवित किया जाएगा।[441]

? यदि आप विश्वास नहीं करते कि शरीर का पुनरुत्थान होगा तो इससे आपके लिए क्या फर्क पड़ेगा?

"हे मृत्यु, तेरा डंक कहां रहा? हे अधोलोक, तेरी विजय कहां रही? मसीह जी उठा और तेरा अंत हुआ। मसीह जी उठा और दुष्टात्माओं को दबाया गया। मसीह जी उठा और स्वर्गदूत ने आनन्द लिया। मसीह जी उठा और जीवन स्वतंत्र हुआ। मसीह जी उठा और कब्र मृतकों से खाली है: क्योंकि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर उन सब का अगुआ और जिलानेवाला बना जो मर गये थे। महिमा और सामर्थ सदा-सर्वदा उसकी रहे। आमीन" (Chrysostom, "Easter HomilyÐ- "ईस्टर होमली")।

एक दिन हमारा पुनरुत्थान होगा यह विश्वास हमारी जीवन शैली को प्रभावित करता है। हम उन लोगों के उदाहरणों को देखते हुए सिद्धांत के व्यावहारिक प्रभावों को देख सकते हैं जो इससे इन्कार करते हैं। कुरिन्थियों की मण्डली के कुछ लोगों ने इस बात से इन्कार किया कि मनुष्य के शरीर का पुनरुत्थान होगा। जिन लोगों ने इस त्रुटि पर विश्वास किया वे दो चरम श्रेणियों में विभाजित हो गये। कुछ लोगों ने कहा "चूंकि शरीर को जिलाया नहीं जाएगा

[436] 1 कुरिन्थियों 15:3।

[437] 1 कुरिन्थियों 15:17।

[438] 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17, प्रकाशितवाक्य 20:6।

[439] प्रकाशितवाक्य 20:13।

[440] 1 यूहन्ना 3:2।

[441] यूहन्ना 5:28-29।

इसलिए आत्मा ही मायने रखती है। इसका अर्थ है कि हमारे द्वारा किए गए पाप चिंताजनक नहीं हैं। हम व्यभिचार भी कर सकते हैं क्योंकि शरीर वैसे भी एक दिन नाश होगा।"[442]

दूसरों ने कुछ ऐसा कहा "चूंकि शरीर को जिलाया नहीं जायेगा इसलिए यह मूल्यहीन और बुराई से भरा है। हमें सभी शारीरिक इच्छाओं को दबाना चाहिए जैसे कुछ भी ऐसा न खाना जिसका स्वाद बहुत अच्छा हो और न ही विवाह का आनंद लेना।"

ये दोनों त्रुटियाँ पुनरुत्थान का इन्कार किये जाने से उत्पन्न हुईं। पुनरुत्थान का मसीह सिद्धांत शरीर को महत्व देता है। उस महत्व को इसमें देखा जाता है कि मसीह लोगों के शरीरों को छुड़ाया जाएगा, वे पवित्र आत्मा के मंदिर हैं, मसीह के सदस्य हैं और उन्हें जिलाया और महिमान्वित किया जाएगा। •[443]

पुनरुत्थान का सिद्धांत आवश्यक है क्योंकि इसका अर्थ है (1) कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा, (2) सब लोगों को जिलाया जाएगा, (3) देह का अनन्त मूल्य है और (4) सुसमाचार सत्य है।

न्याय

न्याय वास्तव में उन लोगों का अंत है जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं हैं। यह उनके अस्तित्व का अंत नहीं है लेकिन यह उनके निर्णय लेने का अंत है। इससे बाद आनेवाला अनन्तकाल उन निर्णयों का अनन्त परिणाम होगा जिन्हें फिर बदला नहीं जा सकता है।

न्याय हमारे निर्णयों को उनके शीघ्र परिणामों से परे महत्व देता है। कुछ लोग सोचते हैं कि जब तक वे अपने कार्यों के परिणामों को नियंत्रित कर सकते हैं तब तक उन्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वे इस बात पर विश्वास करना चाहते हैं कि यदि वास्तव में उनके पापों से कोई हानि नहीं होती तो उनके पाप बुरे नहीं है। वास्तव में सभी पापों से हानि

[442] 1 कुरिन्थियों 6:13-14 देखिए, जहां कुछ लोगों का नारा है, "भोजन पेट के लिये और पेट भोजन के लिये है" जिसका अर्थ है कि शरीर इच्छाओं की तुष्टी के अलावा और किसी चीज़ के लिए नहीं है। प्रेरित ने शरीर के दुरुपयोग के दंड के बारे में बात करते हुए कहा "परन्तु परमेश्वर इसको और उन दोनों को नाश करेगा।" इससे आगे उसने कहा "शरीर परमेश्वर के लिए है ... और परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से प्रभु को जिलाया और हमें भी जिलाएगा।"

[443] 1 कुरिन्थियों 6:14, 15, 19, 20।

होती है यदि न हो तो यह न्याय के कारण गंभीर है। परमेश्वर का वचन कहता है कि लोगों का उनके कार्यों के अनुसार न्याय किया जाएगा। •[444]

न्याय के समय कुछ लोगों को अनन्तकाल के लिए दंड दिया जाएगा और कुछ को अनन्तकाल के लिए प्रतिफल। पवित्रशास्त्र में उन पापी लोगों के लिए न्याय के एक दृश्य का वर्णन है जिनको उनके पापमय कार्यों के लिए दोषी ठहराने के लिए जिलाया जाएगा।[445] मसीह लोगों के लिए एक और न्याय भी है, उन्हें उन कार्यों के लिए प्रतिफल दिया जाएगा जिनका उपयुक्त स्थायी परिणाम होगा। •[446]

इस तथ्य से कि न्याय एक दिन अवश्य होगा हमें पता चलता है कि पाप का एक दिन अंत होगा। बिना पाप की दुनिया की कल्पना करना मुश्किल है, लेकिन एक दिन परमेश्वर के विरूद्ध पूरा विद्रोह समाप्त हो जाएगा।

परमेश्वर यह नहीं चाहता कि हम लगातार भय में रहें और भय हमारा एक अच्छा जीवन जीने की प्रेरणा बने। हालांकि भविष्य में होनेवाले न्याय की चेतना हमें जवाबदेही की भावना देती है जो हमारे जीवन का मार्गदर्शन करती है।

हमें इन बातों को समझने के लिए न्याय के विषय में अवश्य पता होना चाहिए (1) पाप का महत्व, (2) परमेश्वर के प्रति हमारी जवाबदेही, (3) हमारे निर्णयों का महत्व और (4) सभी पापों का अंत।

परमेश्वर का अनन्त राज्य

कुछ शास्त्रों और धर्मों के अनुसार, समय सदा के लिए चक्रों में चलता है जिसकी कोई शुरुआत या अंत नहीं है और न ही कोई घटनाएं हैं जो हमेशा के लिए चीज़ें बदलती हैं।

[444] 2 कुरिन्थियों 5:10, रोमियों 2:6-11।

[445] प्रकाशितवाक्य 20:11-15 देखिए।

[446] 1 कुरिन्थियों 3:14-15।

परन्तु बाइबल के अनुसार समय की शुरुआत है और घटनाओं का अनुक्रम है जो एक समाप्ति की ओर बढ़ रहा है। बाइबल सृष्टि का वर्णन करती है फिर मनुष्य का दुखद पतन तब उद्धार की योजना है जिस पर परमेश्वर मानव इतिहास की सदियों से काम कर रहा है।

उत्पत्ति में हम पाप की शुरुआत पाते हैं। प्रकाशितवाक्य में पाप पूरी तरह से परमेश्वर के अनन्त शहर से बाहर रखा गया है।[447] उत्पत्ति में हम जीवन के वृक्ष और मौत की सज़ा के नुकसान को देखते हैं। प्रकाशितवाक्य में हम जीवन के वृक्ष की पूर्वावस्था, जीवन की पुस्तक में नाम, और जीवन के जल की एक नदी का निमंत्रण देखते हैं।[448]

> एक हजार साल अनन्त परमेश्वर के लिए एक दिन के समान है। इसलिए, "वह लंबे समय से संकट में भी धीरजवन्त है:" बिना किसी असुविधा के वह हमें पश्चाताप के लिए समय देता है। संक्षेप में, परमेश्वर के साथ समय न ही बहुत धीमा चलता है और न ही बहुत तेज़ बल्कि उस प्रकार चलता है जिस प्रकार वह चाहता है और जो उसके लिए सही है; न ही उसके लिए इस बात का कोई कारण हो सकता है कि वह सभी चीज़ों के अंत को धीमा या तेज़ करे" (John Wesley, *Notes on the New Testament*, - "नये नियम पर टिप्पणियाँ", 2 पतरस 3 पर टिप्पणियाँ)।

हम जानते हैं कि एक ऐसा कार्यक्रम है जो उस समय के अंत में आएगा जिसे परमेश्वर ने हमें बताया है। इस घटना से सृष्टि की अनन्तकाल में शुरुआत होगी जिसकी परमेश्वर ने योजना बनाई है। यह परमेश्वर के पूर्ण और शाश्वत राज्य का आगमन होगा।

परमेश्वर हमेशा अपने ब्रह्मांड के राजा रहे हैं लेकिन मनुष्य के पतन के बाद से मानवता के अधिकांश परमेश्वर के राज्य के खिलाफ विद्रोह में रहे हैं। यह अचानक शीघ्र ही समाप्त होने वाला है और कोई विरोधी के बिना परमेश्वर सदा के लिए शासन करेगा। दुनिया पूर्ण रूप से स्वर्ग के समान होगी जैसा परमेश्वर चाहता है।

त्रुटियाँ जिनसे हमें बचना है: सांसारिक जीवन पर ध्यान केंद्रित करना

मनुष्य इस प्रकार जीवन जीते हैं जैसे संसारिक जीवन सदा के लिए हो। हम अपनी परिस्थितियों को बेहतर बनाने और हमारी समस्याओं का समाधान करने की कोशिश करते हैं और एक ऐसा वातावरण

[447] प्रकाशितवाक्य 21:27।

[448] प्रकाशितवाक्य 22:1, 2, 19।

उत्पन्न करते हैं जिससे हमें संतुष्टि मिलती है। हमें अब्राहम की तरह होना चाहिए जिसने तंबुओं में रहते हुए भी एक अनन्त भवन की अपेक्षा की। (इब्रानियों 11: 8-10, 14-16) हमें इस बात को याद रखना चाहिए कि जिन चीज़ों का हम निर्माण करते हैं, जो चीजें हमारे पास हैं और जो परिस्थितियाँ हम रचते हैं वे सभी थोड़े समय के लिए हैं। हमें उन चीज़ों के लिए काम करना चाहिए जिनका अनन्त मूल्य है।

छात्रों को "विश्वास का कथन" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

विश्वास का कथन

यीशु वापस आयेगा जैसा उसने वादा किया, अतीत के विश्वासियों को जिलाएगा और सभी विश्वासियों को अपने राज्य में राज करने के लिए ले जाएगा। हर व्यक्ति को उनके कार्यों के अनुसार न्याय करने के लिए मृतकों में से जिलाया जाएगा फिर उन्हें अनन्तकाल के लिए प्रतिफल या दंड प्रदान किया जाएगा। परमेश्वर का राज्य पूरी तरह से आ जाएगा और परमेश्वर सदा के लिए राज्य करेगा।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

मत्ती 25:31-46, 2 पतरस 3:1-14, 1 कुरिन्थियों 15:51-58, प्रकाशितवाक्य 20:11-15, दानिय्येल 2:31-45

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब इस असाइनमेंट को पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

अनुशंसित पठन

Ladd, George Eldon. *The Blessed Hope.(धन्य आशा)* Grand Rapids, MI: Eerdmans, 1992.

Wiley, H. Orton & Culbertson, Paul T. *Introduction to Christian Theology.(मसीही धर्मशास्त्र का परिचय)* Kansas City, MO: Beacon Hill Press, 1949.

अंतिम घटनाएँ
अध्ययन के लिए प्रश्न

1. बाइबल की भविष्यवाणी में चार आवश्यक सत्य कौन से हैं?
2. मसीह लोगों के साथ क्या होगा जब यीशु वापस आ जाएगा?
3. हमें यीशु के आगमन का कैसे इंतजार करना चाहिए?
4. पुनरुत्थान का सिद्धांत क्यों आवश्यक है?
5. न्याय के विषय में जानना हमारे लिए महत्वपूर्ण क्यों है?

पाठ 15
प्राचीन पंथ

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में विद्यार्थी निम्नलिखित उद्देश्य समझने और समझाने में सक्षम हो सकें:

(1) विश्वास का कथन के रूप में एक पंथ का उद्देश्य और उपयोग।
(2) पंथों के विषय में बाइबल के कुछ उदाहरण।
(3) तीन ऐतिहासिक पंथों की उत्पत्ति और विषय वस्तु।
(4) आधुनिक मसीह लोगों को ऐतिहासिक मसीह धर्म को क्यों थामे रहना चाहिए।
(5) पंथों के विषय में मसीह विश्वास का कथन।

इस पाठ के व्यावहारिक उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी शुरुआती कलीसिया के मूलभूत विश्वास को मूल मसीह धर्म के रूप में मानें।

"प्राचिन पंथ"

मुद्रित व्याख्यान

पिछले पाठ पर परीक्षा लेने के बाद समीक्षा के प्रश्न पूछने के लिए उसी पाठ के उद्देश्यों का उपयोग कीजिए। फिर नीचे दिये गये लेखांश पठन पर जाइए।

यूहन्ना 2 को एकसाथ पढ़िए। यह खंड हमें कलीसिया के मूल सिद्धांतों के महत्व के विषय में क्या बताता है?

अब एक साथ पठन सामग्री का अध्ययन कीजिए। जब आप एक ? देखते हैं तो सवाल पूछिए और जवाब पर चर्चा कीजिए। जब आप एक । देखते हैं तो एक विद्यार्थी को पवित्रशास्त्र संदर्भ ढूंढने के लिए और पद पढ़ने के लिए कहिए।

पंथों की उत्पत्ति

एक पंथ आवश्यक मसीह विश्वासों का सारांश है। कलीसिया ने आरंभ में ही बाइबल के सिद्धांत को संक्षिप्त करने की आवश्यकता को समझा।

? कलीसिया को पंथों की आवश्यकता क्यों थी? क्या बाइबल काफी नहीं थी?

हमेशा ऐसे लोग होते हैं जो बाइबल में विश्वास करने का दावा करते है फिर भी ऐसे सिद्धांतों की शिक्षा देते हैं जो बाइबल के अनुसार नहीं है। कलीसिया ने बाइबल के सिद्धांतों के कथन को विकसित किया है जिसने वास्तविक मसीह धर्म को झूठे सिद्धांतों से अलग किया।

सिद्धांत के पहले कथनों में से एक कथन इस प्रकार है "यीशु प्रभु है," जिसका अर्थ था कि यीशु परमेश्वर है। इन शब्दों "प्रभु यीशु मसीह" का अर्थ यह भी है कि यीशु मसीहा है (*क्रिस्तोस*) और वह परमेश्वर है। कोई व्यक्ति जो यीशु को प्रभु कहने और प्रभु यीशु मसीह शब्दों का इस्तेमाल करने से इनकार करता था, वह मसीह नहीं था।

इसके पश्चात ऐसे लोग थे जो मसीह होने का दावा करते थे लेकिन इस बात का विश्वास नहीं करते थे कि यीशु वास्तव में मनुष्य था। यही कारण है कि 1 यूहन्ना की पत्री में हम पंथों से संबंधित कथन पाते हैं, "और जो कोई आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं" [449] प्रेरित ने यह भी कहा कि यदि कोई व्यक्ति मसीह के आवश्यक सिद्धांतों से इनकार करता है तो वह पाप करता है और वह परमेश्वर का नहीं है।[450]

> "यह अनन्त उद्धार के लिए आवश्यक है कि वह उचित रूप से इस बात पर विश्वास करे कि प्रभु यीशु मसीह मनुष्य बना। क्योंकि उचित विश्वास यह है कि हम इस बात पर विश्वास करें और स्वीकार करें कि हमारा प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर और मनुष्य है"(Athanasian का पंथ)।

सबसे पहले का पंथ जिससे कई कथन निकले वह 1 तीमुथियुस 3:16 में है:

[449] 1 यूहन्ना 4:3।

[450] 2 यूहन्ना 9।

परमेश्वर देह में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया।

हम उन सभी मुद्दों को नहीं जानते जिनसे 1 तीमुथियुस का पंथ संबंधित है लेकिन यह परमेश्वर के ईष्वरत्व और मानवपन पर ज़ोर देता है जब यह बताता है कि परमेश्वर देह में प्रकट हुआ।

इन छोटे पंथों के कथनों से एक उद्देश्य पूरा हुआ। अगर कोई पहले का मसीह जन किसी अन्य व्यक्ति से मिलता जो यीशु में विश्वास करने और बाइबल पर विश्वास करने का दावा करता है तो वह मसीह जन उस व्यक्ति से पूछता "क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु ही प्रभु है?" या "क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर है और देह में प्रकट हुआ?" यदि वह व्यक्ति "नहीं" कहता तो वह मसीह जन यह जान जाता कि उस व्यक्ति ने वास्तव में बाइबल की शिक्षा को नहीं जाना और न ही ग्रहण किया।

पिन्तेकुस के बाद पहली कुछ शताब्दियों के दौरान, कलीसिया को यह आवश्यक लगा यह त्रिएकता, मसीह के अवतार और पवित्र आत्मा की पहचान के बारे में स्पष्ट कथन बतायें। उन्होंने अपधर्म के खिलाफ रक्षा के रूप में सैद्धांतिक मानकों की स्थापना की जिन पंथों को उन्होंने लिखा वे उन मूलभूत सत्यों के सारांश थे जिन पर हर मसीह जन विश्वास करता था। इन पंथों में हर मुद्दे को शामिल नहीं किया जा सका लेकिन कोई भी व्यक्ति को एक मसीह नहीं माना जाता, यदि वह उन शुरुआती पंथों से इनकार करता क्योंकि वे सिद्धांत मसीह धर्म को परिभाषित करने का प्रयास थे।

यहां कलीसिया के शुरुआती के तीन पंथ दिये गये हैं।

प्रेरितों का पंथ

प्रेरितों के पंथ को प्रेरितों ने नहीं लिखा था लेकिन इन्हें प्रेरितों के सिद्धांत को व्यक्त करने के उद्देश्य से दूसरी शताब्दी में लिखा गया था।

मैं परम पिता परमेश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता पर विश्वास करता हूँ;

और यीशु मसीह में, परमेश्वर का एकमात्र पुत्र हमारे प्रभु; जो पवित्र

आत्मा द्वारा धारण हुआ, कुंआरी मरियम से जन्म हुआ; पोंटियस पीलातुस से पीड़ित हुआ; क्रूस पर चढ़ाया गया, मर गया और दफनाया गया; वह नरक में उतर आया; तीसरे दिन वह फिर से जी उठा; वह स्वर्ग में चढ़ा, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा; वहां से वह शीघ्र और मरे हुओं का न्याय करने के लिए आएगा।

मैं पवित्र आत्मा में विश्वास करता हूँ; पवित्र कैथोलिक कलीसिया; संतों की एकता; पापों की क्षमा; शरीर का पुनरुत्थान; और अनन्त जीवन। आमीन।

ऐसा लगता है कि इस पंथ को उन लोगों की त्रुटियों को प्रकट करने के लिए था जो इस बात से इन्कार करते थे कि यीशु वास्तव में मनुष्य नहीं था और कुंआरी से पैदा नहीं हुआ था। कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने यीशु को सचमुच मरे हुओं में से या वह मृतक से शारीरिक रूप से जि उठा था इन्कार कर दिया।

पवित्र आत्मा के बारे में प्रेरितों के पंथ में बहुत कम ज़िक्र है। ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि कलीसिया को नहीं पता था कि पवित्र आत्मा कौन है; ये इसलिए था क्योंकि उसके विषय में अपधर्म कलीसिया को चुनौती अभी तक नहीं थी। कैथोलिक शब्द का अर्थ *सार्वभौमिक* है और इसका अर्थ है कि केवल एक ही सच्ची कलीसिया है। "पाप की क्षमा" का तात्पर्य अनुग्रह से उद्धार, कार्यों या अनुष्ठानों द्वारा नहीं।

नीसिया का पंथ

नीसिया के पंथ की स्थापना 325 में एक कलीसिया सभा में हुई। उसका उद्देश्य मसीह और पवित्र आत्मा के ईष्वरत्व के सिद्धांतों की रक्षा करना था। 381 में एक अन्य सभा में कुछ और बयानों को जोड़ा गया। यह पंथ कुछ ऐसे मुद्दों से संबंधित है जिनका अस्तित्व पहले नहीं था।

मैं एक ही परमेश्वर, सर्वशक्तिमान पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के और सब दृश्यता और अदृश्यता वस्तुओं के बनानेवाले पर विश्वास करता हूँ।

और एक ही प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ, परमेश्वर का एकमात्र पुत्र; पूरे संसार के अस्तित्व से पहले अपने पिता का इकलौता पुत्र, परमेश्वर ही परमेश्वर, ज्योतियों की ज्योति, एकमात्र सच्चा ईष्वर, इकलौता पुत्र, जिसे

बनाया नहीं गया; पिता के समान; जिसके द्वारा सभी वस्तुएँ उत्पन्न हुईं; जो हम मनुष्यों के लिए और हमारे उद्धार के लिए स्वर्ग से उतरा, और पवित्र आत्मा द्वारा एक कुँवारी से उत्पन्न हुआ, और मनुष्य बना; और पिलातुस के राज में हमारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया; उसने दुख उठाया और दफनाया गया; और तीसरे दिन वह पवित्रशास्त्र के अनुसार फिर से जी उठा; और स्वर्ग में चढ़ा; और पिता की दाहिने ओर बैठा है; और वह फिर से महिमा के साथ जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा: उसके राज्य का कोई अंत नहीं होगा।

और मैं पवित्र आत्मा में विश्वास करता हूं, परमेश्वर और जीवनदाता, जो पिता और पुत्र से निकलता है; जिसकी पिता और पुत्र दोनों के साथ में आराधना और महिमा होती है; जिसने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बात की; और मैं एक कैथोलिक और प्रेरितिक कलीसिया में विश्वास करता हूं; मैं पापों की माफी के लिए केवल एक बपतिस्मे को स्वीकार करता हूं; और मैं मृतकों के जी उठने; और दुनिया में जीवन के आने की बाट जोहता हूँ। आमीन।

? ऐसी कौन सी चीजें हैं जो आप इस पंथ में देखते हैं लेकिन वे प्रेरितों के पंथ में नहीं है।

यहां हम त्रिएकता के तीनों सदस्यों के विषय में विस्तृत कथन देखते हैं। मसीह के पूर्ण ईष्वरत्व पर इस तरीके से ज़ोर दिया गया है ताकि इसका उन लोगों से बचाव हो सके जो यीशु के परमेश्वर होने का दावा करते हैं, फिर भी उसके ईश्वरत्व को छोटा समझते हैं। वह अनन्त है ("पूरे संसार से पहले"), उसे रचा नहीं गया, और जो पिता में है वह उसमें भी है। यीशु को भी उसी कारण से परमेश्वर कहा जाये, जैसे पिता को परमेश्वर कहा जाता है।

पवित्र आत्मा की पुत्र और पिता के समान ही आराधना की जाये जिसकी इस बात से पुष्टी होती है कि वह परमेश्वर है।

चाल्सीडोनियन का पंथ

चाल्सीडोनियन के पंथ को 451 में लिखा गया था। इसका उद्देश्य मसीह के देह धारण के सिद्धांतों की रक्षा करना था। शब्दों को समझना आसान नहीं है लेकिन लेखकों का उद्देश्य पूरी तरह से ईष्वरत्व के सिद्धांत को और मसीह के मानवपन को समझाना था ताकि

कोई भी पहलू इतना छोटा न समझा जाये जिससे वह अर्थहीन ठहरे। ध्यान दें कि अंत में लेखकों ने कहा कि वे कलीसिया में इन सिद्धांतों को शास्त्रीय और पारंपरिक दोनों मानते हैं। उन्होंने खुद से नये विचारों को विकसित करने पर विचार नहीं किया बल्कि उन तथ्यों की रक्षा करते थे जिनमें कलीसिया हमेशा विश्वास करती थी।

> हम तो एक ही सहमति के साथ पवित्र बापदादों का अनुसरण करते हुए, एकमात्र और एक से पुत्र को मानने की शिक्षा देते हैं कि हमारा प्रभु यीशु मसीह, ईश्वरत्व में और मनुष्यत्व में एकदम सिद्ध है; जो सचमुच में परमेश्वर और मनुष्य है, एक उचित आत्मा और देह है; ईश्वरत्व के अनुसार पिता के साथ एक तत्व का है और मनुष्यत्व के अनुसार हमारे साथ एक तत्व का है; सब चीज़ों में हमारे समान है लेकिन पाप के बिना; वह ईश्वरत्व के अनुसार युगों पहले परमेश्वर का एकलौता पुत्र था और अपने ईश्वरत्व के अनुसार बाद के समय में हमारा उद्धार करने के लिए कुवाँरी मरियम से जन्मा, जो यीशु की माता है; केवल एक और एक से रहनेवाले मसीह, एकलौते पुत्र, परमेश्वर, बिना असमंजस के, अपरिवर्तनीय ढंग से, अविभाज्य रूप में, बिना पृथक्करणीय रूप से, दोनों रूपों में कबूला और माना जाना चाहिए; स्वभावों का भेद किसी भी माध्यम से संयोजन द्वारा कम नहीं होता बल्कि प्रत्येक स्वभाव के गुण सुरक्षित रहते हैं और एक ही व्यक्ति और एक ही निर्वाह में मिले रहते हैं, दो व्यक्तियों में विभाजित नहीं रहते लेकिन केवल एकमात्र और एक ही पुत्र में, एकलौते पुत्र, परमेश्वर का वचन, प्रभु यीशु मसीह; जैसे आरम्भ से ही भविष्यद्वक्ताओं ने उसके विषय में और स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने हमें शिक्षा दी है और पवित्र बापदादों के पंथों और सिद्धांतों को हम तक पहुँचाया।

? क्या आप इस पंथ में कुछ ऐसी बातों को देखते हैं जिन पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया है?

शुरुआती मसीहियों ने मसीह के जिस ईष्वरत्व की पुष्टि की थी वह कुछ ऐसा नहीं था जो यीशु के पास स्वर्ग में था मगर धर्ती पर नहीं था। उनका मानना था कि वह एक सच्चा देह धारण था, जो देह में परमेश्वर था। जब वह संसार में था उसके पास पूर्ण रूप से परमेश्वर और मनुष्य के गुण थे। उन्होंने मसीह के इस स्वभाव को उद्धारकर्ता के तौर पर उसकी अद्वितीय योग्यता माना।

आज के पंथ

कलीसिया शुरू होने के बाद से सदियाँ बीत चुकी हैं। दुनिया कई तरीकों से बदल गई है। कई धार्मिक मान्यताएँ विकसित हो गयी हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि ऐसे कोई भी सिद्धांत नहीं हैं जो एक समान रहते हैं। जो चाहे वे किसी भी बात पर विश्वास करते हैं और फिर भी स्वयं को मसीह कहते हैं।

? क्या कलीसिया के शुरुआती पंथों पर विश्वास करना हमारे लिए आवश्यक है?

बाइबल का परमेश्वर जो शुरुआती पंथों में वर्णित किया गया बदलता नहीं। और शुरुआती मसीह लोग जानते थे कि परमेश्वर ने उनका उनके विश्वास के कारण उद्धार किया। परमेश्वर के स्वभाव और उद्धार के साधन के बारे में ये कथनों की शुरुआत मूल मसीहियत से हुई थी।

इसका अर्थ यह नहीं है कि किसी व्यक्ति का तब तक उद्धार नही होता जब तक वह अपने सभी सिद्धांतों में सही न हो। सुसमाचार के लिए सभी सिद्धांत आवश्यक नहीं हैं। एक व्यक्ति इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि जो वह जानता है वह सत्य लेकिन वह कुछ चीजों मे गलत हो सकता है।

लेकिन इस पाठ में प्राचीन पंथ केवल आवश्यक सिद्धांतों के बारे में बात करते हैं। यदि किसी कलीसिया का परमेश्वर के बारे में उन आधारभूत तथ्यों से अलग विचार है तो उन्हें उद्धार का कोई अलग साधन भी खोजना चाहिए जिसका अर्थ है कोई दूसरा सुसमाचार है। यदि वे ऐसा करते हैं तो उन्हें अपने आप को मसीही नहीं कहना चाहिए क्योंकि वे कोई नया धर्म बना रहे हैं।

> लेकिन जो भी सिद्धांत नया होता है वह गलत भी हो सकता है क्योंकि पुराना धर्म ही एकमात्र सच्चाई धर्म होता है और कोई भी सिद्धांत सही नहीं हो सकता जब तक यह वही न हो जो "शुरुआत से था" (John Wesley, उपदेश में “On Sin in BelieversÐ- "विश्वासियों में पाप के विषय")।

बेशक हर व्यक्ति सोचने के लिए स्वतंत्र है जो वह चाहता है लेकिन अगर वह मसीह मान्यताओं पर विश्वास नहीं करता तो वह मसीही नहीं है। वह कुछ और है।

पहली कुछ शताब्दियों में हमारे ऐसे संप्रदाय नहीं थे जैसे आज हैं। केवल एक ही कलीसिया थी। तो वे पंथ संपूर्ण कलीसिया के थे। आज भी वे कलीसियायें जो बाइबल के अधिकार का सम्मान करती हैं, उनके पास पंथों के सारांश हैं हालांकि वे कई अन्य विचारों से असहमत हैं।

प्रारंभिक कलीसिया के लोग जानते थे कि परमेश्वर के साथ संबंध का होना सबसे महत्वपूर्ण बात है। वे जानते थे कि परमेश्वर के साथ उनके संबंध के माध्यम से उनका उद्धार हुआ है। यही कारण है कि उनके लिए यह सुनिश्चित करना बहुत महत्वपूर्ण था कि वे इस बात को जाने कि परमेश्वर कैसा है।

यहूदा की पुस्तक हमें चिताती है कि हमें उस विश्वास की रक्षा करनी चाहिए जो मूल रूप से कलीसिया को सौंपा गया था।[451] परमेश्वर अपने सत्य पर अभिषेक करे, जब हम विश्वसयोग्यता से सुसमाचार का प्रचार करते है, विश्वासियों को अनुशासन देते है और उन लोगों को प्रशिक्षित करते है जिन्हें उसने सेवकाई में बुलाया है।

त्रुटियाँ जिनसे हमें बचना है: सांप्रदायिक एकान्तिकता

एक संगठन में एकजुट कलीसिया के समूह को संप्रदाय कहा जाता है। ऐसे हज़ारों संप्रदाय हैं जो मसीह होने का दावा करते हैं। ऐसे हज़ारों स्वतंत्र कलीसियायें हैं जो किसी संप्रदाय का हिस्सा नहीं हैं।

कभी-कभी संप्रदायों की सुसमाचारवाद से शुरुआत होती है। यदि किसी क्षेत्र में कई लोग मसीह में आते हैं और उनको संभालने के लिए कोई संप्रदाय नहीं है तो एक नया संप्रदाय बन सकता है। किसी विशेष देश में एक मिशन संगठन के काम से कोई संप्रदाय शुरू हो सकता है।

कभी-कभी कोई संप्रदाय उन लोगों के समूह से निकलता है जो मानते हैं कि कलीसिया में वे एक महत्वपूर्ण सिद्धांत से वंचित हैं या उपेक्षित हैं। वे सैद्धांतिक रूप से सही होने के उद्देश्य से एक नये संप्रदाय की शुरुआत करते हैं। समय के साथ वे अपने सिद्धांतों को विकसित करते रहते हैं। क्योंकि वे अन्य मसीह समूहों से बाइबल को अलग प्रकार से समझते हैं, उनके संप्रदाय के सिद्धांत अन्य संप्रदायों से अलग होते हैं।

संप्रदायों से आराधना के लिए उचित रूप की परंपराओं का और मसीह जीवन के विषय में विवरणों का विकास होता है। संप्रदाय अपनी परंपराओं में एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

[451] यहूदा 3।

अधिकांश मसीह संप्रदाय केवल एकमात्र सच्ची कलीसिया होने का दावा नहीं करते। यदि कोई संगठन दुनिया में परमेश्वर की पूर्ण कलीसिया होने का दावा करता है तो उस पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए।

अविश्वासी लोग मसीहियत के प्रति इसके विभाजन और विविधता के कारण प्रतिवाद करते हैं। अविश्वासियों को लगता है कि मसीहित के विभिन्न संप्रदाय एक दूसरे के विपरीत होंगे। दुनिया के कई लोग सोचते हैं कि मसीहियों के बीच में किसी भी प्रकार की एकता नहीं है।

कोई भी संप्रदाय या स्थानीय कलीसिया के लोग, जो वास्तव में मसीह हैं, प्रारंभिक मसीह पंथों पर विश्वास करते हैं। यही सभी मसीह संगठनों के बीच मौजूद सैद्धांतिक एकता है। छोटे सिद्धांतों और परंपराओं की बहुत सी विविधताएं हैं लेकिन हमें यह नहीं कहना चाहिए कि उन अंतरों के कारण एक कलीसिया मसीह कलीसिया नही है।

त्रुटियाँ जिनसे हमें बचना है: व्यक्तिगत दृढ़ विश्वासों को गलत समझना

जब कोई मसीह जन परमेश्वर के साथ संबंध में रहता है वह बाइबल के सत्य के विषय में अपनी समझ विकसित करता है। वह हमेशा वही निष्कर्ष नहीं निकालेगा जो दूसरे निकालते हैं। जैसे जैसे वह दैनिक जीवन में सत्य को लागू करेगा वह खुद के लिए नियम विकसित करेगा जो अन्य मसीह लोगों से अलग होंगे।

जब कोई व्यक्ति अपने विश्वासों के बारे में सोचता है तो उसे तब तक शुरुआती मसीहियत के आवश्यक सिद्धांतों को अस्वीकार नहीं करना चाहिए जब तक वह यह निर्णय नहीं करता कि वह अब एक मसीही नहीं है।

एक मसीह जन को अपनी कलीसिया के स्थापित सिद्धांतों पर विश्वास करने में भी सक्षम होना चाहिए। यदि वह यह विश्वास करता है कि उसकी कलीसिया के सिद्धांत गलत हैं तो वह वास्तव में एक सदस्य के रूप में कलीसिया के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हो सकता।

एक व्यक्तिगत मसीह अपनी कलीसिया की शिक्षाओं के द्वारा मार्गदर्शित होगा लेकिन उसके व्यक्तिगत दृढ़ विश्वास उसकी कलीसिया के अन्य सदस्यों से भिन्न होंगे। आमतौर पर एक व्यक्तिगत दृढ़ विश्वास ऐसी बात नहीं है जिसके विषय में बाइबल में सीधे तौर पर बताया गया हो; यह किसी का किसी मुद्दे पर बाइबल के सत्य को लागू करने का प्रयास है।

हर मसीह जन को ईमानदारी से अपनी परिस्थितियों में बाइबल के सत्य को सही ढंग से लागू करना चाहिए लेकिन उसे शीघ्र अपने निष्कर्षों से दूसरों पर दोष नहीं लगाना चाहिए। हमारे लिए सभी मसीह लोगों से इस बात की अपेक्षा करना सही है कि वे प्राचीन पंथो के सिद्धांतों को मानें और हमारे लिए यह अपेक्षा करना सही है कि कलीसिया के सदस्य अपनी कलीसिया के सिद्धांतों को मानें लेकिन एक मसीह व्यक्ति के लिए यह अपेक्षा करना सही नहीं है कि अन्य लोग उसके सब व्यक्तिगत विश्वासों के साथ सहमत हों।

छात्रों को "विश्वास का कथन" कम से कम दो बार पढ़ना चाहिए।

विश्वास का कथन

पवित्रशास्त्र हमें मसीहियत के मूल सिद्धांतों को मानने और उनकी रक्षा करने के लिए कहता है। शुरुआती मसीह लोगों ने उन विश्वासों का वर्णन किया जो सुसमाचार और परमेश्वर के साथ हमारे संबंध के लिए आवश्यक है। वे कथन अभी भी आवश्यक मसीहियत को परिभाषित करते हैं।

प्रत्येक छात्र को नीचे सूचीबद्ध एक लेखांश सौंपा जाना चाहिए। अगली कक्षा के सत्र से पहले उन्हें यह पाठ पढ़ना चाहिए और इस अनुच्छेद के बारे में एक परिच्छेद लिखना चाहिए।

असाइनमेंट लेखन के लिए लेख

(तीतुस 1:7-14) (यहूदा 3-13) (1 तीमुथियुस 4:1-7) (1 तीमुथियुस 3:16) (1 यूहन्ना 4:1-3, 14-15 और 5:12)

छात्रों को यह याद दिलाया जाना चाहिए कि इस पाठ्यक्रम के दौरान कम से कम सात बार प्रत्येक छात्र को कक्षा में न रहने वाले लोगों को यह पाठ या इस पाठ का हिस्सा सिखाना होगा। विद्यार्थी जब इस असाइनमेंट को पढ़ाते हैं तो उन्हें इसकी सूचना कक्षा के अगुए को देनी होगी।

अनुशंसित पठन

Noll, Mark. *Turning Points: Decisive Moments in the History of Christianity.*(मसीहियत के इतिहास में निर्णायक क्षण) Baker, Grand Rapids.

Gonzalez, Justo L. *The Story of Christianity, Vol. (मसीहियत की कहानी) I.* Harper, New York.

प्राचीन पंथ
अध्ययन के लिए प्रश्न

1. पंथ क्या है?
2. शुरुआती मसीहियों के लिए यीशु के बारे में दो कौन से कथन आवश्यक थे?
3. पवित्रशास्त्र में पहला पंथ कौन सा है जिसमें कई कथन हैं?
4. प्रेरितों के पंथ का उद्देश्य क्या था?
5. नीसिया के पंथ का उद्देश्य क्या था?
6. चाल्स्डोनियन पंथ का उद्देश्य क्या था?

अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

पाठ 1: परमेश्वर की पुस्तक

1. परमेश्वर के विषय में सत्य जो हम सृष्टि के अवलोकन से सीख सकते हैं।
2. बाइबल की प्रेरणा और यीशु मसीह के देह धारण में।
3. यह परमेश्वर का वर्णन करता है, पतन और पाप के विषय में समझाता है और परमेश्वर से मेल-मिलाप करने का तरीका दिखाता है।
4. यह परमेश्वर का वचन है।
5. क्योंकि (1) हजारों बाइबल के तथ्यों की पुष्टि हुई है, (2) बाइबल का कोई भी कथन असत्य सिद्ध नहीं हुआ है, (3) बाइबल स्वयं का प्रतिवाद नहीं करती है, (4) सुसमाचार उसके प्रभावों से साबित होता है, (5) परमेश्वर का आत्मा बाइबल के माध्यम से बात करता है और (6) बाइबल परमेश्वर के साथ हमारे संबंध का मार्गदर्शन करती है।
6. क्योंकि यह परमेश्वर द्वारा प्रेरित है।
7. वे पवित्र आत्मा द्वारा "उभारे" गये (2 पतरस 1:21-22)।
8. श्रव्य आवाज़, सपने, दर्शन, समझ और अधीक्षण प्रदान करना।
9. यह पूरी तरह से परमेश्वर का वचन है, यहां तक कि इसके पूरे शब्द।
10. यह असफल नहीं हो सकता, इस पर भरोसा किया जा सकता है और कभी हमें गलत मार्ग नहीं दिखाती।
11. इसमें दिया हर कथन त्रुटि के बिना है।

पाठ 2: परमेश्वर की विशेषताएँ

1. परमेश्वर के विषय में उसकी अवधारणा
2. परमेश्वर कैसा है इस विषय में गलत होना।
3. कि वह सभी वस्तुओं का सृजनकर्ता है (और निहितार्थ से वह सभी से अलग है)।
4. (विशेषताएँ)

    क) आत्मा

    ख) अनन्त

ग) व्यक्तिगत

घ) अपरिवर्तित

च) सर्वशक्तिमान

छ) सर्वव्यापी

ज) प्रेम

झ) त्रिएकता

ट) पवित्र

ठ) धर्मी

पाठ 3: त्रिएकता

1. सृष्टि के तीन गुना आकार में: अंतराल, समय और पदार्थ, उनमें से प्रत्येक में तीन पहलू भी हैं।
2. केवल एक ही परमेश्वर है; पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सभी ईश्वर हैं; और वे तीनों अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में एक दूसरे से संबंधित हैं।
3. पुत्र पिता के अधिकार के अधीन है और पिता से पवित्र आत्मा निकलता है। क्रम इस प्रकार है पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।
4. परिवार और कलीसिया।
5. हम यह मानते हैं कि त्रिएकता का प्रत्येक सदस्य आराधना के योग्य है। हम पुत्र के द्वारा आत्मा में पिता से प्रार्थना करते हैं लेकिन हम त्रिएकता के तीनों व्यक्तियों से भी प्रार्थना करते हैं।
6. यह विचार है कि परमेश्वर केवल एक व्यक्ति है जिसने विभिन्न भूमिकाएं निभायी हैं।
7. यह विचार है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा अलग प्राणी हैं।
8. यह विचार है कि त्रिएकता में एक व्यक्ति दूसरे से कमतर है।

पाठ 4: मानवता

1. एक मसीह जन यह जानता है कि मनुष्य महत्वपूर्ण है क्योंकि वह परमेश्वर के स्वरूप में है।

2. परमेश्वर एक आत्मा है। मनुष्य की तरह उसकी प्रतिमा बनाना मूर्तिपूजा है। मनुष्य को पृथ्वी पर जीवन जीने के लिए बनाया गया है।

3. रचनात्मक वृत्ति, सोचने की क्षमता, बोलचाल की क्षमता, एक सामाजिक प्रकृति, नैतिक भावना, स्वतंत्र इच्छा, अमरता, प्रेम करने की क्षमता और अराधना करने की क्षमता।

4. ताकि हम परमेश्वर से प्रेम कर सकें और उसकी आराधना कर सकें। ताकि हम परमेश्वर के साथ संबंध स्थापित कर सकें।

5. सही और गलत की अवधारणाओं को समझने के लिए।

6. क्योंकि पाप ने हमारी इच्छा को क्षति पहुंचायी है और बिना अनुग्रह के हम पाप के अधीन हैं।

पाठ 5: पाप

1. दुनिया की स्थिति को समझने के लिए, दुनिया में परमेश्वर की प्राथमिकताओं को समझने के लिए, अनुग्रह और उद्धार को समझने और पवित्रता को समझने के लिए।
2. परमेश्वर ने सब कुछ सिद्ध और दोष रहित बनाया।
3. विरासत में मिली दुष्टता मनुष्य के नैतिक स्वभाव की भ्रष्टता है जो उसे जन्म से पाप की ओर ले जाती है; सुविचारित पाप परमेश्वर की ज्ञात इच्छा का उद्देश्यपूर्ण उल्लंघन है; अनजाने में हुए उल्लंघन ऐसे कार्य हैं जो अकस्मात रूप से या अज्ञानता के कारण परमेश्वर के वचन का उल्लंघन करते हैं और दुर्बलताएँ शारीरिक या मानसिक सीमाएं या कमियां हैं।
4. हम ऐसा कुछ नहीं करना चाहते जिससे परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता। कुछ भी गलत करने का परिणाम बुरा होता है भले ही इसे अनजाने में किया गया हो। मसीह लोग होने के नाते हमें अच्छे उदाहरण बनना चाहिए। अगर हम परमेश्वर की इच्छा से दूर रहने का प्रयास करते हैं तो हम पाप के दोषी हैं।
5. यीशु में दुर्बलता थी लेकिन पाप नहीं था।

पाठ 6: आत्माएँ

1. पृथ्वी के निर्माण से कुछ समय पहले।
2. स्वर्गदूत कभी नहीं मरते।
3. स्वर्गदूत आत्माएँ हैं।
4. वे बोलते हैं, आराधना करते हैं, उनमें भावनाएं और बौद्धिक क्षमताएं होती है।
5. करुब, साराप, प्रधान स्वर्गदूत, आत्माएँ
6. वे रक्षा करते हैं।
7. वे ऐसे स्वर्गदूत हैं जो पाप में पड़ गये थे।
8. दुष्ट आत्माएँ
9. आग की झील

पाठ 7: मसीहा

1. अपने लोगों को पाप से बचाना।
2. कि वह परमेश्वर है, सभी का प्रभु है।
3. उसमें पूर्ण रूप से पिता का स्वभाव है।
4. वह देह से परमेश्वर है, या परमेश्वर मनुष्य बना।
5. वह हमारे लिए मरा, उसने हमारा स्थान लिया, वह हमारा प्रतीक बना।
6. उसके बलिदान का मूल्य असीम है, उसके पास उद्धार करने का सामर्थ्य है और हमें उसकी आराधना करनी चाहिए।
7. ताकि परमेश्वर पाप को अनावश्वयक माने और अधर्मी ठहरे बिना क्षमा कर पाये।
8. इससे यह प्रकट हुआ कि उसने परमेश्वर के श्राप को अपने ऊपर ले लिया।
9. इससे पाप और मृत्यु पर उसकी विजय प्रकट हुई; इससे यह साबित हुआ कि वह कौन था और यह इस बात को दर्शाता है कि वह हमें मृतकों में से जिला सकता है।

पाठ 8: उद्धार

1. क्योंकि इसका अर्थ है कि वे पापी हैं और उन्हें क्षमा करने की आवश्यकता है।
2. वह पाप के कई कृत्यों के कारण दोषी है, वह परमेश्वर का शत्रु है, वह अपनी इच्छाओं में भ्रष्ट है और अपनी स्थिति को बदलने के लिए निर्बल है।
3. क्योंकि इससे वह अधर्मी और अपवित्र प्रतीत होता।
4. कि एक पापी खुद को दोषी और दंड के योग्य समझता है और वह अपने पापों को छोड़ने के लिए तैयार होता है।
5. कि वह खुद को धर्मी ठहराने के लिए कुछ नहीं कर सकता, कि मसीहा का बलिदान उसकी क्षमा के लिए पर्याप्त है और यह कि परमेश्वर उसे सिर्फ विश्वास करने की शर्त पर क्षमा करता है।
6. वह निर्दोष था, वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों था।
7. वह वास्तव में पश्चाताप करे, परमेश्वर के वादे पर विश्वास करे और आत्मा की गवाही को प्राप्त करे।
8.

छुड़ौती – दाम चुकाया गया
पवित्रीकरण – पवित्र किये गये

पापशोधन – साफ लेखा

छुटकारा – बचाये गये

मुद्रण – पहचान चिन्ह

मेल मिलाप – शांति

प्रायश्चित्त – क्रोध दूर किया गया

गोद लेना – पुत्र बनना

पुनर्जन्म / नया जन्म – नया जीवन

दोषमुक्ति – धर्मी गिने गए

पाठ 9: उद्धार के मुद्दे

1. उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन
2. पाप पर विजय
3. हमारे मनुष्य होने के कारण परीक्षा आती है; परमेश्वर हमारी सीमाओं को जानता है; परमेश्वर परीक्षा को सीमित करता है और परमेश्वर वह प्रदान करता है जिसकी हमें विजय के लिए आवश्यकता है।
4. मसीहा की आज्ञाओं को मानकर
5. मसीहा के साथ एक निरंतर संबंध

पाठ 10: पवित्र आत्मा

1. उन्होंने पवित्र आत्मा का उसके ईष्वरत्व में आदर किया। वे पवित्र आत्मा की उपस्थिति, मार्गदर्शन और गतिविधि के प्रति सचेत थे। उन्होंने पवित्र आत्मा को प्रतिक्रिया दिखाने की अपनी निर्भरता और जिम्मेदारी को समझा।
2. उसके पास मन, इच्छा और भावनाएं हैं।
3. वह जो हमारे साथ है, वह जो हमें प्रोत्साहित करता है और हमारी मदद करता है और वह जो हमारा प्रतिनिधि है।
4. वह पाप से निरूत्तर करता है। वह पुनर्जीवित करता है, उस व्यक्ति को जीवन प्रदान करता है जो पाप में मरा हुआ था। वह विश्वासी जन को व्यक्तिगत आश्वासन देता है कि उसका उद्धार हो चुका है। वह हर विश्वसी जन में रहता है। वह परमेश्वर के सत्य की समझ प्रदान करता है। वह लोगों को विशेष सेवाकाई के लिए बुलाता है और सेवाकाई में लिये जाने वाले निर्णयों का मार्गदर्शन करता है। वह विश्वासी जन को पवित्र करता है, उसके हृदय को शुद्ध

करके उसे पवित्र करता है। वह पाप पर विजयी जीवन जीने का सामर्थ्य देता है। वह विश्वासी जन के जीवन में आत्मा का फल प्रदान करता है। वह सेवाकाई के लिए आत्मा के वरदान देता है। वह सेवकाई के लिए विशेष अभिषेक का सामर्थ्य देता है। वह विश्वासी जन की परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करने में मदद करता है। वह कलीसिया में एकता और संगती उत्पन्न करता है।

5. पाप पर विजय और हृदय की शुद्धता।

पाठ 11: पूर्ण पवित्रीकरण

1. परमेश्वर की पवित्रता
2. हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उसे प्रसन्न करना चाहते हैं और उसके समान बनना चाहते हैं।
3. जब किसी व्यक्ति का उद्धार होता है।
4. हम परमेश्वर की आज्ञा मानने में स्थिर रहते हैं जैसे जैसे हम उसके सत्य के विषय में और अधिक सीखते हैं।
5. कि वे पूर्ण रूप से पवित्र बनें और मसीहा के लौटने पर पवित्र पाये जायें।
6. उनके हृदय शुद्ध हो गये।
7. मनुष्य के नैतिक स्वभाव की भ्रष्टता जो उसे जन्म से पाप की ओर ले जाती है।
8. पूर्ण पवित्रीकरण विरासत में मिली दुष्टता की शुद्धता है जो मसीह जन में उसके मन-परिवर्तन के समय पवित्र आत्मा द्वारा मिलती है।

पाठ 12: कलीसिया

1. पिन्तेकुस्त के दिन
2. क्योंकि प्रेरितों की शिक्षाएँ कलीसिया के मूलभूत सिद्धांत हैं।
3. यीशु की सेवकाई, मसीहा द्वारा प्रदान किया जाने वाला उद्धार, पिन्तेकुस्त के दिन की घटना और प्रेरितिक सिद्धांत का विकास।
4. ऐसी संस्था जिसमें सभी स्थानों और समयों के मसीह लोग शामिल हैं।
5. एक स्थान में मसीह लोगों का समूह जो कलीसिया के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक साथ संगठित होते हैं।
6. सार्वभौमिक कलीसिया या विश्वव्यापी कलीसिया जिसमें सभी मसीह लोग शामिल हैं।
7. प्रेरितों के सिद्धांत और मसीहा के साथ एक परिवर्तनकारी संबंध।

8. उन सिद्धांतों को प्रकट करना जो विश्वासियों के समूह के लिए एक साथ काम करने के लिए आवश्यक हैं।

9. सुसमाचार प्रचार करना, एक मण्डली के रूप में आराधना करना, सिद्धांत को बनाए रखना, पासबानों की आर्थिक रूप से सहायता करना, सुसमाचार सुनानेवालों को भेजना और उनको सहायता देना, ज़रूरतमंद सदस्यों की सहायता करना, पाप में पड़नेवाले सदस्यों को अनुशासन में लाना, बपतिस्मा और प्रभु भोज को व्यवहार में लाना और विश्वासियों को परिपक्व बनाना।

पाठ 13: अनंत भाग्य

1. आराधना

2. पाप और पाप के परिणाम, बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु।

3. विश्वासी लोग (वे लोग जिन्होंने पाप का पश्चाताप किया है और मसीहा पर विश्वास करते हैं जिनके नाम जीवन की पुस्तक में हैं)।

4. मृत्यु होने पर या मसीह की वापसी पर।

5. यह अनन्त, अपरिवर्तनीय और पीड़ादायक है।

6. जो भी कार्य पाप और नरक की ओर ले जाता है उस कार्य को करना छोड़ दें।

7. पाप एक अनन्त परमेश्वर के खिलाफ है, पापी लोग परमेश्वर को वह अनंत सेवा देने से इन्कार करते हैं जिसके वे परमेश्वर के प्रति देनदार हैं, और हम अनंत प्राणी हैं, यदि हम परमेश्वर से अलग होने का निर्णय लेते हैं तो हमारे पास जाने के लिए और कोई स्थान नहीं है।

पाठ 14: अंतिम घटनाएँ

1. यीशु की शारीरिक रूप में वापसी, सभी लोगों का शारीरिक रूप से पुनरुत्थान, न्याय और परमेश्वर का अनंत राज्य।

2. जिन मृतकों को पुनर्जीवित किया जाएगा; सभी मसीह लोग प्रभु से मिलने के लिए जी उठेंगे।

3. हम उसके आगमन की प्रतीक्षा करते हैं (1) अनन्त प्राथमिकताओं को मानकर, (2) पवित्रता में जीकर और (3) स्वयं को आत्मिक रूप से प्रार्थना के द्वारा सावधान रखकर।

4. क्योंकि इसका अर्थ है (1) कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा, (2) सब लोगों को जिलाया जाएगा, (3) देह का मूल्य अनन्त है और (4) सुसमाचार सत्य है।

5. इन बातों को समझना (1) पाप का महत्व, (2) परमेश्वर के प्रति हमारी जवाबदेही, (3) हमारे निर्णयों का महत्व और (4) सभी पापों का अंत।

पाठ 15: प्राचीन पंथ

1. आवश्यक मसीही विश्वासों का सारांश
2. यीशु प्रभु है और प्रभु यीशु मसीह है।
3. 1 तीमुथियुस 3:16
4. प्रेरितों के सिद्धांतों का वर्णन करना।
5. मसीहा और पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व के सिद्धांतों की रक्षा करना।
6. मसीहा के देह धारण के सिद्धांतों की रक्षा करना।

मसीह विश्वास
असाइनमेंट का रिकॉर्ड

विद्यार्थी का नाम _____

पाठ 1	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 2	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 3	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 4	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 5	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 6	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 7	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 8	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 9	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 10	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 11	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 12	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 12	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 13	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 14	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____
पाठ 15	परीक्षा _____	अध्ययन लेख _____

शिक्षण अभ्यास

(1)	तारीख _____	समूह का प्रकार _____
(2)	तारीख _____	समूह का प्रकार _____
(3)	तारीख _____	समूह का प्रकार _____
(4)	तारीख _____	समूह का प्रकार _____
(5)	तारीख _____	समूह का प्रकार _____
(6)	तारीख _____	समूह का प्रकार _____
(7)	तारीख _____	समूह का प्रकार _____